जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य प्रणीत स्तव साहित्य का अध्ययन

पं. रामस्वरूप गौड़

卐 卐

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर ''श्रीजी''श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य प्रणीत स्तव साहित्य का अध्ययन

पं. रामस्वरूप गौड़

मोखमपुरा, जयपुर (राज.)

卐 卐

पुस्तक का नाम	जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य प्रणीत स्तव साहित्य का अध्ययन
लेखक	रामस्वरूप गौड़, मोखमपुरा (बिचून), जयपुर (राज.)
संस्करण	वि.स.२०५८ आषाढ़ मास, सन् 2001
प्रकाशक	अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठः निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद, किशनगढ़ (अजमेर) राज.–305815
सम्पर्क सूत्र	रामस्वरूप गौड़ बृजराज बिहारी का मन्दिर ठंडी प्याऊ, त्रिपोलिया बजार, जयपुर फोन : 603056
लेजर टाईपसैटिंग एवं कवर डिजाइनिंग	मण्डावरा कम्प्यूटर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर फोन : 0141-567587
पत्र-पुष्प	**35=00** (पैतीस रूपंये मात्र)

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य चक्र–चूड़ामणि, सर्वतन्त्र–स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगतनिम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद–किशनगढ़ (अजमेर) राज.–३०५८१५

का

मङ्गलमय–शुभाशीर्वाद

अपने इस मानव जीवन में जो भी उत्तमोत्तम कार्य यदि हो जाते है तो उसमें अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक सर्वनियन्ता, सर्वाधिष्ठान, सर्वन्तरात्मा, सर्वाराध्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर, श्रीराधा–माधव प्रभु की निरहैतुकी अनुकम्पा एवं इन्हीं श्रीसर्वेश्वर के अभिनव अनुग्रह–विग्रह स्वरूप श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य एवं अस्मदीय श्रीगुरुवर्य चरणों का परम कृपा प्रसाद ही प्रमुख है।

इसी आशय की अभिव्यक्ति उपनिषद् के इस वचन से और भी स्पष्ट है ''यमेवैषवृणते तेन लभ्यः'' अर्थात् रस परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर की जिन पर कृपा वृष्टि हो जाय वे उन्हीं को प्राप्त हो सकते हैं। वे प्रभु न तो प्रवचन से, न किसी सद्सद्–विवेकिनी प्रज्ञा से अथवा बहुविध शास्त्रों के श्रवण से लभ्यमान नहीं, एक मात्र उनका निर्हेतुक कृपा प्रसाद ही आधार है।

अपने इस व्यस्त जीवन में भगवत्कृपा जन्य लघुरूपात्मक जो भी ग्रन्थावली का स्फुरण हुआ परम भागवत् रसिक भक्त महानुभावों के समक्ष उपस्थित है। इन्हीं कतिपय ग्रन्थों पर मोखमपुरा (जयपुर) राजस्थान वास्तव्य विद्वद्वरेण्य पण्डित प्रवर श्रीरामस्वरूप जी शर्मा गौड़ ने अकल्पनीय परिश्रम के साथ अपनी अप्रतिम प्रतिभा से सश्रद्ध हृदय के साथ ''स्तव साहित्य–अध्ययन'' शीर्षक से जिस ग्रन्थ की प्रस्तुति की है यह उनके पावन हृदय के स्वरूपानुकूल ही है। यद्यपि अपने इन ग्रन्थों में न कवित्व है न वैशिष्ठ्य एक मात्र कयापिरीत्या उन परम कृपामय श्रीप्रभु का स्मरण ही परमाधार है।

विद्वद्वर श्रीगौड़ जी ने सप्रयास जिस ग्रंथ का आलेखन किया है यह उनके प्रखर वैदुष्य का परिचायक है। हम उनके सर्वविध अभ्युदय के लिए श्रीसर्वेश्वर प्रभु से पुनः पुनः मंगल कामना करते हैं।

महामहोपाध्याय,पद्मश्री डॉ. मण्डन मिश्र

राजस्थान राज्य पाठ्य
पुस्तक मण्डल भवन,
झालाना डूँगरी–३०२०१७

कुलपति : **राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय**
संस्थापक कुलपति : **श्री लाल बहादुर शास्त्री**
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
पूर्व कुलपति : **सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,** वाराणसी

देश के उत्कृष्ट सन्तों में निम्बार्काचार्य श्रीजी महाराज का स्थान है। वे गंभीर विद्वान, उच्च कोटि के चिन्तक और महान साधक है। सारे संसार में उनकी शिष्य परम्परा है। मुझे उनके दर्शन करने और उनके भाषण सुनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री हरिदेव जोशी ने एक बार अपने पिता की स्मृति में एक सन्त को आमंत्रित करने के लिये मुझसे कहा था। हम दोनों ने बैठकर अनेक नामों पर चर्चा की, लेकिन आखिर में उनको श्रीजी महाराज का ही नाम पसन्द आया। उसका कारण यह है कि वे राग, द्वेष, काम, क्रोध, मद लोभ और मोह से ऊपर उठे हुए हैं, केवल साधना की प्रतिमूर्ति है। ऐसे महापुरूष के होने से राजस्थान परम गौरवान्वित है। उनके द्वारा प्रणीत **'स्तव साहित्य'** भक्ति और चिन्तन का अद्भुत समन्वय है। इसमें उनकी साधना और विद्वत्ता प्रत्येक पद्य में झरती है। भक्ति के तो वे साक्षात स्वरूप है। ऐसे महान् साधक द्वारा प्रणीत **'स्तव साहित्य'** को देखकर उनके वैदुष्य की गम्भीरता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रदेश में तो उनके चरणों में नमन् और दर्शन के लिये सैकड़ों व्यक्ति सदा लालायित रहते हैं। इस 'स्तव साहित्य' के माध्यम से उन्होंने भगवान राधा और मुकुन्द की जो झांकी प्रस्तुत की है वह अनुपम है।

मैं इस दिन के लिये उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और उनका वन्दन करता हूँ। इस **'स्तव साहित्य' का अध्ययन** पं. रामस्वरूप गौड़ ने प्रस्तुत किया है, इसके लिये मैं एक उत्कृष्ट लेखक और सन्तुलित समीक्षक के रूप में श्री गौड़ साहब का अभिनन्दन करता हूँ।

(डॉ. मण्डन मिश्र)
कुलपति
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

राष्ट्रपति–सम्मानित
देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी
एवं निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग,
राजस्थान सरकार)
प्रधान सम्पादक ''भारती'' संस्कृत मासिक

फोन : (0141) 376008
अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान
सी.8 , पृथ्वीराज रोड़
जयपुर – 302001
दिनांक.....................................200

पुरोवाक्

भारत के कोने–कोने में फैली वैष्णव भक्ति के प्रवर्तक प्रमुख आचार्य–पीठों की छत्र–छाया में संस्कृत, हिन्दी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं में जितना विपुल और उत्कृष्ट साहित्य पनपा है उसका आकलन करना सरल कार्य नहीं है। रामानुज, मध्व, निम्बार्क, वल्लभ, चैतन्य, रामानन्द आदि वैष्णव आचार्य–प्रवरों ने वेदान्त दर्शन को प्रौढ वाङ्मय शास्त्रीय ग्रन्थों टीकाओं, भाष्यो आदि के रूप में जो संस्कृत में लिखा वह अपने आप में अनन्त है। शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की परम्परा जिस प्रकार शताब्दियों से दर्शन शास्त्र लेखन की धारा बहाती रही है उसी प्रकार वैष्णव आचार्यों की भी दर्शन वाङ्मय सृष्टि की परम्परा सदियों से चल रही है। इन सभी आचार्यों की यह विशेषता रही है कि दर्शन ग्रन्थों के प्रौढ प्रणयन के साथ–साथ इन्होंने सुललित, कोमल–कान्त, रमणीय, रुचिर और प्राँजल स्तोत्र साहित्य भी लिखा जो भक्ति साहित्य सागर की अमूल्य निधि है। वैष्णव आचार्यों ने तो स्तोत्रों के अतिरिक्त भगवत्कथा और आराध्य के चरित्रानुकीर्तन का सुललित वर्णनात्मक साहित्य भी भरपूर मात्रा में रचा है। स्वयं आचार्यवर्यों द्वारा, फिर उनके अनुयायी विद्वद्वर्यों द्वारा रचा गया यह विपुल साहित्य भारतीय वाङ्मय की कितनी विशाल और अपरिमेय निधि है, इसका अन्दाज लगाना भी आज कठिन है।

यह प्रसन्नता की बात है कि वैष्णव आचार्य पीठों की इस साहित्य–निधि के आंकलन के प्रयास अब विद्वानों द्वारा किये जाने लगे हैं। मैं सर्वदा गौरव के साथ यह अभिलिखित करता रहा हूँ कि यह राजस्थान का

सौभाग्य है कि यहां प्रमुख वैष्णव आचार्य पीठों में से दो के प्रधान पीठ अवस्थित हैं। सलेमाबाद में निम्बार्क पीठ और नाथद्वारा में वल्लभ पीठ। यह और भी अधिक हर्ष, सौभाग्य और गौरव की बात है कि निम्बार्कतीर्थ में स्थित भगवनिम्बार्काचार्य पीठ के पीठाधीश्वर आचार्यवर्य सर्वतन्त्रस्वतंत्र स्वनामधन्य पुण्य श्लोक श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज (श्रीजी महाराज) स्वयं दर्शन, धर्मशास्त्र, काव्य व्याकरणादि शास्त्रों के चूडान्त विद्वान, अप्रतिम वक्ता, सिद्धहस्त विवेचक और निर्मल हृदय मनीषी तो है ही, इतनी हृदयावर्जक, सुललित, प्रांजल और प्रौढ काव्य प्रतिभा के धनी और श्लाघनीय रचनाशिल्प के शिखर प्रयोक्ता भी हैं, कि इन सभी विशेषताओं का एक साथ संगम सुवर्ण में सौरभ की कल्पना को साकार कर देता है।

श्रीजी महाराज ने श्रम और लगन के साथ शास्त्रों पर और संस्कृत, व्रजभाषा आदि के काव्य भांडागार पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर संस्कृत, व्रजभाषा, हिन्दी आदि में इतने विपुल वाङ्मय की सृष्टि की है जिस पर कोई भी कालजयी सर्जक गर्व कर सकता है। उन्होंने द्वेताद्वैत दर्शन पर भी गन्थ लिखे है, भगनिम्बार्काचार्य के चरित्र पर भी, उनके भक्ति सिद्धान्त पर भी। साथ ही उन्होंने वैष्णव भक्ति की चिरप्रवाहमयी भावधारा के लालित्य से रचे–बसे इतने हृदया–वर्जक स्तोत्र भी रचे हैं जिनकी अर्थवत्ता दोहरी है, वैष्णव भक्ति साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में भी और रमणीय काव्य रचना के रूप में भी। व्रजेश्वर और रासेश्वरी की निकुञ्जलीला पर लिखी उनकी अनेक संस्कृत गीतियाँ आकाशवाणी आदि से संगीतबद्ध रूप में प्रसारित होकर देश भर के साहित्य रसिकों को आह्लादित करती रही हैं। उनका यह साहित्य संस्कृत, व्रजभाषा और हिन्दी के साहित्य की विपुल श्रीवृद्धि करने वाला महनीय साहित्य है। उनकी विशेषता यह भी है कि उन्होंने न केवल आराध्य व्रज राज श्रीकृष्ण को समर्पित रचनाएं लिखी हैं, अपितु गणेश आदि अन्य देवों की भी स्तुति की है। सबसे बढ़कर गौरव की बात यह है कि उनके मानस में राष्ट्रीय भावना चरम शिखर पर है। वे भारत की महिमा के प्रखर पुरोधा हैं। उन्होंने भारत और इसकी संस्कृति तथा संस्कृत भारती की गरिमा को रेखांकित करने वाली मंजुल काव्य रचना की

है जिसने इनकी अलग पहचान संस्कृत कवि जगत में स्थापित कर दी है। उनका यह इन्द्र धनुषी काव्य भांड़ागार मुद्रित ग्रन्थों के रूप से प्रकाश में आ चुका है यह भी हर्षप्रद है।

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि भारतीय साहित्य के गहन अध्येता पं. रामस्वरूप गौड़ ने श्रीजी महाराज के इस स्तोत्र साहित्य का सर्वांगीण अनुशीलन कर उसका सममीक्षात्मक आकलन करने वाला यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया है। विद्वान लेखक ने इसे ''स्तव साहित्य'' का अभिधान दिया है जो सर्वथा उचित है, क्योंकि स्तव में आराध्य के स्तोत्र, गुणानुवाद, लीलावर्णन भावनानुध्यान आदि ही नहीं राष्ट्रवन्दना, साहित्य की गरिमा का विवेचन आदि सभी समाहित हो जाते हैं। इस स्तव साहित्य का परिचय प्रस्तुत कर उसकी पृष्ठ भूमि और उसकी विशेषताओं को विवेचित करने वाला यह ग्रन्थ प्रबुद्ध पाठकों की सराहना प्राप्त करेगा, ऐसी आशा है।

लेखक ने प्रारम्भ मे संस्कृत के स्तोत्र साहित्य की पृष्ठभूमि से परिचित कराकर श्रीजी महाराज के स्तोत्र साहित्य का पहले सामान्च विवरण दिया है, फिर क्रमशः उनके श्रीनिम्बार्काचार्य. जी को समर्पित स्तवों, श्रीराधा–माधव को समर्पित स्तवों और श्रीवृन्दावन धाम प्रेरित स्तवों का परिचय कराया है एवं निदेशन स्वरूप कुछ महत्त्वपूर्ण पद्य भी उद्धृत किये हैं। एक अध्याय में उनकी भक्तिरस की भावप्रवण ललित रचनाओं का विवेचन है तथा एक अन्य अध्याय में इन रचनाओं के भावपक्ष का मूल्यांकन किया है। अन्त में भारत राष्ट्र, भारतीय वाङ्मय, संस्कृत भाषा, आदि की गरिमा का ख्यापन और महिमा का मंड़न करने वाले तथा अपने प्रमुख आराध्य से इतर देवों की स्तुति करने वाले स्तव साहित्य का विवेचन है।

स्पष्ट है कि इस प्रकार का परिचयात्मक और समीक्षात्मक आकलन करने वाले ग्रन्थ न केवल विवेच्य कृतिकार की यशोगाथा को चिरस्थायी और व्यापक स्तर पर महनीय बनाते हैं अपितु नई पीढी के अध्येताओं को ऐसी कृतियों को समझने और हृदयंगम करने में सहायता भी प्रदान करते है। इस ग्रन्थ के प्रस्तुती–करण के उपलक्ष्य में हम श्रीजी महाराज के चरणों में प्रणाम पूर्वक ग्रन्थ लेखक को सस्नेह साधुवाद समर्पित करते हैं।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

श्री हरिः

विनम्र-निवेदन

मैनें परमपूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर अनन्तानन्त श्री विभूषित निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर "श्रीजी" श्री राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्य श्री के प्रणीत ग्रन्थों का अध्ययन आचार्य प्रवर के शिक्षा उपदेश को हृदयंगम करने के लिए ही किया है। यह मनोरथ मैनें आचार्य प्रवर के सामने १८-१०-२००० को प्रकट किया। तब गुरुदेव प्रभू ने अपने स्वकीय व कई अन्य ग्रन्थ रत्न प्रसाद स्वरूप प्रदान करते हुऐ कृपा कटाक्ष की वर्षा कर ज्ञान भण्डार के ताले की कई सूत्रात्मक चाबियां मुझे प्रदान की जिन के द्वारा यह अध्ययन विकसित हुआ।

ग्रन्थ अध्ययन के उपरान्त "स्तव साहित्य के अध्ययन" को आठ अध्याय में विभाजित कर लेखन प्रारम्भ किया। इस अध्ययन को करते हुए मेरा मन युगल आराधना में उत्तरोत्तर और भी गहरा होता गया और अपने आप में सुखद अनुभव होने लगा। फरवरी २००१ तक यह लेखन लगभग पूरा हुआ। मन में यह संकोच बना हुआ था कि हम सही ढ़ंग से अध्ययन कर पाये हैं या नहीं ! १८ मार्च २००१ को मैं आचार्य-पीठ गया उसी दिन यह लिपिबद्ध सामग्री अवलोकनार्थ आचार्य प्रवर को समर्पित की। यत्र-तत्र से अवलोकन के उपरान्त महाराजश्री ने कहा-जिस भाव से आप ने ग्रहण किया वह ठीक है और किये गये श्रम की प्रसंशा कर प्रोत्साहन दिया।

जो मेरे लिए शिक्षा प्रद रहा है वह दूसरों के लिए भी शिक्षा प्रद होगा। इस भावना से मैनें आचार्य प्रवर से इस के प्रकाशन की अनुमति चाही, महाराजश्री ने कृपा पूर्वक इस की अनुमति प्रदान कर दी।

इसी दिन महाराजश्री ने "श्री महावाणी" व "श्री युगल शतक" ग्रन्थ प्रदान करते हुऐ श्री महावाणी जी में से कई प्रकरण के गूढ़ार्थ स्वयं ग्रंथ वाचन के साथ मुझे बताये।

दूसरी बार इस की प्रति का यत्र-तत्र से न्यूनाधिक अवलोकन के बाद आचार्य प्रवर ने कहा-निकुञ्ज में-सखी-सहचरी-किङ्करी जन होते हैं यहां गोपीजन आदि वृदांवन भावपरकता नहीं होती है क्योंकि वृज लीला के बाद निकुञ्ज लीला या निकुञ्ज भाव की प्राप्ति होती है। "श्री महावाणी" आदि ग्रन्थों में यही प्रयुक्त हुआ है। अन्य प्रसंग में सद्भाव पूर्वक जो जैसा समझते हैं ठीक है।

निकुञ्ज के प्रसंग में हमने कहीं-कहीं "गोपीजन" आदि का प्रयोग कर दिया था जिस का हमने सुधार किया है फिर भी भूल रह गई हो तो विज्ञजन सुधार कर के लेगें। लेखन में मेरी अल्पज्ञता से भाषा, व्याकरण सम्बधी या प्रूफ संशोधन में जो भूल रह गई है उसे भी विज्ञजन सुधार कर लेंगे। कहीं कोई भूल है तो वह मेरी अपनी है। इस में कुछ अच्छा है तो वह आचार्य प्रवर का कृपा प्रसाद है।

आचार्य प्रवर "श्री जी" महाराज प्रणीत समस्त साहित्य का केन्द्रीय भाव सदाचार, राष्ट्र भक्ति व पराभक्ति है, इस ग्रन्थ में इन्हीं पक्षों को केन्द्र में रखकर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन ग्रन्थ से आचार्य प्रवर के समग्र चिन्तन को समझने, हृदयंगम्

करने व व्यवहार में लाने में सहायता मिलेगी जिससे सद्भावीजन सदाचार के साथ पराभक्ति की गहनता को प्राप्त कर सकेंगे। साहित्यकर्मी, विद्वान, शिक्षाकर्मी जिज्ञासु व मानव मात्र को यथायोग्य, यथेष्ट ज्ञान लाभ होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

इस ''अध्ययन'' प्रस्तुति में हमें जिन विद्वानों, ग्रन्थों, सत्संग संवाद–आशिर्वाद व सद्भाव से सहयोग प्राप्त हुआ है मैं उनका आभार मानता हूँ। परमादरणीय डॉ. मण्डन मिश्र जी व देवर्षि कलानाथ जी शास्त्री का प्रणतिपूर्वक कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने इसका अद्योपान्त अवलोकन करके ज्ञानगर्भित स्नेहमय अभिवचन प्रदान किये।

आचार्य प्रवर, विद्वान, सद्ग्रन्थ, साधु, वैष्णव, सत्संग व परम प्रभू श्री राधा सर्वेश्वर के कृपा प्रभाव से ही यह ग्रन्थ सम्भव हुआ है अतः इनकी इस कृपा सम्भूति को हम इन्हें ही सविनय समर्पित करते हैं।

दिनांक 20-6-2001

रामस्वरूप गौड़

मोखमपुरा (बिचून), जयपुर

आभार

आचार्य श्री के स्वकीय ग्रन्थ इनके द्वारा प्रदत्त उपदेश व शिक्षा से ही यह अध्ययन प्रस्तुत हो सका है। आचार्य श्री के इन २१ स्तव ग्रन्थों के अध्ययन में हमें इन ग्रन्थों के अनुवाद से सर्वाधिक सहायता मिली हैं इन के अध्ययन को विकसित करने में आमुख लेखों से भी हमें सहयोग मिला है। वस्तुतः इन ग्रन्थों के प्रथम ''अध्ययन'' प्रस्तुत कर्त्ता यह आमुख लेखक परमादरणीय विद्वान महानुभाव हैं अतः हम इन सब को विनम्र प्रणाम पूर्वक आभार निवेदन करते है।

ये विद्वान महानुभाव हैं-

अधिकारी व्रजवल्लभ शरण वेदान्ताचार्य, श्री रामगोपाल जी शास्त्री जयपुर, प. श्री गोविन्द दास जी ''सन्त'' धर्मशास्त्री अजमेर, पं. श्री मुरली धर शास्त्री कथाव्यास सलेमाबाद, अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरू रामानुजाचार्य, केशवा चार्य जी महाराज नागौरिया पीठाधीश्वर डीडवाना, नागौर, श्री वैद्य नाथ झा वृदांवन, श्री मुरली धर शास्त्री बरसाना, श्री वासुदेव शरण उपाध्याय, सलेमाबाद, अजमेर, श्री दया शंकर शास्त्री ब्यावर, श्री देवर्षि कलानाथ शास्त्री जयपुर, डा. प्रभाकर शास्त्री जयपुर, श्री हरिशरण उपाध्याय काठमाण्डू नेपाल, श्री वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी मथुरा उत्तर प्रदेश, आचार्य खेमराज केशव एम.ए. काठमाण्डू नेपाल, श्री सत्यनारायण शास्त्री अजमेर, श्री रामनारायण चतुर्वेदी (निदेशक सं. शिक्षा) जयपुर, श्री परशुराम शरण भारद्वाज व्या. सा. आचार्य साहित्य रत्न वेदान्त शास्त्री सलेमाबाद, श्री बदरी प्रसाद झुंझनु प्रो. डॉ. प्रेम नारायण श्री वास्तव वृंदावन डॉ. रामप्रसाद शर्मा किशनगढ़, डॉ. नारायण दत्त शर्मा मथुरा (उ.प्र.), डॉ. गुरू

देव त्रिपाठी मथुरा (उ.प्र.), श्री सम्पत तोषनी वाल नई दिल्ली प. मन्मथ कुमार मिश्र सीकर, युग सन्त मुरारी बापू मउवा भावनगर गुजरात, महन्त मुरली मनोहर शरण शास्त्री महामण्लेश्वर उदयपुर, श्री घनश्याम दास अग्रवाल सूतवाले किशनगढ़, श्री कौशल किशोर दास किंकर चित्रकूट (म.प्र.), प. सुरति झा. व्या. साहित्याचार्य वृदांवन, अनन्त श्री समलंकृत रामानुजाचार्य स्वामी श्री निवासाचार्य जी महाराज डीडवाना, वै. वासुदेव शास्त्री आयुर्वेदाचार्य मुम्बई, श्रोत्रिय श्री सीताराम जी शास्त्री एम.ए. साहित्याचार्य जयपुर, वैद्य हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य मुम्बई, पं. राधा वल्लभ शास्त्री कचनारिया दूदू–जयपुर

इस "अध्ययन" को प्रशस्त करने हेतु हमने निम्न ग्रन्थों का न्यूनाधिक अवलोकन किया है इन का चिन्तन निश्चय ही इस "अध्ययन" में सहयोगी हुआ हैं।

श्री ब्रह्मसूत्रम्– श्री भगवन्निम्बार्क महामुनीद्र विरचित वेदान्त परिजातः सोरभाख्या सूत्रवाक्यार्थेन श्री श्री निवासाचार्य चरण प्रणीत– श्री वेदान्त कौ स्तुभ भाष्येन च सनाथी कृतम्। प्रकाशन, प. कल्याण दास पनीया घाट स्थान श्री वृदांवन स. १६८६ ई. १६३२

ईशाद्यष्टोपनिषद्:–भगवन्निम्बार्क मतानुयायी

प्रोफेसर– श्री रामप्रसाद शास्त्री विद्याभूषण महोदयैः नि. ब्यावर, भूतपूर्व विभागाधि ापति, नागपुर विश्व विद्यालय, वि.स. १६६४ ई. १६३७

वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी– व्याख्याकार प. रामगोपाल शास्त्री

श्री मद्भगवद्गीता (श्री निम्बार्क सिद्धान्त प्रकाशिकाटीका)

व्याख्या पं. वैष्णवदास शास्त्री

पण्डितराज श्रीमदनन्तराम विरचितः तत्त्व-सिद्धान्त-विन्दुः

स. अनुवादक पं. रामगोपाल शास्त्री–

प्रकाशन–आचार्यपीठ–सालेमाबाद अजमेर

-ओदुम्बर-संहिता

प्रकाशन–महन्त श्री रामकृष्ण दास, श्री गोपाल मन्दिर, विमल कुण्ड कामवन जि. भरतपुर (राज.)

युगल शतक – अनन्त श्री विभूषित श्रीभट्टदेवाचार्य

श्री महावाणी– अनन्त श्री विभूषित श्रीहरिव्यास देवाचार्य

गीत गोविन्द काव्यम् (जयदेव) "इन्दु" नामक हिन्दी भाषा टीकोपेतम् चौखम्बा–वाराणसी,

स्वधर्मामृत सिन्धु

श्री निम्बार्क–पाक्षिक पत्रिका, अखिल भार[illegible] [illegible]र्बाकाचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद अज[illegible]मेर

श्री सर्वेश्वर मासिक पत्र–वृदांवन–उत्तर प्रदेश

"श्री निम्[illegible]ार्क" का श्रीसर्वेश्वर अंक

श्री निम्[illegible]र्काचार्य और उनका सम्प्रदाय

श्री सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका

प्रकाशन–अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन स्वागत समिति. निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद राजस्थान वि.स. २०३४–

प्रेम दर्शन (देवर्षि नारदविरचित भक्ति सूत्र) व्याख्याकार–श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार गीता प्रेस, गोरखपुर

राधा–माधव मधुर रूप–गुण तत्त्व–श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार गीता प्रेस, गोरखपुर

श्रीमद्भागवद्महापुराण, हिन्दी व्याख्या सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर

संस्कृत साहित्येतिहासः, आचार्य रामचन्द्र मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

प्राचीन भारत का साहित्यिक व सांस्कृतिक इतिहास, डा. निरंजन सिंह ''योगमणि'' रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर

मीरांबाई, प. चन्द्र दत्त पुरोहित अ.भा. निम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद

वृहत स्तोत्र संग्रह–मुम्बई

सर्वेश्वर स्तोत्र रत्नावली

स्तोत्र संग्रह गीता प्रेस, गोरखपुर

जगद्गुरू निम्बार्काचार्य श्री ''श्री जी'' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य और उनका श्री राधासर्वेश्वर–शतक–डा. केशव देव शर्मा

प्र.–नीरज बुक सेन्टर दिल्ली–६२

एक सुधार

पृष्ठ चार पर उल्लेखित दोहा जनश्रुति के आधार पर लिखा गया है उसका मूल स्वरूप यंह है।

भक्ति न उपजै भाव बिन, भाव न बिन मन शुद्ध।
होय न कबहुँ 'परसुराँ', बिन ब्याई के दुद्ध।।

क्रमणिका

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥

श्री राधामाधव प्रभु निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद

अध्याय–1

स्तोत्र साहित्य

अपने श्रद्धास्पद परमाराध्य देव का भावपूर्ण महिमामय काव्यसंस्तवन, स्तव या स्तोत्र कहे जा सकते हैं। स्तोत्र में परमाराध्य का स्वरूप, श्रृंगार, लीला–ऐश्वर्य कृपाप्रभाव आदि महिमा के साथ विनम्रप्रार्थना धर्मसदाचार नीति व भक्ति–व्यवहार यथा प्रसंग निहित हो सकते हैं।

वेद भगवत्स्वरूप अपौरूषेय आदिकालीन साहित्य है, वेद में सृष्टि का व्याकरण है। वेद में तीन प्रकार के वर्ण्य विषय या काण्ड है। चारों वेदों के यह तीन वर्ण्य विषय प्रमुख है कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड व उपासनाकाण्ड। परमेश्वर ने यह सृष्टि निर्माण करके अलग–अलग देवों को अलग–अलग प्रतिभा प्रदान की तथा इस अपर सृष्टि का कार्य प्रभाव इन्हें सम्भला दिया अतः यह सृष्टि देवोंमय हैं। एतदर्थ परमेश्वर प्रतिनिधि रूप इन देवों की जगत प्रतिभा प्राप्ति के लिए स्तुति–पूजा की जाती हैं। कर्मकाण्ड में सृष्टि–विज्ञान, घर्म –विज्ञान, देव विज्ञान व यज्ञ यागादि कर्म का विवरण है इस काण्ड में परस्पर परब्रह्म के साथ जगत सु सम्पादन के लिए देवों की स्तुति अर्चना है। ज्ञानकाण्ड में सृष्टि विज्ञान के साथ परात्पर तत्त्व का बोध कराया गया है और अध्यात्मिक उन्नति की विद्या बताई गई है।

उपासना काण्ड वेदों का शीर्ष भाग उपनिषद् हैं इस में विभिन्न साधना व विद्याओं से परम तत्त्व परमेश्वर का बोध कराया गया है।

वेदों में कई स्तव स्तोत्र है यथा– श्री सूक्त, पुरुषसूक्त रुद्रसूक्त, रुद्राष्टाध्यायी, पृथ्वीसूक्त, पवमानसूक्त, इन्द्रस्तव व अथर्ववेद में गोपाल तापिनी उपनिषद्, राधाकृष्णोंपनिषद्, गणपत्यथर्व देव्याथर्व आदि जैसे उपासना विषयक स्तोत्र स्तव है। आचार्य श्री ने उपरोक्त जैसी ही जानकारी भिन्न संदर्भ से "वृदावन सौरभ" ग्रन्थ के आमुख लेख में दी है।

वेद के बाद पुराण में वेद–वेदान्त के सिद्धान्त को ऐतिहासिक कथानक द्वारा जीवन क्रिया कलाप के व्यवहारिक रुप में व्यक्त किया है। वेदव्यास जी द्वापर में हुए तब तक वेद–व्याकरण जगत व्यवहार में कई रुप से व्यक्त हो चुका था। परम प्रभू व परम शक्ति के कई अवतार प्रकट हो चुके थे तथा कई परम प्रभावान व्यक्ति इस जगत को परमप्रभा प्रदान कर चुके थे और कर रहे थे। अतः वेदव्यास जी ने प्रभावशाली कथानक व पात्रों को अपनी पौराणिक कथावस्तु का आधार बनाया जैसे महाभारत में कौरव व पाण्डव आदि। धर्म, कर्म, भक्ति, ज्ञान वैराग्य आदि से सम्बन्धित उज्ज्वल पात्रों को पुराण कथाओं में स्थान दिया और ईश्वर तथा अवतारों के सम्बन्ध में तो कई विशेष पृथक पुराण ही रच दिये यथा श्रीमद्भागवद्पुराण (इस में अन्य संदर्भो के साथ भगवान श्री कृष्ण की उज्ज्वल जीवन लीला है) शिवपुराण, कूर्मपुराण, देवीभागवद्पुराण, विष्णुपुराण, हरिवंशपुराण आदि। इन पुराणों में यथा अवसर परम प्रभू व देवी–देताओं के बहुत से अतीव सुन्दर स्तव, स्तोत्र, कवच व सहस्त्र नामावलियां है। कवच व सहस्त्र नामावलियां या अन्य नाम स्मरणावलियां स्तोत्र ही है।

इन पुराणों से पहले "श्री रामायण" रचकर माहर्षि वाल्मिकी ने भगवान श्रीराम-की लीला स्तुति गाई है। रामायण में कई स्तोत्र है इसका "आदित्य हृदय" स्तोत्र बहुप्रचलित है।

स्वतंत्र स्तोत्र रचनाओं में श्री पुष्पदन्त का "महिम्न स्तोत्र" सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। कवि मयूर का "सूर्य शतक" भी प्राचीन गिना जाता है।

श्री राधा कृष्ण उपासना अन्तर्गत वैष्णव परम्परा के स्वतंत्र स्तोत्रकारों में आदिआचार्य निम्बार्क ही प्राचीन है आप का आविर्भाव द्वापरान्त पर हुआ माना जाता है। आदिआचार्य निम्बार्क द्वारा कई स्तोत्र की रचना की गई–जिन में–"वेदान्त दशश्लोकी" "श्री कृष्ण प्रातःस्तव राज" श्री राधाष्टक व श्री मन्त्र रहस्यषोड़शी, "श्रीप्रपंन्नकल्पवल्ली" मुख्य है। इनके पट्ट शिष्य श्री निवासाचार्य व साथ के ही ओदुम्बराचार्य तथा कुछ समय बाद के **देवाचार्य** प्राचीन स्तोत्रकार हुए हैं।

आदिआचार्य शंकर दर्शन, धर्म–उपासना व स्तोत्र साहित्य में बहु आयामी प्रभाववाले हैं। इन के गणेश, शिव, शिवा परम्बा, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, विष्णु, सूर्य व राम, कृष्ण आदि सभी परम स्वरुप पर तथा विशेषतःपरमब्रह्म के अद्वैय स्वरूप व योगोपासना गर्भित स्तोत्र प्रचलित है। आपकी "सौन्दर्य लहरी" सर्वोत्कृष्ट स्तोत्र रचना मानी जाती है। इस परम्परा में बाद के भी कई स्तोत्र रचनाकार हुए हैं।

महिम्न के बाद काश्मीर के शैव उपासकों के दो स्तोत्र संग्रह "शिव स्तोत्रावली" व "स्तुति कुसुमाञ्जली" माने जाते है जिनमें भिन्न–भिन्न रचनाकारों की स्तोत्र रचनायें हैं।

वैष्णवों का वृहद् स्तोत्र साहित्य है– कुलशेखर की "मुकुन्द माला" यमुनाचार्य के स्तोत्र, लीलाशुक का "कृष्णकर्णामृत" वैंकटधरण का "लक्ष्मीस्तव" मधु सूदन का "आनन्दमन्दाकिनी" माधव भट्ट का "दान लीला" गोविन्द दामोदर स्तोत्र (विल्व मंगल) नामदेव आदि व श्री रामानुज श्री रामानन्दाचार्य सहित कई स्तोत्र रचनाकार हुए। तुलसी दास जी की श्रीरामचरित मानस में कई हार्दिक स्तोत्र रचनायें है। श्री मध्वाचार्य व

मध्व गौडीय परम्परा के आचार्य के बाद कुछ स्तोत्र रचनाकार हुऐ जिन में रुप व सनातन गौस्वामी प्रमुख है। बल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य श्री बल्लभ द्वारा भी कई मनोहर स्तोत्र रचनायें की गई। गीता प्रेस गोरखपुर व बम्बई, वाराणसी आदि कई स्थानों से प्रकाशित स्तोत्ररत्नावलियों में कई रचनाकारों के स्तोत्र हैं। श्री निम्बार्क वैष्णव परम्परा में श्री केशव काश्मीरी भट्टाचार्य, श्री भट्टाचार्य श्री हरिव्यास देवाचार्य, श्री वृदावन देवाचार्य, श्री सर्वेश्वरशरण देवाचार्य व वर्तमान आचार्य चरण अनन्तानन्त श्री विभूषित श्री राधा सर्वेश्वरशरण देव प्रमुख है। इन आचार्य चरणों के अतिरिक्त कई अनुगत भी स्तोत्र रचनाकार भक्त भावुक हुऐ हैं।

स्तोत्र विवरण में हमने अपने सामान्य अध्ययन की जानकारी प्रस्तुत की है गवेषणा से स्तोत्र रचनाओं का एक वृहद रोचक, उपयोगी व प्रेरणा प्रद स्वरुप सामने आ सकता है।

आचार्यवर्य श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य व इनका स्तव साहित्य

आचार्य श्री राधासर्वेश्वर शरण देव ने संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं में ही भक्तिमय राष्ट्रीय सामाजिक व संस्कार उद्बोधक काव्य व अन्य साहित्य का सृजन किया है। आपके साहित्य में मुख्य विषय तो भगवद्–भक्ति ही है। आपके मानस में प्रतिष्ठित भक्तिभाव ही साहित्य सृजन की मुख्य प्रेरणा रही है।

भाव बिनन भक्ति उपजे भक्ति बिनन मन सूझ।
कबहुन होवें "परसरा" बिन व्याई के दूध।।

भक्तों का स्वभाव सरल और सौम्य होता है, परदुःखकातर होता है। भक्त सांसारिक जन के दुःख से दयार्द्र हो सब को सुखी देखने की भावना करते है।

जीवन में सौहार्द सुख व चतुर्विध उन्नति का एक ही रास्ता है– सब भक्ति भावापन्न होकर मर्यादा पूर्वक जीवन यापन करे, तब सब सुखी समृद्ध और मानवीय गुणों से सम्पन्न होगे। भक्ति ही कल्याण कारी सार्वभौम सुखदाता है।

भक्ति–साहित्य से विद्या, संस्कार व भक्तिभाव समृद्ध होता है। परस्पर सात्विक–सदाचार व सौहार्द का सृजन होता है। स्वकीय भक्ति भाव के साथ आचार्य श्री के साहित्य सृजन हेतुओं में जन कल्याणकारी यह भाव भी निहित रहा है।

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा स० १६८६ दिनांक–१० मई १६२६ निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद अजमेर में आविर्भाव व ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया वि.स. २००० दिनांक ५ जून १६४३ को आप अनन्त श्री विभूषित जगद्‌गुरु श्री निम्बार्काचार्य, पीठासीन हुऐ। एक प्रमुख पीठाधिपति होने से आपपर धर्म, भक्ति व संस्कृति समृद्धि का दायत्त्व रहा। आपके साहित्य सृजन में यह भी एक प्रेरक हेतु रहा है।

स्वभाव से सरल चित्त, सौम्य, दयार्द्र विद्‌वान, प्रतिभावान, भक्तिभावापन्न व धर्मसम्प्रदाय प्रमुख आचार्य श्री का साहित्य, प्रवचन व जीवन आपके अपने देदिप्यमान व्यक्तित्त्व के ही चरण चिह्न हैं।

आप अपनी नित्य नैमैतिक भगवद्‌सेवा, साधना के साथ नित्य कई भक्तभावुकजनों को दीक्षा–शिक्षा सहित धर्म–सभाओं, ज्ञान सत्रों, सभासम्मेलनों में अपना उद्‌गीथ वचन प्रदान करते रहते हैं। भारतवर्षीय पीठ के अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर सञ्चालित कार्यक्रमों का संरक्षण व संवर्धन सहित कई शिक्षार्थियों को निजाश्रम मे विद्या प्रदान कराते हैं। विनम्र साधुसेवा के साथ समय–समय पर उत्सव आयोजन करते कराते हैं। सनातनधर्म–संस्कृति व राष्ट्र की सदोन्नति कि लिए सर्वविध प्रेरणा प्रदान करते हुए तत्पर रहकर आशिर्वाद–सहयोग प्रदान करते हैं। स्वकीय साहित्य सेवा के साथ

प्राचीन–अर्वाचीन ग्रन्थों का व पत्रिका प्रकाशन आपके संरक्षण प्रेरणा से होता है। आपके संरक्षण में वृहत् सनातन–धर्म–सम्मेलन का आयोजन हुआ। गौ–वध–बन्दी के लिए अन्य धर्माचार्यो के साथ विशेष जन जागरण किया। संस्कृति व संस्कृत की समृद्धि हेतु आपका निरन्तर योगदान विशिष्ठ रूप से रहा है।

जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य पीठ के कार्यक्रम में सम्प्रदाय के अधिकारी साधु–महान्त व परिकर समूह का तो आचार्यश्री के अङ्गवत सतत साथ ही हैं। सम्प्रदाय के शिष्टानुगत भी शिक्षा संस्कारों का सतत अवलम्बन करते हुए यथायोग्य रूप से सद्‌कृत्यों में मनसा–वाचा–कर्मणा श्रद्धा समर्पित करते हैं। आप श्री ने कइयों को सन्मार्ग पर लगाया है। आज हर क्षैत्र में सम्प्रदाय के अनुगत है जिनकी संख्या कोटिशः होगी संस्कार रूप में आप ही इन अनुगतों में विद्यमान है।

नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्र पादाक्षि शिरोरू बाहवे।
सहस्त्र नाम्ने पुरूषाय शाश्वते, सहस्त्र कोटि युगधारिणे नमः।।

देश की स्वतंत्रा से पहले लम्बे समय तक हमारा देश परतंत्र रहा विदेशी शासकों ने इस देश की राजनीति , संस्कृति, धर्म, आध्यात्म साहित्य व जनआस्था कृतिवृत्ति तथा प्रतिभा को विचलित, विकृत व नष्ट करने का बराबर प्रयत्न किया। इस दौर में राजनीति व राजसत्ता निश्चित रूप से प्रभावित हुई और विदेशी शासन हो गया किन्तु प्रबल जन आस्था के रहते धर्म, आध्यात्म साहित्य व तदनुसार सामाजिक संस्कृति कष्ट सहकर भी विचलित, विकृत व नष्ट नहीं हुई। लोभ प्रलोभन तथा यातना से भी यहां के आम जन अपने आध्यात्म साहित्य व संस्कृति सामाजिक आचार व व्यवहार की आस्था से नही गिरे बराबर कष्ट सहकर भी निष्ठावान रहे।

स्वतंत्रता के बाद भौतिकवादी मानसिकता व प्रवंचना ने यहां के आम जन व सामजिक संस्कृति को अत्यधिक विकृत किया। काम व अर्थ को ही मनुष्य की उन्नति का आधार मानने से साहित्य, संस्कृति व राजनीति आदि सभी स्तम्भ विकृत होने लग गये है। अतः सामाजिक जीवन में सदाचार, सहिष्णुता व सौहार्द्र नही रह पाया है प्रवंचना, आत्मश्लाघा, इर्ष्याद्वेष, हिंसा, भ्रष्टाचार व अनैतिकता ने सब तरफ जाल फैला लिया। भक्ति उपासना व धर्माचरण जीवन में गौण अवलम्बन हो गये है।

चाहे कोई भी धर्म, सम्प्रदाय या उपासना परम्परा हो। उपासना के बिना जीवन में सुख सौहार्द्र व चतुर्विध उन्नति नहीं मानते। भगवद् उपासना के अवलम्बन से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व विश्वकी सोजन्यपूर्ण, सुखमय, सर्वकल्याणकारी उन्नति हो सकती है क्योकि एक सच्चे भगवद् उपासक में ही सच्चा समत्व व सुह्रद भाव हो सकता है।

आचार्य श्री की स्तव रचनाओं में सनातन श्रुति–स्मृति मनीषा अनुरूप भक्ति उपासना की सम्पूर्ण, मर्यादाओं का अवलम्बन है। श्री निम्बार्कीय परम्परा के अनुरूप श्रीराधा कृष्ण युगल की उपासना का अवलम्बन लेते हुए वेदान्त के कई रहस्यों का आप की रचनाओं में उद्घाटन है।

माधुर्य, सरसता, सरलता आपकी रचनाओं में निहित है। आपकी रचनाओं में छन्द–अंलकार की शास्त्रीय मर्यादा का प्रयोग है।

यहां हम सारांश में यही कहना चाहेगें कि आचार्य श्री की रचनायें पठन–पाठन मनन व नियमित स्तुति गान करने से भक्तिभाव की समृद्धि तथा विद्या, संस्कार सदाचार, सौहार्द्र प्रेरणा प्रदान कर सर्वजन कल्याण करने में सक्षम है। सभी उपास्य स्वरूप पर आप की रचनायें है और सभी भक्ति भाव परम्पराओं के लिए उपादेय है।

अध्याय–2

अनन्त श्रीविभूषित जगदगुरू निम्बार्कपीठाचार्य "श्रीजी" श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य प्रणीत संस्कृत ग्रन्थों का परिचय।

अनन्त श्री विभूषित आचार्य श्री "श्री जी"श्री राधा सर्वेश्वर शरण देव के वैशाख शुक्ल तृतीया वि. स. २०५७ दिनांक ६–५–२००० तक प्रकाशित ग्रन्थों की संख्या २६ है। इनमें २१ संस्कृत व ८ हिन्दी के है। इन में से "उपदेश–दर्शन" व "हिन्दू संघठन" में आप श्री के प्रवचन सरणी के लेख संग्रहित है। **"श्री निम्बार्कचरितम्"** में जगद्गुरु आदि निम्बार्काचार्य का संस्कृत भाषा में गद्यात्मक चरित्र वर्णन है। जगगुरु आदि निम्बार्काचार्य विरचित "प्रातः स्तवराज" पर **"युग्मतत्त्व प्रकाशिका"** व "वेदान्तकामधेनु –दशश्लोकी" पर **"नवनीत सुधा"** नामक संस्कृत में व्याख्या ग्रन्थ है-साथ ही हिन्दी भाषा में सारभूत अर्थ भी संग्रहीत है। **"मंत्रराज भावार्थ-दीपीका"** में निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रचलित "मुकुन्द मंत्र" व "गोपाल मंत्र" का भावार्थ आप श्री द्वारा विरचित "मुकुन्दशरणाष्टक स्तोत्रम्" व "गोपालमन्त्र राजाष्टक स्तोत्रम्" में व्यक्त किया गया है जिसका हिन्दी रूपान्तर भी प्रकाशित है साथ ही इस ग्रन्थ में मुकुन्द मंत्र व गोपाल मंत्र की जप विधी भी दी गई है।

"श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्" में जगद्गुरु आदिनिम्बार्काचार्य पर संस्कृत मे ६ स्तव रचनायें "श्री निम्बार्क चतुश्लोकी, श्री निम्बार्का राधनाष्टकम्", श्रीनिम्बार्क गुणाष्टकम्, श्रीनिम्बार्क स्वरूपाष्टकम्, श्रीनिम्बार्क भजनाष्टकम्, श्रीनिम्बार्क विंशतिस्तोत्र" से अर्चना की गई है। साथ ही हिन्दी में निम्बार्क स्तुति के १७ पद,श्री निम्बार्क भगवन्नाम संकीर्तन, "श्री निम्बार्क दिव्यस्वरूप–दर्शन" व पुस्तपृष्ट पर श्री निम्बार्क भगवान की आरती दी गई है।

"श्री परशुराम-स्तवावली" में आचार्य श्री ने स्वकीय भावोद्‌गार" में श्री हंस, सनकादि, देवर्षि नारद व निम्बार्काचार्य द्वारा सर्वेश्वर प्रभु की सेवा व निम्बार्क परम्परा की जानकारी देते हुए बताया है कि श्री परशुराम देव ने श्री हंसावतार के प्रमुख स्थल–जगत पिता श्रीब्रह्मा की पावन यज्ञ–स्थली–पुष्कर के आरण्य मरू भूमि में साभ्रमती तट समीपरथ–जिसका वर्णन "पद्मपुराण" में है। (निम्बार्क तीर्थ) पर आकर तपः साधना की। श्री निम्बार्क की आचार्य परम्परा के पैतीसवें आचार्य श्रीहरिव्यास देव के उत्तरगामी आचार्य, श्रीपरशुराम देव ने इसी निम्बार्क तीर्थ पर अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ की स्थापना की। इनके पूर्व के आचार्य गिरीगोवर्धन के निकट निम्बग्राम या व्रज मण्डल में ही विराजते थे।

आचार्य श्री परशुराम देव नें ही भक्तिमती मीरांबाई को वैष्णव दीक्षा प्रदान की थी तथा तत्कालीन दिल्ली के सम्राट बादशाह शेर शाह शूरी को आपके आशिर्वाद से पुत्र प्राप्त हुआ था जिसका नाम सलीम था। शेर शाह शूरी ने ही अपने पुत्र के नाम पर निम्बार्क तीर्थ–आचार्यपीठ के समीप "सलेमाबाद" नगर बसाया जो यथावत अद्यावधि विद्यमान है।

इस तरह निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद आचार्य परशुराम देव की तपः स्थली पर संस्थापित है। आचार्य श्री परशुराम देव द्वारा यह पीठ स्थापित हुई है।

निम्बार्कपीठ निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद के संस्थापक श्री परशुराम देव की स्तुति "श्री परशुरामस्तवावली" मे श्रीमत्परशुरामदेवाचार्याष्टकम्, श्रीमत्परशुराम देवाचार्य स्तोत्रम्, श्री परशुराम देवाचार्य "चतुश्लोकी, चार दोहों व आरती" द्वारा की है। **"श्री स्तवरत्नाञ्जलीः"** आदि में आचार्य श्री देव रचित स्तव स्त्रोत व स्तुतियां पठन मनन अनुशीलन व सस्वर स्तुति कर्त्ता को भावापन्न करने वाली है। शब्द छन्द मंत्र ताल गति और अक्षर समायोजन ऐसा है कि यह स्तव अक्षर ब्रह्म के द्वारा परम ब्रह्म को प्राप्त कराने वाले है। चाहे यह पूर्वाचार्य चरणों की स्तुतियां है या चिन्मय विग्रह राधा–माधव, राम–सीता की, शिव गणेश, हनुमान अथवा यमुना गोवर्धन वृदावन आदि लीला भूमि की सब में भाव के साथ प्रभु का निर्मल और दिव्य आलोक है। इन स्तुतियों के तेज से संस्तुत–देव प्रकाशित होने लगते है। "स्तवरत्नाञ्जली" का संम्पादन अधिकारी श्रीब्रजबल्लभ शरण वेदान्ताचार्य पं. राम गोपाल शास्त्री पं. गोविन्द दास सन्त पं. मुरलीधर शास्त्री कथाव्यास आदि विद्वान महानुभावों ने किया है।

"श्री स्तवरत्नाञ्जली" के दो खण्ड है पूर्वार्द्ध खण्ड में २३ स्तव है। श्री वृजभावनाष्टकम्, श्री यमुनाष्टकम्, श्री वृदावनाष्टकम्, श्री राधाष्टकम्, श्री माधवाष्टकम्, श्री राधा माधवाष्टकम्, श्री वृषभानुसुताष्टम्, श्री वृज राज सुताष्टकम्, श्री सर्वेश्वर प्रातः स्तव, श्री युगल गीतिका, श्री हंस सनकादि नारदाष्टकम्, श्री निम्बार्काष्टकम्, श्री निम्बार्क महिमाष्टकम्, श्री निम्बार्क पंचश्लोकी, श्री निम्बार्कचतुश्लोकी, श्री निम्बार्कस्तवराजः, श्री निवासा चार्याष्टकम्, श्री श्री भट्ट देवाचार्याष्टकम्, श्री हरिव्यास षोडशी, श्री परशुराम देवाचार्य चतुश्लोकी, श्रीमद्गुरु स्तव।

उत्तरार्द्ध खण्ड मे १६ स्तव है– श्रीगणेशाष्टक, श्रीगरुडाष्टक, श्रीलक्ष्मी महिमाष्टकम्, श्री मन्नारायणाष्टक, श्रीराममहिमाष्टक, श्रीमिथिलेशसुताष्टक, श्री हनुमानमहिमाष्टकम्, श्री देवीमहिमाष्टकम्, श्री

शिवमहिमाष्टकम, श्री सरस्वती महिमाष्टकम, श्री गंगा महिमाष्टकम, श्री गो महिमाष्टकम्, श्री पुष्करमहिमाष्टकम्, श्री निम्बार्कतीर्थाष्टकम्, श्री सत् पथाष्टक, श्री राधा–माधव स्वत श्री केशव काश्मीरी पञ्चश्लोकी।

"श्रीयुगल स्तवविंशतिः" में बीस स्तव है–
श्री राधाष्टकम, श्री राधा रसाष्टकम, श्री राधाप्रियाष्टकम, श्री कृष्णाष्टकम, श्री सर्वेश्वराष्टकम, श्री वेणुगीताष्टकम, श्री निकुञ्जाष्टसखीमहाष्टकम, श्री यमुनाष्टकम, श्री गोवर्धनाष्टकम, श्री मानसी गंगाष्टकम, श्री राधा कुण्डाष्टकम, श्री कृष्ण कुण्डाष्टकम, श्री ललिता कुण्डाष्टकम, श्री निम्ब ग्रामाष्टकम, श्री मद् भगवद् गीताष्टकम, श्री मद् भागवताष्टकम, श्री सुदर्शनाष्टकम, श्री पाञ्चजन्याष्टकम, श्री तुलसीमहिमाष्टकम, श्री गोपीचन्दनाष्टकम। **"श्री माधव प्रपन्नाष्टक"** में नामानुरूप एक अष्टक श्री राधा माधव के गुणानुवाद का है हिन्दी के १० पद व १० दोहे है।

"श्री निम्बार्क गोपीजन वल्लभाष्टकम्" में नामानुरूप गोपीजन वल्लभ का एक अष्टक स्वत व "श्री निम्बार्क चतुः श्लोकी" है।

"श्री जानकी वल्लभ स्तवः" इस स्तव मे श्री जानकी वल्लभ का २८ श्लोक में पराभक्ति पूर्ण स्तुति गान किया गया है। साथ में "सीता राम चतुः श्लोकी" व हिन्दी में "श्री रामकृष्ण युगलसंकीर्तन व राधवेन्द्राष्टक दिया गया है।

"श्री हनुमन्महाष्टकम्" आचार्य श्री देव का रामभक्त श्री हनुमान जी के प्रति हार्दिक भक्ति का भाव है, और पराभाव स्वरूप श्री हनुमान जी का भी आचार्य श्री पर अनुग्रह है यह अष्टक दोनों तरफ से बहने वाली भाव गंगा का सम्मेलन है। इस ग्रन्थ में दो अष्टक है दूसरा "श्री हनुमान द्वन्दनाष्टकम्" है इस के साथ हिन्दी के १० पद हैं। श्री हनुमान जी के गुण कीर्तन के साथ ही १८ दोहों में श्री हनुमान जी का विरद गाया गया है। विशिष्टता यह है कि इस ग्रन्थ में "शिव स्वरूपाष्टक" भी दिया गया है।

"श्री वृन्दावन सौरभम्" भगवान श्री राधा माधव ने परिकरो सहित गौ लोक धाम से पधार कर वृजक्षेत्र में परम दिव्य मनोहारी महाभाव परिपूर्ण लीला की है। अतः पूरा वृजक्षेत्र ही भगवान की दिव्य महाभाव लीलाओं में सहचर सहयोगी रहा है। इस वृन्दावन क्षेत्र मे आज भी दिव्य लीलाओं का सञ्चार होता रहता है। वृन्दावन व वृन्दावन के लीलाधीश की लीला स्मरण दर्शन व भावपूर्ण श्रवण मनन से वृन्दावन की दिव्यता का अनुभव हो सकता है। आचार्य श्री ने वृन्दावन के इस सौरभ को संस्कृत के ५४ श्लोक ४ गेयपद व हिन्दी के दस दोहों के कमल पंक को प्रस्फुटित कर महका दिया है और इस ग्रन्थ को नाम दिया है "श्री वृन्दावन सौरभ"।

"श्री निकुञ्ज सौरभम्" पूर्ण भक्ति परक भाव को "महाभाव" या "भावानन्द" कहते है। वृन्दावन निकुञ्जबिहारी श्री श्यामा–श्याम की निकुञ्ज लीला महाभाव लीला है। परा और परम, भक्ति–निकुञ्ज में भाव विहार करतें है राधा–माधव के इस नित्य निकुञ्ज में 'महाभाव' सिद्ध सखी जन का ही प्रवेश होता है। जो परमभाव से परिपूर्ण है। वहीं सब रसो का रस व सब से सर्वोतम है। यही सर्वथा निर्मलभाव, उज्ज्वल भाव कहलता है। इस मधुर रस उज्ज्वल भाव में निकुञ्ज की रस लीलाओं का आवेश होता है। आचार्य श्री ने माधुर्य रस के महासागर में ५४ श्लोक के कमल दस उगाकर भक्ति रस श्रृंगार की मकरन्द सुरभी महकाई है और इस ग्रन्थ का नाम दिया है "निकुञ्ज सौरभ"

"श्री राधा शतकम्"– श्री राधा जी पराश्री है, महाभाव स्वरूपा है। भगवान श्री कृष्ण की ह्लादीनि शक्ति है, श्री है दिव्य है कमनीय है। आचार्य श्री ने अपने आमुख लेख में लिखा है– अनन्तानन्त शक्तियों में प्रधान दो शक्ति है "श्रीश्च ते लक्ष्मीश्चप त्न्यौ." अर्थात् श्री और लक्ष्मी दो शक्तियां सर्वोपरी प्रमुख है "श्री प्रेमाधिष्ठात्री" शक्ति तथा "लक्ष्मी" ऐश्वर्याधिष्ठात्री शक्ति है इन उभयविध शक्तियों मे प्रेमाधिष्ठात्री शक्ति का ही प्राधान्य है।

"श्री" अर्थात श्रीराधा "लक्ष्मी" अर्थात पद्मालया लक्ष्मी। इन में श्री कृष्णा–ह्लादीनी प्रेमाधिष्ठात्री शक्ति "श्री निकुञ्जेश्वरी रसेश्वरी सर्वेश्वरी श्री राधा है"।

श्री कृष्ण महाभाव के अधीन है महाभाव स्वरूपा श्री राधा जी है अतः श्री कृष्ण राधा जी के अधीन है। पराभक्ति के समस्त भावुक जनों को उज्ज्वल रस प्राप्त करने के लिए महाभाव स्वरूपा श्री राधा जी के कृपा कटाक्ष पर निर्भर रहना होता है। वही प्रेम मार्ग की अधिष्ठात्री है और प्रेमा भक्ति दिलाने वाली है। परम श्री कृष्ण की कृपा प्राप्त करने के लिए परा श्री राधाजी की कृपा प्राप्त करने हेतु श्री राधा जी की उपासना रसिक समुदाय में प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इसी क्रम में श्री राधाजी का स्तवन अनुष्टुप छन्द में "श्री राधा शतक" द्वारा आचार्य श्री के माघुर्य भाव से निष्पन्न हुआ है। इस के अन्त में हिन्दी के दस दोहें भी है। **"श्री राधा राधना"** इस ग्रन्थ में संस्कृत के अनुष्टुप छन्द के ५१ पद्य हिन्दी के ५१ दोहें व २५ गीती पद है

"युगल गीति शतकम्" इस ग्रन्थ में श्री वृन्दावन धाम श्री यमुना जी श्री गिरीराज, गो मुरली व श्री राधे श्याम की वृज व कुञ्ज केली का चित्रण तथा मनोयोग पर्वूक श्री सर्वेश्वर की अभ्यर्थना है। यह शतक माधुर्य रस की श्रेष्ठ कृति है।

"श्री राधा-माधव शतकम्" पं. श्री गोविन्ददास "सन्त" ने दो शब्द में लिखा है– "श्री राधा माधव शतक" श्यामा–श्याम की अन्तरङ्ग.(निकुञ्ज) रहस्यमयी लीला (रसोपासना) से ओत–प्रोत है। इस में श्लोको के पूर्वार्द्ध में श्री निकुञ्ज की रस लीलाओ का बर्णन है और उत्तरार्द्ध में "राधा माधवमाराध्यं भजेदवृन्दावनाधिपम्" ऐसापाठ सभी श्लोको में है।

आचार्य श्री ने ग्रन्थ के आमुख में इस ग्रन्थ की विषय वस्तु के बारे में लिखा है "श्री राधा माधव की निकुञ्ज रस परक परम रसमय ललित

लीलाओं का चिन्तन एवं उनके लोकोत्तर अनन्त अचिन्त्य रूप माधुर्य लावण्यादि दिव्य गुणो का सूत्रात्मक अनुसंधान एवं प्रख्यापन करने की चेष्टा की है। "इस तरह यह शतक भी (निकुञ्ज) रस भावोपासना की वैजयन्ती माला है। **"श्री सर्वेश्वर शतकम्"** यह ग्रन्थ भी श्री सर्वेश्वर युगल किशोर श्याम–श्यामा की निकुञ्ज लीलारस के मनस चिन्तन के भाव विहार से निष्पन्न है। भगवद् लीला का महिमाय परमानन्द परक चित्रण इस ग्रन्थ में है। ग्रन्थ के अन्तर्निहित विषय के बारे में आचार्य श्री ने स्वकीय भावाभिव्यक्ति में लिखा हैं "श्री सर्वेश्वर शतक में श्री सर्वेश्वर प्रभू के माहात्म्य का उनके वृजभावपरक एवं निकुञ्ज रस बोधक कतिपय प्रसंगों का अति संक्षिप्त परिवर्णन हुआ है।"

"श्रीराधासर्वेश्वरालोक" यह ग्रन्थ " श्री राधा सर्वेश्वर प्रभू की ललित लीलाओं को प्रकाशित करने वाली अनुपम रचना है।

प्रकाशन सेवा प्रदान करने वाले "श्री कल्याण प्रसाद जी अग्रवाल सूतवाले जयपुर के पुत्र श्री घनश्याम दास अग्रवाल ने अपनी भावोभिव्यक्ति में श्रीराधासर्वेश्वरालोक को अत्यन्त हृदयग्राही बताया है। और इसमें सम्मिलित संस्कृत के १७ पद्य हिन्दी की सुमधुर पद्यावली व दोहावली का उल्लेख किया है। निश्चय ही इस ग्रन्थ के श्लोक पद्यावली व दोहें श्री युगल किशोर के स्वरूप वैभव का हृदयाकर्षक महिमा गान कर रहे है।

"भारत-भारती वैभवम्" इस ग्रन्थ में मातृभूमि भारत, मानवीय संस्कृति व सभ्यता का ज्ञान कराने वाली, भाषाओं में प्राचीन देववाणी संस्कृत (भारती) तथा भारत जन की आस्था समरसता व अवलम्बन के तीन आधार गीता, गंगा व गाय की गुण गरिमा का वर्णन श्लोक व पद्यों में किया गया है। शास्त्र सम्मत दिशा निर्देश कराने वाले उदगीथ वचन भी है। इस ग्रन्थ का विमोचन राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने किया था।

इन संस्कृत भाषा के पद्य–गद्य ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार्य श्री द्वारा विरचित हिन्दी भाषा के ग्रन्थ भी हैं। हिन्दी के "सर्वेश्वरसुधाबिन्दु" "श्री राधासर्वेश्वर मंजरी", पदावलियां व "भारत कल्पतरू", "छात्र विवेक दर्शन", "विवेक वल्ली" "भारत वीर गौरव" दोहावलियां हैं।

अध्याय–3

आचार्य–स्तव

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं
ज्ञानस्वरूपं निजभाव युक्तम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं
श्रीमीद्गुरूंनित्यमहं स्मरामि।।

भक्ति उपासना की अधिकार प्राप्ति, संसारिक दावानल के उपचार व मुक्ति के लिए तथा भगवद्प्राप्ति हेतु भक्ति भावानन्दपूर्ण, भगवद् आनन्द प्रदान करने वाले, प्रसन्नमन, समदृष्टि, ज्ञानस्वरूप, ज्ञानभाव युक्त क्लेश–कर्मादि भव रोग के उपचार में सक्षम भक्तयोगी आचार्य की शरण में जाना चाहिये व उनका नित्य स्मरण करना चाहिए। पूर्वोक्त श्लोक, गुरू की योग्यता–क्षमता, महिमा व उपादेयता स्मरण व नमन है। गुरू की सर्वोपरियता समस्त वैदिक संप्रदाय मे सार्वभौम रूप से प्रचलित है। श्रुति स्मृति ग्रन्थ व आर्ष महापुरूष वचन व वाणी ग्रंथों मे आचार्य गुरू, पूर्वाचार्य चरणों की सर्वोपरि महिमा कही है।

"सनन्दनाद्यैमुनिभिस्तथोक्तं श्री नारदायाखिल तत्त्व साक्षिणे"। श्री निम्बार्क नें वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी के छठे श्लोक मे श्री नारदादि तत्त्व

दर्शी आचार्य चरणों का अनुगमन पूर्वक स्मृति करते हुए अज्ञानान्धकार से निवृति के लिए जीव मात्र को भगवद् उपासना का मन्तव्य प्रदान किया है।

आचार्य श्री भट्टदेव ने श्रीमदनगोपाल की शरणागतिप्रदाता गुरू व गुरू प्रदत्त हरिनाम को बताया है। श्री युगल शतक के पहले ही पद में श्री गुरू को धन्यवाद ज्ञापन पूर्वक स्मरण करते हुए कहा है– ''धनि गुरू जिन हरि नाम सुनायो।।'' गुरू से प्रथम नाम दीक्षा लेकर ही प्राणी भगवद् भजन व भक्ति का अधिकारी होता है आचार्य श्री हरिव्यास देव ने कहा है–''बिन अधिकार कोन तहा चढी है।'' बिना अधिकारी हुए भक्ति मारग पर कौन चढ सकता है। अतः इन्होंने भी इस संबंध में कहा ''सतगुरू के मारग पग धारे, हरि सतगुरू बिच भेद न पारे।।'' स्वामी श्री परसराम देव ने भी गुरू के संबंध में कहा

परसा श्री गुरू सुमिरिये जिन दीनू हरि नाम।
जिन जड़ ते चेतन कर्‌या हूं गुरू की बली जाऊं।।
गुरू गोविंद निवास है गुरू देवन को देव।
ता गुरू अपने परसरा मन दे करये सेव।।

मायासक्त जड़ बुद्धि को ज्ञान चेतना प्रदान करने वाले गुरू देव ही है हरि नाम देकर श्री गुरू ने ज्ञान चेतना का दीप जलाया। इस दीप को सदैव हरि व गुरू का स्मरण रूपी घृत सींचते हुए प्रज्ज्वलित रखना शिष्य का कर्तव्य है। श्री गुरूहृदय में गोविंद का निवास है और गोविंद समस्त देवों के अधिष्ठाता है अतः गुरू देवो के देव भी है तथा हरि और गुरू में कोई अंतर नही है।

"श्री निम्बार्कस्तवार्चनम् ग्रन्थ के प्रारंभिक लेख में श्री गोविंद दास जी ''संत'' ने लिखा है – आचार्य मां विजानीयात्'' इस भगवद्वाक्यानुसार आचार्य भी भगवत्तुल्य ही माने गये हैं– अतः भगवान की भाँति ही आचार्यों का भी स्तोत्रों द्वारा गुण गान करना अनिवार्य है।''

आचार्य श्री ने यूँ तो समस्त ग्रन्थों के प्रारंभ में ही पूर्वाचार्य चरणों का संस्तवन, स्मरण किया है किंतु भगवत्वत् गुरू निष्ठापूर्वक स्वतंत्र स्तव भी रचे हैं।

श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् ग्रन्थ में आठ स्तव व हिंदी के लगभग आरती संकीर्तन सहित २० पद है। श्री स्तवरत्नाञ्जलिः में श्रीमदगुरूस्तवनम सहित ग्यारह स्तव पूर्वाचार्य चरणों के हैं। श्री परशुराम स्तवावली ग्रंथ में स्वामी श्री परसराम देव के तीन स्तव व आरती है।

श्री हंसं च सनत्कुमार प्रभृतीन् वीणाधरनारदं
निम्बादित्यगुरूं च द्वादश गुरून श्री श्रीनिवासादिकान्।
वंदे सुंदरभट्टदेशिक मुखान् वस्विन्दुसख्यायुतान्
श्री व्यासाद्धरिममध्यगाच्य परतः सर्वान् गुरून् सादरम्।।

यह निम्बार्क सम्प्रदाय में प्रचलित गुरू वंदना है। श्री हंस भगवान नारायण–श्रीकृष्ण का ही, भक्ति उपासना प्रदान करने हेतु गुरूरूप में प्रकाट्य है। इन्होंने श्री ब्रह्माजी के मानस पुत्र श्री सनक सनन्दन, सनातन सनतकुमार आदि परमऋषियों को भक्ति उपासना व ज्ञान प्रदान किया। श्री सनत्कुमारजी ने देवर्षि नारद जी को भक्ति उपासना की दीक्षा प्रदान की व देवर्षि नारदजी ने महर्षि निम्बादित्य को भक्ति उपासना की दीक्षा व परम्परा से चले आ रहे उपास्य श्री सर्वेश्वर का विग्रह प्रदान किया इस तरह श्री निम्बार्क के देवर्षि नारद श्री सनत्कुमार श्री हंसादि पूर्वोचार्य है जिसका उल्लेख श्री निम्बार्क ने वेदांत दशश्लोकी के ६ठें श्लोक में किया है। आचार्य श्री के स्तवों में यह उल्लेख है–

विश्वाधारं सुदरं शुभ्रवर्णं
योगीन्द्रैर्ध्येयं सदा ब्रह्मपुत्रैः
सर्वार्थार्थ सर्वदं सर्ववन्द्यं
वंदे नित्यं माधवं हंस रूपम्।।२।।श्री ह.(श्री स्त.र.)

परमऋर्षि के आराध्य श्री हंसरूप भगवान माधव की यहाँ वंदना की गई है। और आगे कहा है

येन श्रेष्ठः श्रौतगोपालमन्त्रः
सृष्टयादौ संश्रावितो मंत्र राजः।
लोकाचार्येभ्यो विधेः सत्सुतेभ्यो।
वन्दे तं श्री माधवं हंसरूपम्।।३।। वही

जिन श्री हंस भगवान ने सृष्टि के प्रारंभ मे ब्रह्मा के पुत्र सनकादिकों को वेदोक्त मंत्रराज गोपाल मंत्र का उपदेश किया।

येनादौ सर्वेश्वरः स्वीयरूपः
शालग्रामश्च्क्रवान्सम्प्रदत्तः।
पुत्रेभ्य श्रीमद्विधेः सूक्ष्म दिव्यो
वन्दे तं श्रीमाधवं हंसरूपम।।४।। वही

उन्हीं भगवान श्री हंस ने ब्रह्मपुत्र सनकादिको को सूक्ष्म–दिव्य निजप्रभा युक्त श्री सर्वेश्वर शालिगराम भगवान प्रदान किये।

यही "श्री सर्वेश्वर शालिगराम" परंपरागत रूप से निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रधान पीठाचार्य द्वारा सेव्य है और अभी प्रधान पीठाचार्य निम्बार्क तीर्थ अजमेर के आचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के यहां ईष्ट विग्रह के रूप में विराजमान है।

सान्द्रानन्दाब्धौ रतान्चारूचित्तान्
सर्वाराध्यान्हंस शिष्यान्रसज्ञान्।
श्रील श्रीसर्वेश्वरध्यान लीनान्
लोकाचार्यान्नौमि तान्ब्रह्मबालान्।।६!!वही

हंस भगवान से दीक्षित होकर सनकादि कुमार श्री राधा सर्वेश्वर के ध्यान में संलग्न हो आनन्द सागर में निमग्न रहने लगे। रस मर्मज्ञ उदार मनवाले इन ब्रह्मकुमारों ने भूलोक के कल्याण हेतु, अध्यात्म भक्ति व ज्ञान

प्रदान कर लोकाचार्य का सम्मान प्राप्त किया। श्रुति पुराणों में सनकादिक देवर्षि नारद जी की भक्ति धर्म ज्ञान संबंधी शिक्षा स्थान स्थान पर विशद रूप से है। जो इन के लोकाचार्य होने का द्योतक है।

संसेव्यं वीणाधरं वेदवेद्यं
राधागोविंदे रतं तालहस्तम्।
निम्बार्काचार्यप्रभोः सदगुरूं तं
देवर्षिश्रीनारदं नौमिनित्यं।।७!! वही

वीणा करतालधारी श्री राधा गोविंद के ध्यान संकीर्तन में संलग्न देवर्षि नारद, श्रीसनकादि कुमार के शिष्य व श्री निम्बादित्य के गुरू है। इस श्लोक में देवर्षि नारद को प्रणाम निवेदन किया गया है।

श्रीमद्भागवत् में हंस द्वारा सनकादि कुमार को दिया उपदेश उल्लेखित है व छादोग्य उपनिषद् में सनत कुमार द्वारा देवर्षि नारद को दिया उपदेश है। भक्ति सूत्रानुसार "वृज गोपियों के भावानुरूप" माधुर्य रस प्रवृत भक्ति को देवर्षि नारद से श्री निम्बार्क ने ग्रहण किया।

श्री निम्बार्काचार्य ने माधुर्य–रस भावप्रवण भगवद्भक्ति को "विशेष प्रेंम लक्षणा" भक्ति के रूप में समृद्ध किया और श्री राधा–कृष्ण युगलस्वरूप को ईष्ट रूप में विशिष्ठ रूप से निर्दिष्ट किया। भ्रान्त व लुप्त होते वेदांत मत का सार गर्भित व्याख्यान कर यथार्थ धर्म, उपासना व ज्ञान का प्रकाश किया अतः यह सम्प्रदाय श्री निम्बार्काचार्य के नाम से विख्यात हुआ।

आचार्य श्री के श्री स्तवरत्नाञ्जली में श्री निम्बार्काष्टकम् श्री निम्बार्क महिमाष्टकम् श्री निम्बार्क पंचश्लोकी श्री निम्बार्क चतुश्लोकी श्री निम्बार्कस्तवराज ये पांच स्तव है व श्री निम्बार्कस्तवार्चनम में श्री निम्बार्क चतुश्लोकी श्री निम्बार्काराधनाष्टकम श्री निम्बार्कगुणाष्टकम श्री निम्बार्क स्वरूपाष्टकम श्री निम्बार्कभजनाष्टकम श्री निम्बार्कविंशति स्तोत्रम ये छः स्तव है। इन सब स्तवों में श्री निम्बार्कभगवान के जीवन, स्वरूप, व्यतित्त्व कृतित्त्व व महिमा का परिवर्णन है।

हरेः सुदर्शनाऽऽख्यात चक्रावतारसुन्दरं।४। श्रीनि. स्तवराज

श्री निम्बार्काचार्य श्री हरि के सुदर्शन चक्र के अवतार है। "श्री निम्बार्काचार्य रूपेण भूमौ प्रकटितं कलौ"। १०। (वही) श्री सुदर्शन कलयुग में श्री निम्बार्काचार्य के रूप में भूमि पर प्रकट हुऐ। "तैलङ्ग भारत देशे जातं वैदुर्य पत्तने।"११। (वही) ब्राह्मण कुल में आपने जीवन ग्रहण किया। "वेदांतदेशिकं देवं मुनीन्द्रमरूणात्मजम् ।१६ वही।

अरूण नन्दी (५ श्री. नि. अष्टकम्) "जयन्ती नन्दनं भव्य नियमानन्द सुन्दरं" (१३ श्री नि.स्त.) श्री दिव्य भव्य स्वरूप प्रभा वाले (श्री नियमानन्द निम्बार्क) माता जयन्ती व पिता अरूण के पुत्र का **अति सुंदर नियमानन्द नाम रखा गया था।**

व्रजे गोवर्धने रम्ये निम्बग्रामे विराजितम्। (१४ वही)

सुरम्य श्री गोवर्धन की तलहटी में स्थित निम्बग्राम में विराजमान है। श्री निम्बार्काचार्य अपने जन्म स्थान से श्री गोवर्धन स्थित निम्बग्राम में आकर तप साधना करने लगे थे। "निशायां वेधसे निम्ब पादेऽर्क प्रदर्शकम्। (१५ वही) श्री ब्रह्माजी श्री सुदर्शन के अवतारी तप प्रभाव की परीक्षा हेतु सूर्यास्त समय निम्बग्राम सन्यासी रूप मे आये। भोजन पान की अभ्यर्थना को सूर्यास्त बाद भोजन न पाने का व्रत बताते हुए मना किया तो श्री सुदर्शन अवतार नियमानन्द ने नीम के पृष्ठ भाग मे सूर्य का प्रभा प्रकाश अपने तप बल से उत्पन्न कर दिया व यति को सूर्य के दर्शन करा कर भोजन पान कराया। "सुदर्शन महाबाहो सूर्यकोटिः समप्रभः" के प्रभावानुसार अवतार अवसर पर भी अपना प्रभा प्रकाश प्रदर्शित किया। तब यति स्वरूप श्री ब्रह्माजी ने इन्हें यथानामगुणअवतार "श्री निम्बार्क" नाम प्रदान किया।

देवर्षि नारदजी से आपने श्री गोपाल मंत्र की दीक्षा ग्रहण की थी–देवर्षिनारदात्प्राप्त गोपल मंत्र शेखरम् (३ वही) "गोपाल मंत्र राजस्य, समाराधन तत्परम्। (२३ वही) श्री गोपाल मंत्र राज आराधना में संलग्न है।

"सर्वेश्वरार्चने व्यस्तं" श्री सर्वेश्वर प्रभु की आराधना से सर्वदा मग्न है।

''धाम्नि वृंदावने कुञ्जे, युग्मलीलाकलाविदम् (२५ वही)

राधाकृष्णा ङ्घ्रिपद्मीन्त-लीनमानसमुज्ज्वलम् (२६ वही)

श्री निम्बार्क श्री राधाकृष्ण की भक्ति में लीनमन व प्रिया–प्रियतम की निकुञ्ज धाम लीलाओं के विज्ञाता तथा दर्शक रहे।

''वेदांतकामधेनोश्र्च प्रणेतारं हरिप्रियम्। (१७ वही)

श्रुतीनां ब्रह्मसूत्राणां, भाष्यकारं मनोरमम् (१८ वही)

गीतावाक्यार्थ कारञ्च (१६ वही)

श्री निम्बार्क वेदांत–कामधेनु–दशश्लोकी प्रणेता, उपनिषद् व ब्रह्मसूत्र के व्याख्याता तथा गीता वाक्यार्थ कर्ता है।

'श्रौतधर्म विरूद्धानां कृते प्रचण्डमायुधम् (२० वही)

कुतर्क खण्डन दक्ष वैदिक धर्म के प्रतिकूल व्यवहार करने वालों के लिए अर्थात् अधर्मियो कें प्रचण्ड आयुध हैं व कुतर्क खण्डन मे दक्ष है।

''श्रौतं स्वाभाविक द्वैता-द्वैतमत प्रवर्तकम् (५)

समस्ता ऽऽगम सिद्वांत द्वैताद्वैत प्रचारकम् (३ नि.चतु.)

"वेदान्त–गीता कृत दिव्यभाष्यै, स्वाभाविकं भिन्ना–भिन्न रूपम। (६ श्री नि.महि.) वेद मूलक स्वाभाविक द्वेता द्वेत भिन्ना–भिन्न या भेद अभेद सिद्वांत के प्रवृतक व प्रचारक। "परमाचार्यनिम्बार्क, संप्रदाय प्रवर्तकम्" (१ श्री नि.चतु.) श्री निम्बार्क परमाचार्य व संप्रदाय के प्रवर्तक हैं।

नवमेघघनावलि-द्युतिं

नवरक्ताब्ज विशाल लोचनम्।

नवकुञ्ज-रसावलोकनं

प्रणुमो निम्बरविं महामुनिम्।। (३ नि.पञ्च.)

''नव मेघनिभं नवनीत हृदं

''भज निम्ब रवि नितरां मनसा।। (२ श्री नि.गुणं)

''कमनीयकंच कमलाक्षमहो (४ वही)

'नवमेघ कान्तिम् (१ श्री नि.स्व.)

नव मेघमाला के समान कमनीय कांति वाले हैं कमल के समान प्रफुल्लित सुंदर नेत्र हैं मनोहर श्यामल अलकावली है।

सद्धयानमुद्रा ऽऽ सन शोभमानं
मंदस्मितं पङ्क़जचारूनेत्रम्।
नवाऽभ्रमाला सुमनोज्ञरूपं
निम्बार्क रूपं प्रभजामि नित्यम् ।।(८ श्री नि.भज.)

नवीन मेघ मालावत जिन की मनोहर अंग कांति है। मंद हास्ययुक्त मुख व कमल समान नेत्र हैं ऐसे श्री निम्बार्क ध्यान मुद्रा में अतीव सुशोभित हैं।

शांत गभीरं करूणाऽऽद्रचित्तं
विशालभालं लसदब्ज मालम्।
श्री शंख चक्रांङ्कित मंजु बाहुं
निंबार्करूपं प्रभजामि नित्यम् ।। (५ वही)
पीताभगोपीशुभ चन्दनेनाऽऽना
लिप्तोर्ध्वपुण्ड् सुवृहल्ललाटम्।
संलग्नवृदातरूदारूमालं
निम्बर्करूपं प्रभजामि नित्यम्।।६।।

गोपी चंदन से उर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण किये हुए विशाल भाल वाले व ग्रीवा में तुलसी कण्ठी धारण किये भ्रू मध्य भाल पर श्याम बिंदु से शोभित कमनीय रेशमी पीताम्बर धारण किये श्री निम्बार्क भगवान का सुंदर स्वरूप श्रृंगार का यहां वर्णन किया गया है। "शांत–स्वभावं शुभकर्मशीलं शास्त्रार्थ

कर्त्तारमनन्तशौर्यम्। विशाल भाल परमं ललामं निम्बार्क सूर्य सततं स्मरामि"।।७।। (७ श्री नि.स्व.)

करूण–चित्त शांत स्वभाव शुभ कर्मशील, शास्त्रार्थ में कुशल असीम प्रभावशाली, शास्त्रानुकूल ज्ञान भक्ति सदाचार के प्रेरक, वेदविधान गो विप्र भक्तजन देवालय आदि संस्कृति की रक्षा परायण वेद–विद्या के अक्षयकोश रूप श्री निम्बार्क भगवान की अतुल महिमा है।

इस तरह आचार्य श्री द्वारा प्रणीत स्तवों में जगदगुरू भगवान श्री निम्बार्काचार्य का तन्मयतापूर्वक संस्तवन हुआ है। निरंतर इन स्तवों के गान करने से दिव्य भावानन्द का अनुभव होता हे।

जगदगुरू श्री निम्बार्क भगवान के पट्ट शिष्य श्री निवासाचार्यजी आदि द्वादश आचार्य है द्वादश आचार्य के बाद अष्टादश भटट्ाचार्य व श्री भटट् से देवाचार्य, आचार्य परम्परा में है। श्री निवासाचार्य श्री केशवकाश्मीरि भट्टाचार्य श्री भट्देवाचार्य श्री हरिव्यास देवाचार्य श्री परसराम देवाचार्य व श्री बालकृष्ण देवाचार्य पर आचार्य श्री के द्वारा प्रणीत स्तव है।

निम्बार्क-भाष्यार्थ विशिष्टरूप
भाष्यप्रणेता समुदारचित्तः।
श्रुत्यर्थ-सार-प्रतिपादकश्च
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः।।२।।श्री मन्निवासाचार्यष्टक

श्री पाञ्चजन्य शंख के अवतार जगदगुरू श्री निम्बार्काचार्य के प्रधान शिष्य व्याख्याताओं में पूज्य वेदांत के निम्बार्क कृत भाष्य को "वेदांत कौस्तुभ" भाष्यार्थ प्रदान करने वाले उदारचित्त शान्त स्वभाव विचार–मग्न, सौम्य–गंभीर और सोदंर्य–सुधा–समुद्र श्रीराधा–कृष्ण की भक्ति में संलग्न व भक्ति कों प्रशस्त करने वाले श्री निवासाचार्यजी की महिमा का बड़ा ही मनोहर स्तव है।

श्री केशवकाश्मीरिभट्टाचार्य जी श्रुति ज्ञान विज्ञान में दक्ष व राधा कृष्ण भक्ति के रसज्ञ ''नारदपञ्चरात्र'' आदि तन्त्रविद्या के सिद्ध तथा ''क्रम दीपिका'' आदि तन्त्र ग्रन्थ के प्रणीता है। इन्होंने मथुरा मे एक म्लेच्छ के महाकष्टकारी तन्त्र प्रयोग को नष्ट कर दुष्ट का संहार किया। अतः स्तव में कहा है–

व्रजे भानुजायाश्च विश्रामकूले
महाम्लेच्छतन्त्रस्य संहारकारम्।
अमीयप्रभावं तमानंद रूपं
भजे केशवाचार्यकाश्मीरिभट्टम्।।४।। (श्री के पञ्च)

इन्होंने पुराणा वेदार्थ शास्त्रार्थ में विश्वविजय की थी और स्वराष्ट्र जन कल्याण में सदा संलग्न रहे थे अतः स्तव में कहा है–

पुराणार्थ वेदांत शास्त्रार्थ दक्षं
वरं विश्वजेतारमाचार्यवर्यम्।
स्वराष्टाऽऽर्त कल्याणसम्बद्धदक्षं
भजे केशवाचार्यकाश्मीरिभट्टम् ।।५।। (वही)

श्री भट्टदेवाचार्यजी श्री केशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी के शिष्य व श्री हरिव्यास देवाचार्य जी के गुरू हैं। श्री भट्ट रससिद्ध महात्मा थे और यहां यमुना तटीय वृंदावन में ही निवास करते हुए श्री श्यामा–श्याम की सेवा में संलग्न रहते थे। श्री भट्ट युगल विहारी श्री श्यामा–श्याम की नित्य नवायमान निकुञ्ज लीला का दर्शन पान करते रहते थे। आप द्वारा प्रणीत युगल किशोर विहारी–विहारिणी की विग्रह सेवा व नित्यनवनिकुंज लीलाओं की सेवा–दर्शन सिद्ध रचना "युगल शतक" है। जो ब्रज भाषा में भक्तिपरक प्रथम रचना होने से "आदिवाणी" कहलाती है। इस सुयश को प्रस्तुत किया है आचार्य श्री ने श्री भट्टदेवाचार्य महिमाष्टकम् में।

श्रुत्यर्थ-सार निचयं निदधौ स्व शास्त्रे
श्री युग्मपूर्ण शतके रस पुञ्ज पूर्णे।
तच्छ्रीयुतं रसिक शेखर शेखरेशं
श्री भट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि।।५।।(श्रीभट्ट.म.)

श्री हरिव्यास देवाचार्यजी की महिमा बडी अमोध है वे मध्ययुग में भक्ति को शिखर पर पहुँचाने वाले आचार्य है। इन्होंने संस्कृत व बृजभाषा में काव्य रचनायें की। इनकी "श्री महावाणी" रसोपासना की विशिष्ट काव्यकृति है। श्री हरिव्यास देव ने धर्म व संस्कृति पर आई विपदाओं के निवारण का, भक्तिभाव व वैष्णवी आचार विचार को ही प्रभावकारी अवलम्बन माना। भक्ति से स्वभाविक जनकल्याण व धर्म–संस्कृति की रक्षा हो जाती है। हरिव्यास देव के कई पारंगत शिष्य थे। इन्होंने जाति व वर्ण का विचार छोड़कर कई गावों में उपदेश दिये। आप के मुख्य शिष्यो के बाहर द्वारे है, श्री हरि व्यासदेव कई सिद्धियों से सम्पन्न सिद्धयोगि परमदर्शी व कृपालु थे आपने भक्तिधारा का एक आंदोलन खड़ा किया।

आचार्य श्री ने श्रीव्यास पर "श्री हरिव्यास षोडशी" स्तव की रचना की है।

महावाणी प्रणेतारं देव्यै दीक्षा प्रदायकम्।" (६)
वैष्णवधर्मरक्षार्थं ब्रंभ्रम्यमाणमुद्यतम। (१४)
वेदांतकामधेनुनोश्च, भाष्यकारं तपः परम्।
श्री हरव्यास देवाचार्य वन्दे श्रीमंजगद्गुरूम् ।।१५।।

श्री परसराम देवाचार्य श्री हरिव्यास देवाचार्य के पट्ट शिष्य है। श्री परसराम देव परम तपस्वी सिद्धयोगी और हरिभक्त है। गुरू आज्ञा से श्री परसरामदेव श्री पुष्कर क्षेत्र आये और ज्यादातर यहीं रहे। आपके समय से ही श्री निम्बार्क की प्रधान पीठ पुष्कर क्षैत्र निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद में स्थापित हुई। आप तपस्वी थे और नित्य प्रति धूणी तापते थे आप के धूणी

आसन का स्थान आज भी प्रधान पीठ सलेमाबाद में दर्शनीय है। आप के कई प्रभावकारी चमत्कार प्रसिद्ध है। भक्तिमति मीरांबाई आपही की शिष्या थी। श्री परसराम देव काव्यकार थे आप का "परसराम सागर" ग्रंथ है तथा आप की प्रसिद्धि जन-जन मे व्याप्त थी आपके कई दोहे जनमानस में सार्थक रूप से प्रचलित हैं। कई जगह आप की स्मृति में द्वारे व मंदिर भी बने हुए हैं। आचार्य श्री द्वारा इन पर स्वतंत्र ग्रन्थ "श्री परशुराम स्तवावली" है। इस में तीन स्तव तथा एक चतुश्लोकी की रचना है।

होमादिकर्मणि सदाऽभिरतं सुधीशं
मंत्रप्रभाव हततांत्रिकचक्रवातम्।
वाणीमनोज्ञरचना परमप्रवीणं
वंदे सदा परशुराममहंवरेण्यम्।।५।।

होम कर्म में निरत मंत्रराज तप प्रभाव से तामसिक तांत्रिक प्रभाव को नष्ट करने वाले वाणी ग्रंन्थ "परशुराम सागर" के रचनाकर्ता श्री परशुराम देव को वंदना समर्पित की गई।

महाभाव सिद्ध महात्माओं का तप व कृपा प्रभाव कभी निस्तेज नहीं होता। इन की भक्तजनों पर स्वैच्छिक या स्मरण प्रार्थना पर स्वभावतः ही कृपादृष्टि हो जाती है। स्वामी श्री परसुराम देव सिद्ध महात्मा हैं, जो आज भी तपस्थली पर व अन्यत्र अपनी कृपा बरसाते हैं। स्तव में कहा है--

"अनन्तसिद्धिसम्पन्नं भावुकानन्दवर्द्धनम्।"(४)"श्री परशुराम दे.स्तो."
कल्पपादपसद्रूपं श्रुतिसिद्धान्त दर्शकम्। (५)वही
येन भक्तिमती मीरा विधिना तं प्रदीक्षिता। (१०)वही
प्रत्यक्षं सिद्धिदं दिव्यं देवाचार्यं दयाकरम्।
परशुरामाचार्यं वंदेनित्यं जगद्गुरूम्।।४।।

अनन्त श्री विभूषित श्री बालकृष्ण शरण देवाचार्य स्तवरचनाकार आचार्य श्री के दीक्षा गुरू हैं। श्रीमदगुरूस्तव में अतीव महनीय संस्तवन है।

श्री निम्बार्क संप्रदाय की उपासना को अग्रसर करने वाले निम्बार्क के पीठाधिपति वेदसूत्र पुराण गीता आदि सभी शास्त्रों के कुशल प्रवचक विद्वानों द्वारा सेव्य मंत्रराज जप व राधा–माधव की सेवा में निरंतर तत्पर, अधिकांश वृंदावन वास करने वाले रासलीला रहस्य के ज्ञाता, भक्तों को अर्थसिद्धि का वर प्रदान करने वाले सरल स्वभाव सर्वप्रिय आचार्य श्री बालकृष्ण देव का सुन्दर स्तवार्चन है । आप भगवान सूर्य का निर्निमेष दृष्टि से नियमित दर्शन करते थे।

सर्वार्थ सिद्धिवरदं सरलं शरण्यं
सर्वप्रियसरस शांतिमयं मनोज्ञम्।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृंद सेव्यं।
श्रीबालकृष्ण शरणं गुरूवर्य्यमीडे।।६।।श्री मद्गुरूस्तवः

अध्याय–4

श्री राधा–माधव रूप–गुण–तत्त्व

यहां आचार्य श्री के प्रमुख ग्रन्थों में से पहले श्री राधा जी के फिर श्री कृष्ण के फिर श्री राधा कृष्ण के तत्त्व रूप और गुण महिमा उल्लेख का संग्रह कर फिर उस पर विचार करेंगें।

यहां हमने आचार्य श्री के प्रमुख ग्रन्थों में श्री राधा माधव (श्री कृष्ण) के तत्त्व, गुण महात्म्य प्रभावादि रुप लावण्य, श्रृगांर, चरित्र व विशेष रुप से निम्बार्कसम्प्रदाय के विधेय निकुञ्ज लीला चरित्र महत्व की सारगर्भित अभिव्यक्तियों को संग्रहित किया है। इन्हें सम्मिलित रुप से ग्रन्थानुसार उतारा है चाहें तो इन का सन्दर्भ अनुसार संग्रह भी किया जा सकता है। राधा व कृष्ण के अलग–अलग व राधा–कृष्ण युगल के संयुक्त, ग्रन्थाभिव्य क्तिनुसार यहां महत्त्व प्रदर्शन किया गया है।

राधा और कृष्ण अलग–अलग प्रभा होते हुए भी परस्पर संलिप्त है। इनकी तत्त्व, कृति, वृति और लीला संयुक्त प्रभा का संयोजन है ऐसे ही जैसे दूध दही व घी एक ही अधिष्ठान के तीन परिवर्तन तो हो सकतें हैं किन्तु इन में निहित शक्ति सामर्थ्य को पृथक–पृथक नहीं किया जा सकता वैसे ही रसेश्वर श्री कृष्ण व रसेश्वरी श्री राधा को पृथक–पृथक नही किया जा सकता। जहां भी और जितनी भी परातत्त्व शक्ति विद्यमान है वहां यह

दोनों है अर्थात यह पूर्ण स्वरूप सर्वव्याप्त है, अपने ऐश्वर्य पूर्ण स्वरूप में भी है और रूप लीला चरित्र में भी है।

संग्रह देखने से सारा तथ्य स्पष्ट हो जाता है। श्रुति–स्मृतियों में व वैष्णव ग्रन्थ विशेषतः निम्बार्कसम्प्रदाय के ग्रन्थों में राधा–कृष्ण का वैभव अभिव्यक्त है अचार्य श्री के ग्रन्थानुरुप हम यहां राधा कृष्ण के पृथक–पृथक सम्मिलित प्रमुख तत्त्व गुण प्रभावों पर विचार करते हैं।

श्री राधा रुप-गुण तत्त्व– प्रेमाधिष्ठात्र शक्तिञ्च (२६)

श्री राधा शतक से – पीयूषरसवर्षिणीम् (२६)

पूर्णा–पूर्णातमां राधां (२६) मञ्जुलाभां(२६) रसाऽऽधारां(२६) रासरस प्रदायनीयम्(२६) कृष्णा ह्लादिनी(२) रसदां(२) दिव्यां(६) रसमयीं(७) श्यांमा(७) परमानन्द निर्झरां(७) श्री कृष्णवामाङ्.विज्ञातां(७–४८) दिव्यामृत रसाऽऽधारां(६) रसाधिपांम्(११) परात्परतरां राधां(११) अनन्तानन्त रश्मिभिदिव्याभां(१७) हे श्याम सुन्दर रटन्तीमेवामाक्रन्दं स्वान्ते(२०) रसिकवल्लभां(२६) कारूव्यादिगुणाऽऽपूर्णा(३०) दिव्यमाचरन्तीं(४१) अद्भुतां(४१) यत्र यत्र सदा कृष्ण तत्र तत्र च राधिका(४५) स्वतिमस्तु(४६) श्रेयस्करी(४६) प्रियाराधां(३०) कृष्णचन्द्र प्रियां(३१)(७६) नित्यलीलारतांराधां(३१) निखिलागम संगीताम्(३६) रसेश्वरीं(४८) श्री (४८) सर्वदाऽऽनन्दसन्दोह(५०) फलप्रदाम्(५०) अनुग्रकरीं(५०) श्री कृष्णवल्लभां(५२) हर्षितांहरिणाऽऽलोकितामेवं(५३) यत्प्रभा जगतः सृष्टि–स्थिति–लयादि जायते(७६) सच्चिन्मये महादिव्य सुषमा शोभिते शुभे(७८) प्रेमानन्द महासिन्धु(७६) रस धारा अवगाहने(७६) रसेश्वरः सदा तृप्तस्तत्प्रियां(७६) विधीशेन्द्रादिभि नित्यचिन्त्यमानां(८४) मुनीन्द्र योगीन्द्रै र्गीयमानाञ्च(८५) श्री कृष्णानन्द दायिनिम्(८६)(८१) प्रेमाधिष्ठातृ रूपाञ्च(८६) कारूण्य–समधिष्ठानां(८६) अनुपमां पराविद्यां(६१) रसिके रस कौविदैः सम्प्रार्थितां(६४) संसृति तीव्र संताप वारिणीं(६५) भक्तै रा राध्यां(६८) कालव्याल महाव्रातो यत्प्रभया विलीयते(६६) महाबाधा हरां नित्यं(६६) प्रगायन्ति

सुराधिपाः(६७) करूणामयीम्(६५) असीमरसपीयूषसिन्धुरूपां(६८) सुखावहाम्(६८) कृपाकरीं(८६) करूणार्णवम (१७) कृपा संवर्षिणीं(१७) श्री राधां मधुरां दिव्यां(१८) पश्चन्तीं प्रिय लावण्यं(१६) स्वर्ण सिंहासने स्थिताम्(१२)(२८) दिव्य सुरभि सञ्चारां(२२) अपरिमेय रूपां(२३) कृपामयीं(३०) अहैतुक कृपा करीं(४१) करूणा पुर्णा(४१) सुधारूपां(४३) **श्री राधा-राधना सेः-** श्रीयुतां(१) कृष्ण वल्लभां(१) वृदावन रसाऽऽधारां(१) निकुञ्जे केलीतत्परां(१) श्रीकृष्ण वन्दिताम्(२) दिव्य सौभगाम्(२) सुभगां गौरवर्णाङ्गीं(३) सुकमनीयशोभाऽऽढ्यां(३) सौदर्य मार्दवे राधां(१५) कारूण्ये कोमलां राधां (१५) दिव्यलावण्यसम्पन्नां (१७) कोटि राकेश लावण्यां(४०) सखी चामर सेविताम्(२८) कोटीन्दु सौभगां (२८) सखीवृन्दैः समीडिताम् (२६) लास्य दक्षाञ्च राधिकाम्(४१) यौगियति महाप्राज्ञैर्वन्दिताम्(४२) प्रपन्न भक्ति दां राधां(४३).

श्रीराधा शतक- कमनीयां(६) लोल कुण्डल सौभगाम्(४) मौक्तिक मालया रम्यां(४) शुभाऽऽनाम्(६) कौशेयवसनां(६) कदम्ब पुष्प हारेण(६) सर्वदासुस्मितां(८) समं सुशोभितां नित्यं(१) अष्टाऽऽलिभिः सदा सेव्यां(३) वृदाकानन कुञ्जस्थां(४) मञ्जुल कुञ्ज वीथीषु विहरन्तीं(३) कोकिल कीर कीर्तिताम्(५) सहचरी समाराध्यां (५–२१) निकुञ्ज केली संलग्नां(६) सखीभि र्नितरां स्सृतांम्(६) जल केली रतां(१०) कुञ्जलीलाकरीं नित्यं(११) अनन्तीकङ्करी सेव्यां(१२–६३–४७) मालायाऽतिवशोभिताम्(२२) कनक कुण्डलै रूच्यां नानाऽलङ्कार भुषिताम्(२३) अरूणोत्पल लोचनाम्(३०) अनत्त्ताऽचिन्त्य लावण्य(३४) सौशील्य सोम्यरूपाऽऽढ्यां(३४) दिव्यसुवाषिताम्(३६) महास्नि–ग्धां(३७) हेम कुण्डल दिव्याभां धारयन्तीं(३६) चारू चन्दन चर्चिताम्(४०) अलकृतां महारत्नैः(६३) सर्वदा शान्तिरूपाञ्च(४०) लीला मालोक्य हर्षितां(७५)

श्री स्तव रत्नाञ्जलीः श्री राधाष्टकम्- उपासनीयं शुक नारदाद्यैः(१) सञ्चिन्तनीयं व्रजगोपगोभिः(१) संसेवनीयं परितः सखिभिः(१) श्री माधवेनापि

सदाऽभिवंद्यं(२) सुकोमलं(२) रास रसाभिपूर्णम्(२) देदीप्यमानं(२) सततं निकुञ्जे(२) कृपार्णवं(३) सर्वसुखैक राशिम्(३) हृदि भासमानं(३) अनन्तं सौन्दर्य गुणैक कोषं(५) स्वाश्रयदान शीलं(७)

श्री वृष भानु सुताष्टकम्- रससारसिता(१) रसरासखीजनसंवलिता(१) रतिकोटिवरा(२) रसधामसुधा, रसदानपरा(२) अतिमञ्जुकेली कला कुशला(४) परिपूर्णता(४) सुषमागरिमा(४) करूणाऽमृत सिन्धु भरामधुरा(६) सहराधिकया प्रियया हरिणा(७) निहतस्मरसर्वशरा (कामदेव के बाणों को हतप्रभ करने वाली) सदावरदा(८)

श्री युगल स्तवविशतिः – श्री राधाष्टकम्- श्री कृष्णाऽऽराधितां(१) श्रीवन कुञ्ज 'राजिताम्(१) सौंदर्य सार सर्वस्वां(१) मधुरस्मिताम्(१) सखी–वृन्द–समाराध्यां(२) कालिन्दी–तीर–शोभिताम्(२) प्रेमसरोवरोद्भूतां(३) दिव्यसुखावहाम्(३) पराभक्ति प्रदां(३) पूर्णां(३) रासेश्वरीं(४) रसाऽऽधारां(४) रसिकै समुपासितां(४) विधि–रूद्रेन्द्र–सद्दैवैरन्विष्टामपि(५) दुर्लभाम्(५) किशोरीं(५) माधुर्याऽमृतसद्धारां(६) दिव्याऽऽनन्द प्रदाम्(६) श्रुति तन्त्रैः समुद्गीतां(६) तापापहारिणीम्(७) सुधा–कादम्बिनी रूपां(७) वृदावन महाशोभां(८) कृष्णं प्रियां(८) परां राधां(८)

श्री राधा रसाष्टकम्- रासलासिनीम्(१) रासेश्वरीम्(१) रासाऽधारां(१) रसमयीं(२) रसाऽगारं(२) रूचिरां(२) रूप सागरां(२) रत्नमाला धरां राधां(२) माधुर्य निर्झरां(२) रससुधा महाधारां(३) रासलास्यवरां(३) रति कोटिवरां(४) रासलीला करीं(४) श्रियम्(४) रविजातीर सञ्चारां(४) वरप्रदाम्(४) रसालां(५) रसजीवन जीवनाम्(५) राजीव नयनां(६) रासोल्लास प्रदायिनीम्(६) रणच्चरणनूपुराम्(७) राधारमण सम्मोहां(७)

श्री राधां प्रियाष्टकम्- नव केली तत्परां(१) कृष्ण–शुभवाम शोभितां(१) सरस सौभगाम्(१) ब्रह्मरूद्रसुर वृन्द वन्दिताम्(२) अदभूत अभिनव हर्षदां(२) लास्य

सोत्सुकाय(५) प्रेमाभक्तिसुलभां(७) कृपाकारीं(७) गौररूपमधुरां(८) मनोहरां(८) कृष्णकेशकलितां(८) सुखप्रदाम(८)

श्री युगलगीतिशतकम्- सर्वदा प्रेमबद्धा(३४) पद्मस्थिता(३५) शिरीष पुष्पादपि कोमलाड़ी(३७) महाभाव रूपे(४०) सौख्यसिन्धु(४२) रसदानजीवनौ(४२) नवराधां(४३) रासरससुधा–स्निऽधां(४६)

श्रीराधा रूप गुण तत्त्व- भगवान श्री कृष्ण सोलह कला पूर्ण परमेश्वर है अमूर्त रूप मे यही सर्व व्यापक सर्वनियन्ता अपने अंशी जीवात्मा के स्वामी महाविष्णु परम ब्रह्म पूर्ण पुरूष है। अपने अवतार विग्रह में यही महाविष्णु लीलाधीपति वृंदावन धाम के लीला पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण है।

आदि पुरूष परमेश्वर श्री कृष्ण की कई शक्तियां है जिनमें से श्री राधा, परमेश्वर श्रीकृष्ण की अभिन्न पराशक्ति है। आदि आचार्य श्री निम्बार्क ने श्री राधाष्टक स्तोत्र में कहा है–

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै नमस्तै नमस्तै मुकुन्द प्रियायै।

सदानन्दरूपे प्रसीद त्वमन्तः प्रकाशे स्फुरन्ती मुकुन्दैन सार्द्धम्।।१।।

हम यहां "श्रियै" से श्रेय अर्थात उत्तरायण सात्विक कर्म भक्ति मार्ग की स्वामनी व "परायै" से पराशक्ति का अभिप्राय ग्रहण करते है। मुण्ऽकोपनिषद में–द्वे विद्ये वेदितव्ये इति हस्म यब्द्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च। मु.१ ख.१ श्रुति ४ एक परा और दूसरी अपरा।यहीं अगली श्रुति में धर्म पुरूषार्थ प्रवृत चारों वेद शिक्षा कल्प निरूक्त छन्द ज्योतिष आदि को तो अपरा विद्या कहा है और "अथ परा यया तद् क्षरमधिगम्यते" (५) जिससे वह अविनाशी परमेश्वर जाना जाता है उसे परा विद्या कहा है। वेदान्त में विद्या को परम शक्ति स्वरूप माना गया है। विद्या–शक्ति परमेश्वर का तप है, भाव प्रवृत रस है। इस भाव प्रवृत रस स्फुरण से परमेश्वर सृष्टि का नियोजन, नियमन व कृपा पूर्वक जीव को मुक्ति प्रदान करते है।

सदाऽभिवंद्यं(२) सुकोमलं(२) रास रसाभिपूर्णम्(२) देदीप्यमानं(२) सततं निकुञ्जे(२) कृपार्णवं(३) सर्वसुखैक राशिम्(३) हृदि भासमानं(३) अनन्तं सौन्दर्य गुणैक कोषं(५) स्वाश्रयदान शीलं(७)

श्री वृष भानु सुताष्टकम्- रससारसिता(१) रसरासससखीजनसंवलिता(१) रतिकोटिवरा(२) रसधामसुधा, रसदानपरा(२) अतिमञ्जुकेली कला कुशला(४) परिपूर्णता(४) सुषमागरिमा(४) करूणाऽमृत सिन्धु भरामधुरा(६) सहराधिकया प्रियया हरिणा(७) निहतस्मरसर्वशरा (कामदेव के बाणों को हतप्रभ करने वाली) सदावरदा(८)

श्री युगल स्तवविशतिः – श्री राधाष्टकम्- श्री कृष्णाऽऽराधितां(१) श्रीवन कुञ्ज राजिताम्(१) सौंदर्य सार सर्वस्वां(१) मधुरस्मिताम्(१) सखी–वृन्द–समाराध्यां(२) कालिन्दी–तीर–शोभिताम्(२) प्रेमसरोवरोद्भूतां(३) दिव्यसुखावहाम्(३) पराभक्ति प्रदां(३) पूर्णां(३) रासेश्वरीं(४) रसाऽऽधारां(४) रसिकै समुपासितां(४) विधि–रूद्रेन्द्र–सद्दैवैरन्विष्टामपि(५) दुर्लभाम्(५) किशोरीं(५) माधुर्याऽमृतसद्धारां(६) दिव्याऽऽनन्द प्रदाम्(६) श्रुति तन्त्रैः समुद्गीतां(६) तापापहारिणीम्(७) सुधा–कादम्बिनी रूपां(७) वृदावन महाशोभां(८) कृष्णं प्रियां(८) परां राधां(८)

श्री राधा रसाष्टकम्- रासलासिनीम्(१) रासेश्वरीम्(१) रासाऽधारां(१) रसमयीं(२) रसाऽगारं(२) रूचिरां(२) रूप सागरां(२) रत्नमाला धरां राधां(२) माधुर्य निर्झरां(२) रससुधा महाधारां(३) रासलास्यवरां(३) रति कोटिवरां(४) रासलीला करीं(४) श्रियम्(४) रविजातीर सञ्चारां(४) वरप्रदाम्(४) रसालां(५) रसजीवन जीवनाम्(५) राजीव नयनां(६) रासोल्लास प्रदायिनीम्(६) रणच्चरणनूपुराम्(७) राधारमण सम्मोहां(७)

श्री राधां प्रियाष्टकम्- नव केली तत्परां(१) कृष्ण–शुभवाम शोभितां(१) सरस सौभगाम्(१) ब्रह्मरूद्रसुर वृन्द वन्दिताम्(२) अद्भूत अभिनव हर्षदां(२) लास्य

सोत्सुकाय(५) प्रेमाभक्तिसुलभां(७) कृपाकारीं(७) गौररूपमधुरां(८) मनोहरां(८) कृष्णकेशकलितां(८) सुखप्रदाम(८)

श्री युगलगीतिशतकम्- सर्वदा प्रेमबद्धा(३४) पद्मस्थिता(३५) शिरीष पुष्पादपि कोमलाङ़्गी(३७) महाभाव रूपे(४०) सौख्यसिन्धु(४२) रसदानजीवनौ(४२) नवराधां(४३) रासरससुधा–स्निऽधां(४६)

श्रीराधा रूप गुण तत्त्व- भगवान श्री कृष्ण सोलह कला पूर्ण परमेश्वर है अमूर्त रूप मे यही सर्व व्यापक सर्वनियन्ता अपने अंशी जीवात्मा के स्वामी महाविष्णु परम ब्रह्म पूर्ण पुरूष है। अपने अवतार विग्रह में यही महाविष्णु लीलाधीपति वृंदावन धाम के लीला पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण है।

आदि पुरूष परमेश्वर श्री कृष्ण की कई शक्तियां है जिनमें से श्री राधा, परमेश्वर श्रीकृष्ण की अभिन्न पराशक्ति है। आदि आचार्य श्री निम्बार्क ने श्री राधाष्टक स्तोत्र में कहा है–

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै नमस्तै नमस्तै मुकुन्द प्रियायै।
सदानन्दरूपे प्रसीद त्वमन्तः प्रकाशे स्फुरन्ती मुकुन्दैन सार्द्धम्।।१।।

हम यहां "श्रियै" से श्रेय अर्थात उत्तरायण सात्विक कर्म भक्ति मार्ग की स्वामनी व ''परायै'' से पराशक्ति का अभिप्राय ग्रहण करते है। मुण्ऽकोपनिषद में–द्वे विद्ये वेदितव्ये इति हस्म यब्द्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च। मु.१ ख.१ श्रुति ४ एक परा और दूसरी अपरा।यहीं अगली श्रुति में धर्म पुरूषार्थ प्रवृत चारों वेद शिक्षा कल्प निरूक्त छन्द ज्योतिष आदि को तो अपरा विद्या कहा है और "अथ परा यया तद् क्षरमधिगम्यते" (५) जिससे वह अविनाशी परमेश्वर जाना जाता है उसे परा विद्या कहा है। वेदान्त में विद्या को परम शक्ति स्वरूप माना गया है। विद्या–शक्ति परमेश्वर का तप है, भाव प्रवृत रस है। इस भाव प्रवृत रस स्फुरण से परमेश्वर सृष्टि का नियोजन, नियमन व कृपा पूर्वक जीव को मुक्ति प्रदान करते है।

आचार्य श्री ने "श्री राधा शतक" के आमुख लेख में इन दो शक्तियों के बारे में लिखा है– "दो शक्ति है–श्री श्चते लक्ष्मीश्च पन्त्यों" अर्थात श्री और लक्ष्मी ये दो शक्तियां सर्वोपरी प्रमुख है। श्री प्रेमाधिष्ठात्री शक्ति तथा लक्ष्मी एश्वर्याधिष्ठात्री शक्ति है।"

जो निर्मल निर्विकार सृजन, सौजन्य व अभ्युदय कारक शक्ति तत्त्व है यह सब पराश्री राधा तत्त्व है। इस तरह परा शक्ति के अध्ययन हेतु तीन रूप हो सकते है–

परमप्रभु सर्वेश्वर रसेश्वर भगवान की सनातन रूप से संयुक्त निर्मल अमल अमूर्त रस शक्ति। जिससे जगत सृष्टि स्थिति लय आदि होते है। आचार्य श्री ने कहा है–यत्प्रभा जगतः सृष्टि स्थिति लयादि जायते।"(रा.श. ७६). आनन्द भाव में निमग्न, महाभाव स्वरूप ह्लादीनी शक्ति इस के भी दो प्रकारान्तर हो सकते हैं– एक मूर्त एक अमूर्त, अमूर्त रूप में आनन्द कोष में प्रतिष्ठित रसाकर्षिक या आनन्द वर्धनी शक्ति व मूर्त रूप में श्रीकृष्ण के साथ लीला विहार करने वाली अनन्त सौंदर्य माधुर्य आदि गुण गौरव शाली श्रीकृष्ण भाव में निमग्न निकुञ्जेश्वरी श्री राधाजी। और तीसरी भगवद् भक्ति भाव और उत्तरायण अवलम्बियो को परम सुख प्रदान करने वाली रसेश्वरी श्री राधा।

श्रीराधा–कृष्ण तत्त्व बोध वाणी का विषय नहीं है यह राधा माधव की भक्ति–भाव धारण से प्रभू कृपा पूर्वक ही अनुभव में आ सकता। रसेश्वरी महाभाव आनन्द कोष को स्वामिनि है अतः माधुर्य भक्ति में श्री राधा की उपासन श्री कृष्ण भक्ति भाव प्राप्ति के लिए की जाती है श्री राधा की कृपा से ही भक्ति के सर्वोच्च परम प्रेम की प्राप्ति होती है।

प्रेमाधिष्ठातृशक्तिञ्च- श्री राधा जी प्रेम की अधिष्ठात्री शक्ति है। अपने आराध्य श्रद्धेय व ईश्वर में मनसा वाचा कर्मणा सदेव अनुरक्त रहना व सदैव निकट रहकर सेवा चर्या करते हुए व प्रभू लीला वैभव स्मरण सुख

की उत्कठ मनोवृति प्रेम नाम से भी कही जा सकती है। प्रेम में विषय राग स्वार्थ और आभिमान का सर्वथा अभाव होता है प्रेम में पूर्ण शरणागति ओर समर्पण होता है ओर जिससे प्रेम किया जाता है जिस को आराध्य व ईष्ट माना गया है वह सर्व समर्थ सर्वेश्वर तथा समस्त सामर्थ्य का स्वामी होता है। जगत के स्वामी सर्वेश्वर श्री कृष्ण आराध्य हैं इन श्रीकृष्ण के प्रेम अधिष्ठान की जो स्वामिनी है वे श्री राधा जी है। भावमय प्रेम अधिष्ठान के जितने वैभव है जितने आयाम है उस सब महिमा की आगार श्री राधा जी है।

पीयूषरस वर्षिणीम्- श्री राधाजी अमृत रस की वर्षा करने वाली है । वेद में रस तो स्वयं भगवान को कहा है वह रस अमृत रूप में सर्व व्याप्त है जगत के मृत रस में यह रसामृत लुप्त रहता है अतः साधक के मृत रस का प्रभाव अर्थात असत विकार या भाव विकार का आवरण नष्ट हो जाने पर अमृत रस वर्षा का अनुभव होता है। श्री राधा जी सदैव अमृत स्वरूपा है और अपने सामर्थ्य से साधको के अमृत भाव को समृद्ध करती रहती है। भक्त की परमानन्द भाव स्थिति में इस अमृत रस की वर्षा करती है यह अमृतानन्द विभिन्न भक्तों को विभिन्न रूपों में अनुभव होता है। जो प्रेम से भगवान श्री राधा–कृष्ण के स्मरण में संलग्न होता है उसे एक दिन अमृत रस वर्षा या भावानन्द की अनुभूति होती है। देखिये आचार्य श्री परसराम कहते है।

हरि अमृत रस प्रेम सो, पीवे जो इक तार।
परसा चढ़ें न उतरे , लगी रते खुमार।।

इसी अमृत रस वर्षा के बारे में इनकी शिष्या मीरा बाई ने कहा।

लागी मोहे रामखुमारी।
रीम झीम बरसे मेहड़ा, भिजे तन सारी हो।
चहुदिश चमके दामिनी. गरजे घन भारी हो।।

साधना पथ में गुरूगम्य बारिकीयां सम्भव होते हुऐ भी श्री राधा जी

के सम्बन्ध में इसी श्रेणी की अभिव्यक्तियां आचार्य श्री के ग्रन्थों में कई है–यथा–

"परमानन्द निर्झरां रसाऽऽधारां, रसदां, दिव्यामृतरसऽऽधारां, रसधामं सुधा, रस दान परां, पराभक्ति प्रदां रसागांर आदि।

गुरुगम्य भगवद् भक्ति परम्परा से सेवा स्मरण कीर्तन आदि भक्ति अवलम्बन पूर्वक जब भक्ति भाव प्रगाढ हो जाता है तब श्रीराधाजी के दिव्य स्वरूप आभा का दर्शन होता है। श्रीराधाजी की आभा सूर्य–चन्द्र आदि लौकिक प्रभा की भी आधार शक्ति है अतः इन जैसा ज्वलनशील ताप न होते हुए भी यह स्वयं–प्रभा इनसे सर्वथा विलक्षण व अमित है। आचार्य श्री के ग्रन्थों में कई जगह "मञ्जुलाभां, अनन्ताअनन्त रश्मिभि दिव्याभां, अपरिमेय रुपां, मधुरां–दिव्या, सुधा–रुपां, कोटीन्दु सौभगां, आदि और भक्तों के हृदय में यह भासमान होती है अतः– हृदि भासमानं" आदि कहा तथा अधिकांश स्तवों मे भावनामय प्रार्थना करी।

पूर्णं पूर्णतमां राधां– जैसे परम प्रभू को "ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं–" आदि सर्व रूपों में पूर्ण कहा गया है वैसे ही श्री राधा जी भगवान के "भारूपा" भावरूप रस की शक्ति होने के कारण भाव व रस की अधिष्ठात्र शक्ति है अतः भगवान के साथ एकीभाव हुई निर्मल चेतना पूर्वक मूर्त–अमूर्त रुप से उन्हीं के भावानुकूल वर्ताव कर रही है। अतः पूर्ण परमेश्वर के साथ श्री राधा जी पूर्णतमा है। आचार्य श्री के ग्रन्थों के "परातपरतमां राधां, परां, रसेश्वरीं आदि कथन श्री राधा की पूर्णता को ही व्यक्त कर रहे है।

ह्लादीनी व महाभाव रुपा– श्री हरिव्यास देवाचार्य जी द्वारा प्रसारित सांय कालीन संकीर्तन मे–"शक्त्या ह्लादीनी अति प्रियवादिनी उर उन्मादिनी श्री राधे।" प्रभू के प्रति जो उत्कठ सेवा विहार का प्रेम प्रवाह है वही ह्लादीनी भाव कहा जा सकता है मनस–चित्त के निर्मल हुए बिना अविछन्न भावानुराग व हार्दिक प्रेमाह्लाद नही हो सकता। प्रभू श्री कृष्ण के प्रति

अत्यन्त आसक्ति और प्रभू के प्रति प्रेमालाप अर्थात विरहाशक्ति, उन्मनीभाव को उत्पन्न करती है जो महाभाव की स्थिति है। श्री राधा जी मूर्त–अमूर्त दोनों रुप में सर्वदा परमप्रभू श्री कृष्ण के प्रेमानुराग से पूर्ण है। और उन्हीं के भावानुकूल सेवा विहार करती है। श्री राधा में जगत आसक्ति लेश मात्र नहीं है। सर्वथा निर्मल अनूकूल सेवा से भगवान श्री कृष्ण को अपनी और आकर्षित करती रहती है और स्वयं भगवान श्री कृष्ण को आह्वादित भी करती रहती है अतः यह श्री कृष्ण की ह्वादीनी शक्ति है और श्रीकृष्णभाव में अनुरक्त रहने मे महाभाव रुपा है। माया विकार रहित होने से जगविकारी आयु अवस्था परिवर्तन रहित सदैव नव नूतन है "नव–नवरंगी" "नव व्ययस्का" "श्यामा" "सुकोमला" "दिव्य" व "दिव्य लावण्यवती" है। यह दिव्यता प्रभू श्री कृष्ण को प्रिय होने से "श्री कृष्ण प्रिया" है।

भगवान ने हर्षित होकर इस जगत की रचना करी और निर्मल परा शक्ति द्वारा इस संसार मे चेतनप्रभा उत्पन्न की व अपरा शक्ति को जगत में व्याप्त कर यथायोग्य नियम से इस जगत का नियमन निश्चित किया। पराशक्ति व परमेश्वर जगत के अपराभाव से सर्वथा निर्लिप्त रहे। परमेश्वर व परा श्री का महारास निरन्तर चलता रहता है। यह निर्मल दिव्य परम चेतन रास नित्य–निकुञ्ज में होता है जहां श्री राधा–कृष्ण दिव्य चेतन जीव सखियों के साथ लीला विहार करते है। परमेश्वर श्री राधा कृष्ण सनातन है। इनकी नित्य निकुञ्ज लीला का दर्शन परमप्रेमभाव प्राप्त जीव को होता है।" प्रेम ड़ोरेण बद्धः "सर्वदा प्रेम बद्धा" "प्रेम भक्ति सुलभा" यह प्रेम भक्ति से सुलभ होते है।

भगवान श्री राधा–कृष्ण ने वृन्दावन में द्वापरान्त पर लीलावतार धारण किया। अवतार लीला में भी भगवान का दिव्यरुपगुणवैभव व लीला चरित्र व कृपा अनुग्रह ही प्रकट है। अवतार लीला में भगवान राधा–कृष्ण ने भावानन्द वर्धनी लीला का प्रत्यक्ष प्रभाव प्रस्तुत किया। लीला चरित्र में

श्री राधा जी व गोपियां विशुद्ध परमप्रेम लीलाचरित्र में ही सम्मिलित रही है। भगवान की लीला, स्वरूप, विग्रह, प्रभाव आदि कभी निस्तेज नही होते अतः यह लीला आज भी भक्तों को दर्शनानन्द का सुख प्रदान करती है।

आचार्य श्री के ग्रन्थों में निकुञ्जलीला श्री राधाजी के स्वरूप सौंदर्य, श्रृंगार, श्री कृष्ण सेवा, महाभाव, प्रेमानुराग व श्री राधा के कृपा प्रभाव का विशेष उल्लेख है जिसे हमने अलग संग्रहित कर दिया है। यथा–कमनीया, शुभाऽऽनना, कौशेयवसनां, सुस्मितां, दिव्य सुवाषितां, नानालङ्कार भूषिताम् अचिन्त्यलावण्यां, स्वर्ण सिंहासन स्थिताम, अपरिमेयरुपां, श्री कृष्णानन्द दायिनीम, कृष्णवल्लभां, श्री कृष्णयुता, श्री कृष्णवामाङ. शोभिताम, वृन्दावन कुञ्जस्थां, अष्टालिसदासेव्यां, सहचरी समाराध्यां, मञ्जुल कुञ्ज वीथीरविहरन्ति, दिव्य सोभगाम्, सुभगाम्, आदि व योगीयति महा प्राज्ञर्वंदिताम्, कारूण्यामयीम्, अहेतुक कृपाकरीं, कृपाकरीं गौररूप मधुरां, सुख प्रदाम, पराभक्ति प्रदाम् आदि अनन्त गुण महिमा है।

आचार्य श्री के ग्रन्थों में श्री राधा जी का निम्न आदर्श स्वरूप उपस्थित होता है–

१. सर्वेश्वर श्री कृष्ण के वामाङ. मे विराजत
२. सर्वेश्वर श्री कृष्ण के साथ मूर्त–अमूर्त लीला प्रभाव में संलग्न।
३. परम श्री कृष्ण की विष्शि‌ठ परा– ह्लादीनी शक्ति
४. अहैतूक विशुद्ध लीला स्वरूप, चरित्र व कृपा अनुग्रहकरी
५. सदैव श्री कृष्ण के प्रेमानुराग मे संलग्न महाभाव रूप
६. श्री कृष्ण के मनोभावानुकूल व्यवहार करने वाली
७. श्री कृष्ण नाम स्वरूप गुण लीला का स्मरण करने वाली
८. चित्त भूमि में सदैव श्री कृष्ण को धारण करने वाली नित्य नवउमंग व उत्साह से भगवान की सेवा करने वाली

९. नित्य निकुञ्ज में श्री कृष्ण के संग निरन्तर विहार सेवारत

१०. भगवद् भक्ति भाव को ग्रहण करने वाली

११. विशुद्ध भक्ति भाव को सम्बल प्रदान करने वाली व समृद्ध करने वाली

१२. परम प्रेमी गौपीजन भगवद् भक्तों की संरक्षक व अगुवा

१३. काम, क्रोध, मद मोह ममता राग द्वेष विषय भोग कामना अभिमान आदि विकारों के सर्वथा रहित तथा जो इन से रहित है उन जीवों को कृपापूर्वक श्रीकृष्णभक्ति प्रदान करने वाली।

१४. अपरिमेय सौंदर्य माधुर्य आदि गुणों से सम्पन्न

१५. परम प्रेमी भक्तों की आराध्य व भागवद्भक्तों को श्री कृष्ण चरणार्विन्द का आनन्द अनुराग–सुख प्रदान कराने वाली।

श्री कृष्ण-रूप-गुण-तत्त्व – श्री सर्वेश्वर शतक से – परातपतरं (६) ब्रह्म (६) रसशेखर (६) अच्युत (६) त्रिविध ताप हर्तारं (६) अम्दुतं (८) महिमा पूर्ण (८) सृष्टि बीजं (६) रसाऽर्णवम् (६) अचिन्त्यं (६) शाश्वतं (६) पूर्णं (६) प्रपन्नाऽऽर्तिप्रहर्तारं (१०) कृपाधाम (१०) दया करं (१०) सनातनं (१०) सेव्यमानं (१०) दिव्याऽनन्तगुणाऽम्भोधिं (१२) राधया राजितं कृष्णं (१३) प्रिया प्रियम (१४) कोटी ब्रह्माण्ड सवेशं (१६) गीता ज्ञानोपदेष्टारं (१६) चक्रराज कराम्बुजं (१६) गोक्षीरसारचौरञ्च (१७) धेनु रक्षण तत्परं (१८) सखी भिःसहशोभितम (१६) सचिन्मयें (२०) नित्यं सखीजनैः सेव्यं (२१) निकुञ्ज केली संलग्नं (२०) रसब्रह्म (२२) लिलारतं (२२) अनन्तवैभवं कृष्णं (२४) रसागार (३२) माधुर्यादिरसाधारं (४०) परमानन्द सन्दोहं (५८) (राधां कृष्णं) सुधा पूर्ण (६३) हृदाऽऽराध्यं (६४) रससिन्धु (६५) नारायणं (६६) परं ब्रह्मं (६६) गोपालं (६६) यशोदानन्दनं हरिं (६६) वासुदेवात्मजं (६६) देवकीनन्दनं (६७) सर्वान्तर्यामिणं (६७) दैत्यान्तकं (६८) महाविष्णुं (६८) बलरामानुजं (६८) प्रपन्नताप हर्तारं (६८) ऋषि मुनीश्वरै दैंवे योंगिभिः सततं

स्मृतम् (६६) श्रुति–सूत्र स्मृतिग्रन्थैः पुराणैः प्रतिपादितम् (७०) तन्त्रादिशास्त्र सम्पाद्यं (७०) कंस संहार कर्त्तारं (७१) पूतना मोक्ष दायकम् (७१) गो–गोप–गोपिकाऽऽधरं (७१) व्रजेशं कल्पवृक्षञ्च (७२) श्री गोवर्धन धारिणम् (७२) बलरामयुत कृष्णं (७२) सर्वेश्वरं (७२) दैत्य विर्मदने दक्षं (७३) तृणा वर्तान्तकं (७३) हरिम् (७३) प्रपन्न क्लेश हर्त्तारं (७३) अनुकम्पा करं (७४) भक्तस्वान्ते प्रतिष्ठितम् (७४) सर्वात्मानञ्च (७४) सर्वज्ञं (७४) समस्त देव देवेशं (७५) श्री धरं (७६) श्री युतं (७६) कृष्णं श्यामल (७६) सुमनोहरं (७६) कन्दर्प मोहनं (७६) वन्द्यं (७६) ब्रह्मविद्वेदविद्भिश्च धीरैरतितरां स्तुतम (७७) श्री श्याम सुन्दरं (७७) सर्वाधारं (७८) जगद्धेतुं (७८) सर्वकारण–कारणम् (७८) नित्यं (७८) क्षराक्षरातीतं (७८) भीष्माऽर्जुनोद्धवै भैक्तैः (७६) सर्वसिद्धान्त सिद्धान्तं (७६) द्वैताद्वैतात्मकं (८०) कोटीन्दु सुन्दरं (८०) विभुम् (८०) जगजन्मदिहेतुञ्च (८०) रसशेखरम् (८१) सच्चिन्मये (८२) कुञ्ज केलीरतं (८२) प्रियाध्यानरतं (८४) रसाधीशं (८८) रासरसमहासिन्धु (६५) अत्यद्भुतं (६६) कृपाधाम (६६) श्री पूर्ण पुरूषोत्तमम (६६) अखिलेशं (६७) महाधीशं (६७) श्री गोपीजन जीवनम् (६७) शुद्धं (६७) सनातंन (६७) मूलं (६७) भक्तवृन्देड्यं (६८) पूर्णं पूर्णतम (६६) नित्यं (६६) पूर्ण ब्रह्म (६६) वेद वेदान्त सिद्धान्तं (६६) श्री राधा मोहनं (१००) वृन्दावन विहारिणम् (१००) नवीन नीरद श्यामं (१००) ईशं ब्रह्मण्डभाण्डनां (१०१) प्रेरकं जगतः परम् (१०२) शाश्वतं परमाधारं (१०२) अभीष्ट सम्प्रदं (१०३) प्रत्यक्षं दर्शन दिव्यं (१०४) अभिवाञ्छित प्रदम् (१०४) सच्चिदानन्द रूपञ्च (१०४) शालग्राम स्वरूपिणम् (१०५) महारास रतं। (२७) रासलीला रतं नित्यं (३८) श्रीमन्मुकुन्द गोविन्दम्(४१)

व्रजन्तं यमुना कूले (११) व्रजन्तं राधया सार्द्धिं (१८) शिखिविछधरं कृष्णं (११) कोटी कदर्प लावण्यं (१२) तलसत्कनक कुण्डलं (१२) सौदर्य सागरं (१५) पीताम्बरधरं कृष्णं (५६),(२८) वेणु विभूषितं दिव्यं (२८) समुपास्यं सुधी जनैः (४४) ऋषिश्वरैः सदा सेव्यं (४४) नवनीत हरं (५७) देवं (५७)

वंशीकर सरोरूहम् (५७) नन्दनन्दनं (५८) राजीव लोचनं (५६) हार केयूरभूषितम् (५६) गोपिका प्राणं (५६) उर्ध्व पुण्ड्रेण राजन्तं (६०)

मन्त्रराजभावर्थ दीपिका-श्री मन्मुकुन्द शरणाष्टकम्– राधाप्रिया शोभित वाम भागम् (१) वैदिक मन्त्र गेयं (२) लावण्य–कारूण्य गुणैक धाम (३) नवाऽभ्ररूपं (३) नव वक्र केशम (३) पीताम्बराऽऽभानिकरैः सुमञ्जुं (३) मुरली मनोज्ञम् (५) कृपा सुधाऽगाध महा पयोधिं (६) वंशीरवाकर्षितं स्वालिवृन्दम्(८)

श्री गोपाल मन्त्र राजाष्टकम्– निकुञ्ज लीला रस सम्प्रदाय (२) मुनीन्द्र योगेन्द्र सभीडिताप (२) व्रजाङ्नाहृन्नलिनस्थिताम (३) वजस्थभक्तैः समुपा सिताय (३) प्रपन्नभक्तोधसमर्चिताय (३) निकुञ्जलीला रसवर्षकाय (४) निकुञ्ज रासस्थल हर्षिताय (४) निकुञ्ज सख्यावलि संस्तुय (४) दिव्य प्रभाधीबल दायकाम (५) स्वचार सदबोध सुधाप्रदाय (५) स्वानन्द को षाय (६) व्रजालियूथैरनुरञ्जिताय (७) राधाप्रियाहृत्कमले स्थिताय (८) क्लीं रूप कृष्णाय (८) सुखावहाय (८) गोविन्द रूपाय (८) गुणार्णवाय (८) स्वाहाऽस्तु गोपीजन वल्लभाय (८)

श्री माधव प्रपन्नाष्टकम्– नीवनीत चौर (३) गो–गोप–वृन्दपरिशोभित (३) पूर्णब्रह्मन (३) सौदर्य धाम (३) आनन्ददिव्य रससिन्धु सुधा भिषिक्तं (४) संसारबीज (५) सदाप्रपूज्य (५) आनन्दकोष (६) रसधाम (६) सर्वार्थ सिद्धिवरद (८)

श्री निम्बार्कगोपीजन वल्लभाष्टकम्– सौदर्य माधुर्य महार्णवाय (५) परात्परामा (६) वंशीस्वनेनाऽखिलमोहनाय (७) प्रपन्न सवाऽर्थ सदाप्रदाय (८)

श्री युगल स्वत विंशंति-श्रीकृष्णाष्टकम्– श्रीकृष्णमव्ययं (१) विभुं (१) क्षरा क्षरातीतं (१) हरिं (१) सर्वेश्वरं (१) श्री विहारिणम् (२) मुरली वादना सक्तं (३) श्री मुरली धरं (३) पंकजेक्षणम् (४) सौदर्यमन्दिरम् (५) अनन्तौदार्यसम्पन्नं (७) अच्युतम् (७) दीनबन्धुं (८) दयालयम (८) भक्तवत्सलं (८) पूर्णं (८) सनातनम् (८)

श्री सर्वेश्वराष्टकम्– सर्वेश्वरं (१) रससिन्धुं (२) कोटि मन्मथमन्मथम (२) अनन्तासीम सामर्थ्यं (२) मंङ्ड़.लं (५) सर्वमड़.ल सम्प्रदम् (५) अमड़.लहरं (५) दिव्यं (६) महामोदप्रदायकम् (६) हरिभक्तैः समाराध्यं (८)

श्री स्तवरत्नाञ्जलिः-श्री माधवाष्टकम्– रसहर्ष धरम (२) रससारसुधारमणं (३) (काम) स्मर कोटिकलाब्धिनिरासकरं (३) मणिहारधरं (६) शिखिपिच्छवरं (६) रस पूर्ण (७) सारघनं (७) नवमेघनिभं (८) नवकान्ति युतं (८) नवकञ्जमुखं (८) नित्यनवम् (८)

श्री व्रजराजसुताष्टकम्– वेणु धरम् (१) नवनीतहरः (३) नवकुण्डल कान्ति महारूचिरः (३) केलीकलाकुशलः (४) रसवारिधिदिव्य सुधाचषकै (७) व्रजरञ्जन गोप सखो (७)

श्री सर्वेश्वराष्टकम्– राधाह्रदयागारनिमज्जिताय (४) निकुञ्ज लीला रति वर्धकाय (४) गोवृद चर्यारत मानसाय (८) संसारदावानल मोचनाय (८)

श्री सर्वेश्वर प्रातः स्तव– कारूण्य सिन्धुं (१) सनकादिसेव्यं (१) देवर्षिवर्येण सदाऽभिवन्द्यम् (१) आचार्य निम्बार्क समर्चनीयं (१)

श्री कृष्ण-रूप-गुण-तत्त्व - भगवान श्री कृष्ण "सनातन" परम प्रभू परमेश्वर है आप मूर्त रूप में भी है और अमूर्त रूप में। आप के ही कृपा प्रभाव से सृष्टि का सृजन नियमन व परिवर्तन आदि आयाम सम्पन्न होते है आप एक प्रभू की कृपा से कई शक्तियां अपने–अपने क्षेत्रों मे प्रभावोंत्पादक बनी हुई है। श्री कृष्ण, महाविष्णु पूर्णब्रह्म और अनन्त महिमामय रसशेखर सर्वेश्वर है। भगवान विष्णु ने विभिन्न समय में कई लीला अवतार परशुराम, भगवानराम भगवानकृष्ण व भगवान कंल्की आदि कई रूप में लिए। सभी अवतारों में भगवान विष्णु का ही सम्पूर्ण स्वरूप होते हुऐ युगधर्म व भगवान की स्वेच्छा के अनुसार हर अवतार के दिव्यकलाप्रभाव में न्यूनाधिकता रही है । द्वापरान्त पर वृन्दावन, मथुरा मण्डल में लिया गया भगवान श्री कृष्ण अवतार ही ऐसा है जिस में भगवान विष्णु पूर्णसोलह कला प्रभाव से प्रकट

हुये। श्री कृष्ण अवतार में भगवान श्री व लक्ष्मी सहित समस्त व्यूह के साथ अवतरित हुऐ। आचार्य श्री ने अपने ग्रन्थों में श्री कृष्ण को "महाविष्णु" कहा है। आदि आचार्य निम्बार्क ने भी श्री कृष्ण को ''हरि'' अर्थात पूर्ण ''विष्णु'' माना है ''स्वभावतोऽपास्तसमस्त दोष–मशेष कल्याण गुणैक राशिम्। व्यूहाङ्गिन ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं ''हरि'' (वे. का. द.)

सृष्टि के सर्व कारण–कारण होन से "सृष्टि बीज" है। सृष्टि में अमूर्त रूप से सर्वत्र व्याप्त होने से "ब्रह्म" है। अछेद्धय अक्लेध्य अमेध्य आदि होकर "अव्यय" है सदा–सर्वदा रहने से "सनातन" और "शाश्वत" है। "पूर्ण" है "क्षराक्षरातीत" है सर्व कारण–कारण के मूलाधार होने से "मूल" है "सर्वाऽऽधार" है सर्वगुण निहित ''शक्तिऽऽधार" होने से "गुणैकधाम" है। समस्त ईश्वर प्रभा के नायक होने से "सर्वेश्वर" है। "रस" स्वरूप सर्व रसाऽऽधार "रससिन्धु" है। सृष्टिविकार रहित महाविष्णु श्रीकृष्ण दिव्यरस रूप है। सृष्टि रचना हेतु भावपन्न होकर यही सब में व्याप्त हुऐ समस्त गुण धर्म के आधार है समस्त आनन्द के श्रोत है। इन्हीं से सब सतत विकसित हो रहे है। यह (सर्वेश्वर) अमृत रस प्रभा है। जिसे वेदान्त में– "तदैव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवा मृत मुच्यते" (कठो २–३–१) कहा, परम प्रभू परा श्री राधा से संयुक्त होकर समस्त लोको को अमृतमय आश्रय प्रदान कर रहे। यही परम शुक्रं माया–शक्ति से प्रभावित जन को जगत की माया विषयक प्रवृतियां व आसक्ति सुख प्रदान कर रहे है व यही प्रभू परम भावापन्न–अनासक्त जन को अमृतानन्द प्रदान कर रहे है। जगत की आसक्ति व अनासक्ति वालों को उन सुकृतो के आनन्द का आधार होने के कारण इन्ही रस प्रभू के विषय मे वेदान्त श्रुति कहती है–"त दैत्त सुकृतम्। रसो वैःसः रसं ह्येवायं लब्धा ऽऽनन्दी भवति। तै. उ. २–७ समस्त आनन्द उन्ही से विकीर्ण हो रहे है अतः "आनन्द ब्रह्म" है। समस्त जगत के "रसऽऽधार" होने से "रसब्रह्म" है। उज्ज्वल भक्ति की और आकृष्ट होने से

व भक्ति भाव को अपनी ओर आकृष्ट करने के कारण "कृष्ण" और "रसिकब्रह्म" है। इस तरह आचार्य श्री के ग्रन्थों में आदि सनातन आनन्द–कन्द भगवान श्री कृष्ण "महाविष्णु" की कई अमूर्त–मूर्त महिमा का उल्लेख है–"यथा आनन्दकोष कृपाधाम, अचिन्त्यं, समस्त–देव देवेशं, सचिन्मयं, शुद्ध, प्रत्यक्ष दर्शन दिव्य, ईश–ब्रह्माण्ड भाण्डानां, कारूण्य समाधिष्ठान, सर्वज्ञ, कृपाधाम, जगद्धेतु, सौदर्य धाम, गोविन्द गोपाल, गुर्णाणवाय, अनन्तअसीम सामर्थ्य, विभु आदि

आचार्य श्री के ग्रन्थों में भगवान श्री कृष्ण के मूर्त रूप व अवतार लीला चरित्र विशेतः गोपीजन संग निकुञ्ज लीला का विशेष उल्लेख है। श्री कृष्ण जीवन लीला भी संक्षिप्त में व्यक्त है। यथा–नारायण, परम ब्रह्म, गोपालं यशोदा नन्दन, हरिंवासुदेवात्मजं, देवकी नन्दनं बलरामानुज, बलरामयुतं, नन्द नन्दनं दैत्यान्तकं, कससंहारकर्त्तारम् पूतनामोक्ष दायकं, तृर्णावर्तातकं, गोक्षी रसांश्चौरञ्च, नवनीत हरं, धेनुरक्षण तत्परं, गो गोप गोपिकाऽऽधारं, ब्रजेश कल्पवृक्षञ्च श्री गोवर्धनं धारिणं, कोटिन्दु सुन्दरं गीताज्ञानोपदेष्टारं, आदि व इसी तरह भगवान श्री कृष्ण के रूप लावण्य, कृपावैभव व निकुञ्ज लीला का वर्णन है यथा–लावण्य कारूण्य गुणैक धामं, नवाऽभ्ररूपं, नववक्र केश, मुरलीधरं, पीताम्बर धरं, नवीनीरदश्यामं, कुञ्जकेलीरतं, व्रजन्त राधयासार्द्धं, वेष्णु विभुषितं दिव्यं निकुञ्जसखीसंस्तुताम, निकुञ्ज रासस्थलहर्षिताप, शिखिपिछधरं, रासलीला रतं, प्रपन्ना ऽऽर्ति प्रहर्तारं, दयाकरं, दर्यार्णवं गोपीजन जीवनं आदि।

श्री राधा-कृष्ण-रूप-गुण-तत्त्व - श्रीराधामाधव शतकम् से– विधिशेन्द्रादिगीर्वाणै (१) ध्र्येयं (१) सेव्यमानं सखी जनैः (२) दिव्यं (५)(१०) वेणुनादकरं (५) हरिम (५) कोटिकन्दर्प दर्पध्नं (६) सौदर्याऽमृत सागरम् (६) मल्लिका मालया चारू चन्दन चर्चितम् (७) कारूण्यकोष मानन्द (६) रससिन्धुं (६) रसेश्वरम् (६) रासलीला धरं (१०) रसधाराऽवगाहिनम् (१०) अनन्ताऽनङ्.सौदर्य (११)

माधुर्य (११) मादर्वाऽधिपम् (११) उपास्यं रसिकै (१२) सेव्यं चाऽष्ट सखीजनैः (१२) अमन्दाऽऽनन्ददं (१४) देवं (१४) दीनबन्धु (१४) दयाकरम (१४) शरण्यं करूणापूर्ण (१५) पराभक्ति प्रदायकम् (१५) श्रीधामफलदं शिघ्रं (१३) कृपा धाम (१६) कला निधिम् (१६) असीम सौख्यदं (१७) शुद्धं (१७) निर्हैतुक कृपा कोषं (१८) अनन्त विश्वबीजञ्च (१६) विभुं (१६) वृन्दावनेश्वरं (१६) आदित्यतयातीरे विहरन्तं (२४) स्मिताऽऽननम् (२४) रसकेली कला दक्षं (२५) किङ्.रीजन वल्लभम् (२५) मणिमालालसत्कण्ठं (२६) हेमकुण्डलभूषितम् (२६) ब्रह्म (२७) वरेण्यं परमेश्वरं (२७) शान्तिकान्ति महासिन्धुं (२८) महालावण्य मन्दिरं (२८) मधुरं (२६) नृत्यन्तं रासमण्डले (३०) परात्परं (३१) रसब्रह्म (३१) रसबीज (८५) रसावहम् (३१) रससिन्धु (३२) रसाधारं (३२) रसरास रसायनम् (३३) लीला लास्यमहापटुम् (३४) अनन्ताऽऽनन्द सद्धाम (३५) धामगं धामवासिनम् (३५) वंशीवट तटे नित्यंरासलीलालसद्धरिम् (३६) नित्य लीला रसप्रदम् (३७) नित्यं रति प्रदातारं (३६) नृत्य केलि विलासकम् (३६) दिव्यातिदिव्यं (४०) अत्यन्तं (४०) माधुर्य धामं (४०) कदाचित् यमुनाकूले (४६) कदाचित्–कुञ्ज मन्दिरे (४३) महारासविधाकम् (४८) अत्य्‌द्भुतं (४६) कृपासिन्धु (४६) प्रपन्नोप्सित सम्प्रदम्(४६) नानाऽलङ्.ारवस्त्रैश्च भूषितं (५७) मुदितं प्रभुम् (४६) कौशयवसनै रूच्यं मालाया समलङ्.तम् (५८) स्वीय–करारविन्देन यच्छन्तम भयं सदा (६१) सच्चिदानन्द रूपञ्च (६५) दिव्य मङ्.ल विग्रहम् (६५) अनुग्रहात्मकं (६६) परं ब्रह्मं (६७) विश्व ब्रह्माण्ड नायकम् (६६) सद्भिः स्वान्ति समाराध्यं (६६) आराध्यं ब्रह्मविद्यया (६६) प्रेमक्षीरोदमाधुर्य (७०) सार सर्वस्वमीश्वरम् (७०) युग्मं भावयन्तं मिथो रसम् (७१) कोटि चन्द्र मुखं चारू (७२) अहैतुकी कृपा कारं (७३) दीन हीन हितावहम् (७३) चिन्तनीयं सदा स्वान्ते (७५) धारणीयं प्रतिक्षणम् (७५) दर्शनीयं व्रजे कुञ्जे (७६) स्पर्शनीयञ्च सर्वदा (७६) अचिन्त्यं (७७) निगमागम

सेवितम् (७७) प्राप्यं भक्ति रसाऽऽश्रितैः (७६) भिन्नाभिन्नात्मकं (८०) सनातनम् (८१) पूर्णं (८५) पूर्णतमं ब्रह्मं (८५) रसाललय (८५) अनन्ताऽचिन्त्य सद्धाम (८६) सद्रूपं (८६) कृपैकलभ्यमाधारं (६०) पराभक्तयाः परात्परम् (६०) नेत्राम्बुदिव्य धारांया निमग्नं भजतां सताम (६१) गुणावहं (६३) नाम संकीर्तन यत्र तिष्ठन्तं तत्र सर्वदा (६५) सतां स्वान्ते सदाशुद्धे शोभितं श्यामलं शुभम् (६७) नुपुरान्क्वणयन्तंनः (६८) केलिरससुधा वृष्टिकारं (६६) रसदान प्रदं प्रभुम् (१०१) रसदं हरेः (१०२)

श्रीस्तव रत्नाञ्जलिः-श्रीराधामाधवाष्टकम्– सर्वदाध्यानमृग्यः (१) कमल कुसुम कुञ्जे शोभितो युग्मरूपः (१) अतिशयकमनीयः (१) नवरसनिधि (२) रसिकसुजन चित्ते नित्यदा भासमानः (३) पूर्णकामः (३) केलीसिन्धुः (३) रासलीला विहारी (४) प्रणतजन कृपालु (४) भक्तिलभ्यो (५) दयालू (५) कोटिकन्दर्पहारी (५) भक्तभावैः सुबद्धः (६) सुखाब्धिः (६) भवाऽऽत्मा (७) श्री हरिर्भावगम्यः (८) सुभगमधुरधाम (८)

श्री राधाकृष्ण रुप गुण तत्व –

अनादि अनन्त परम तत्त्व, श्री कृष्ण है और पराशक्ति श्री राधा जी हैं। यह मूर्त स्वरूप में भी है और अमूर्त शक्ति रूप मे भी । मूर्त अमूर्त दोनों स्वरूप में इन की युति अपृथक रुप से है अर्थात यह दो स्वरूप मिल कर ही समस्त दिव्य रूप गुण तत्त्वों का प्रभाप्रकाश विकसित करते है। सृष्टि में जितनी परामृत शक्ति है उस में यह व्याप्त है परम तत्त्व रुप प्राणी हृदय में, उज्ज्वल परमप्रेम भाव रूप मन मे और भाव प्रवृत परमप्रभू के सेवाभक्ति कर्म में, आनन्दमय कोष मे व नित्य निकुञ्ज वृन्दावन धाम में, गोपीजनों व भक्तों के साथ आप विध्यमान है। परमश्रीकृष्ण, मायाशक्ति के साथ जगत की धर्म–अधर्म विषयक प्रकृतियों मे निर्लिप्तभाव से, नियन्ता व अधिष्ठान शक्ति होने से, विध्यमान है किन्तु विषय विकार से सर्वथा रहित होने से परा श्री राधा जी विषय विकार में नहीं है। अवतार लीला में भी श्री राधा, भगवान

श्री कृष्ण के परम प्रेम भावानुगत वृन्दावन निकुञ्ज महारास लीला चरित्र तक ही प्रत्यक्ष है। भगवान का लीला तेज कभी निष्प्रभ नही होता। अतः यह आज भी भक्तों के लिए लीला भाव में प्रत्यक्ष है। परामृतचेतन तत्त्व श्री राधा कृष्ण का रूप गुण लीला प्रभाव, निर्मल अमल परम प्रेम भावपन्न ह्रदय में, वृन्दावनस्थ निकुञ्ज में, आनन्द कन्द भगवान के गोलोकधाम, नित्य निकुञ्ज में, आदि से अन्त तक निरन्तर चल रहा है। और परम प्रेम भवापन्न भक्तों को अनुभव हो रहा है।

श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में पराभक्ति रूप में श्री राधानुगत महाभाव, परमप्रेम, उज्ज्वल आनन्द माधुर्य भाव की उपासना प्रवृत है। यह श्री हंस भगवान से श्री सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार व श्री सनत्कुमार से देवर्षि नारद व देवर्षि नारद से श्री महामुनि निम्बार्क तथा श्री निवासाचार्य व उत्तरोत्तर आचार्यपीठ परम्परा द्वारा जन समुदाय में अद्यावधि तक विद्यमान है। देवर्षि नारद व श्री निम्बार्काचार्य तो भगवान श्री कृष्ण अवतार के साक्षात द्रष्टा रहे है इन से पहले श्री राधा कृष्ण की गौलोक धामी आनन्द कोषीय निकुञ्ज लीला की शान्त भावोपासना प्रचलित थी। शान्त भावोपासना में प्रभू लीला स्वरूप का दर्शन महाभावानन्द सिद्ध भक्तों को समाधी में ही अनुभव होता है। भगवान श्री राधा कृष्ण के अवतार के बाद श्री निम्बार्काचार्य ने प्राचीन परम्परा के साथ भगवान वृंदावन लीलाचरित्रनिधि श्री राधाकृष्ण निकुञ्ज लीलाविहार को भी उपासना हेतु व्यक्त किया। अतः श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में ध्यान धारणा समाधि से शान्त भाव पूर्वक व स्मरण संकीर्तन, विग्रह सेवा पूजा व उत्सव आदि करते हुऐ उपासना करना यह दोनों स्थितियां विध्यमान है।

आचार्य श्री, श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाय के पीठाधीश आचार्य है इस सम्प्रदाय के कई पीठासीन आचार्य व अनुगत भक्तों ने युगल किशोर श्री राधा–कृष्ण की परमप्रेम सिद्ध उपासना की है। इन में से कईयों की वाणी रचनायें है।

श्री भट्ट श्री हरिव्यास देव व श्री परसराम देव का समकालीन व बाद के भक्त रचनाकरों पर गहरा प्रभाव है। आचार्य श्री की रचनाओं में भी इनका प्रभाव परिलक्षित होता है।

भगवान श्री राधाकृष्ण जब अवतार के बाद प्रत्यक्ष हो गये तो इस परम्परा की उपासना में अवतार लीला प्रभाव की प्रमुखता हो गई। भगवान के श्री विग्रह की सेवा, अवतारलीला कथा श्रवण–मनन उत्सव व अवतार स्वरूप का ध्यान स्मरण चिन्तन कीर्तन आदि विशेष रुप से गोपी भाव रखते हुऐ किये जाने लगे। आदि आचार्य निम्बार्क ने–जिन श्री कृष्ण के वामाङ्ग में श्रीवृषभानुजा राधा जी विराजित है उनकी उपासना करने का निर्देश दिया। भक्ति विरोधी कृत्यों से मुक्त रहकर शुद्ध परमप्रेम सें उत्तरमार्ग अवलम्बन पूर्वक, शुचिता से रहते हुऐं पराभक्ति में सलग्न रहने के उपदेश दिये। उपासना का लक्ष्य है परम पद की प्राप्ति। उपनिषद् कहती है–

यस्तु विज्ञानवान भवति समनस्कः सदा शुचिः।
स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद् भूयोन जायते।।(क.उ. १-३-८)

जिसने विज्ञान अर्थात समस्त संशय त्याग कर ईश्वर श्रद्धा रूप विवेक धारण किया है जो संयत चित्त है व पवित्र है वह जरा मरण मुक्त परम पद को प्राप्त करता है।

विज्ञान सारथियस्तु मनः प्रग्रहवान नरः।
सो ऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णों परमं पद।।(क.उ. १-३-६)

जिस मनुष्य मे संशय रहित, ईश्वर के प्रति श्रद्धा है तथा जो इस श्रद्धाधारण से अपने मनको विषय से रोककर कुशल सारथीवत ईश्वर भक्ति व सेवा कर्म में प्रवृत करता है वह संसार के पार होकर विष्णु के परम धाम को प्राप्त होता है।

श्री निम्बार्कसम्प्रदाय में श्री राधाकृष्ण उपासना से विष्णु के इस परम पद, गौलोक, नित्य निकुञ्ज धाम को प्राप्त करने का लक्ष्य बनाय हुआ है।

आचार्य श्री के ग्रन्थों में श्री राधाकृष्ण के परमपद नित्यनिकुञ्ज धाम का लीला विहार भाव पूर्ण हृदय से निष्पन्न हुआ है। श्री राधा–कृष्ण दो स्वरूप होकर भी एक ही है, "एक तत्त्व द्वै नाम" "कृष्ण रूप श्री राधिका राधा रूप श्री श्याम, दरसन का ये दोय है, है एक ही सुख धाम।"

एक रङ्ग. में रंगे दोऊ एक प्राण द्वै गात।
वदन विलोकत परस्पर छिन विछुरे न सुहात।।

"श्री महावाणी" में श्री हरिव्यास देवाचार्य का यह कथन है।

आचार्य श्री के ग्रन्थों से हमनें श्री राधाकृष्ण के पृथक पृथक व युगल तत्त्व रूप गुण प्रभाव महात्म्य का सार भूत संग्रह प्रदर्शित कर दिया है बाद में अपनी मति अनुरूप संक्षिप्त व्याख्यान भी कर दिया है अतः राधा कृष्ण के पृथक पृथक व्याख्यान में इनके युगल प्रभाव को जानना चाहिये। द्वै गात व लीला दर्शन का दो रूप होते हुऐ इनका दिव्यप्रभा महात्म्य व कृपाप्रभाव संलिप्त अर्थात् परस्पर ओत–प्रोत हैं। यहां कुछ का उल्लेख करते हैं–

सौदर्यमृतसागरं, सेव्यमानं सखीजनै, दिव्य, हरिम्, कोटि कदंर्प दर्पध्नं, सेव्याऽष्ट सखी जनै, निकुञ्ज केलीरतं, पराभक्ति प्रदायकम्, कला निधिम्, असीम सौख्यदं, श्री धाम फलदंशिध्रं, कृपाधाम, विभुं, रससिन्धुं, रसकेली कला दक्षं, दयाकरं, करूणा पूर्ण, रस ब्रह्म, परात्परं, लीला लास्य महापटुम, धामगं, धामवासिनम्, रासलीलारतं, रसरासरसायनम् रसदान परायणं, नित्यलीलारसप्रदम् अहैतुककृपाकारं, दीनहीन हितावहम्, दिव्य मंगल विग्रह आदि।

अध्याय– 5

श्री वृन्दावन वर्णन

वृंदावनं वनं दिव्यं चिद्धनं हरिमन्दिरम्।

अप्राकृतम् व्रजे नित्यं शोभितं भावयेऽनिशम्।।१।।वृ.सौ.

यहां जिस वृंदावन की भावना की गई है वह प्राकृत विकारों से रहित वनों में श्री हरिमन्दिर रूप दिव्यवन है जहां चिदानन्दधन हरि नित्य दिव्य लीला विलास करते हैं।

"वृन्दावन सौरभ" ग्रन्थ के आमुख लेख– भौमाभिन्न दिव्य वृन्दावन" में श्री वासुदेव शरण उपाध्याय जी ने लिखा है– प्राकृत रूप में वृन्दावन अस्मदादिको को दृष्टिगोचर है वही भौमवृन्दावन कहलाता है, जो अप्राकृत स्वरूप नित्यचिन्मय भगवत्कृपैकलभ्य अव्यक्त लीला धाम है, वही दिव्यवृन्दावन कहलाता है। जैसे मूर्त देह के भीतर अमूर्त अन्तः करणादि अभिन्न रूप से स्थित है उसी प्रकार भौमावृन्दावनान्तर्वर्ती दिव्य वृन्दावन की स्थिति है।

आचार्य श्री ने अपने आमुख लेख में लिखा है– गौलोकधाम अवस्थित श्रीवृन्दावनधाम इस धराधाम पर व्रजमण्डल में विद्यमान हैं। वे रसिकेश्वर श्री हरि इस भूतल पर सुशौभित श्री वृन्दावन में नित्य नव लीला

विलास करते हैं एवं सर्वोपरिधाम गौ लोक में भी इसी प्रकार अपने प्रपन्न परिकरों को रसास्वादन कराते है।"

हम इस से यह आशय ले सकते है कि धरा स्थिति वृन्दावन गौ लोक के दिव्य वृन्दावन के अनुरूप ही है यथा यमुना कुण्ड सरोवर गौ, पक्षि, वृक्ष, लता, गोप, गोपीजन अर्थात् जीव आदि। अन्तर इन में यही रहा कि धरा स्थित वृन्दावन के अन्तः निहित वृन्दावन में प्राकृत विकार नहीं है अतः सब कुछ दिव्य और भव्य है। "तद् विष्णो परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः" यह गौ लोक स्थित विष्णु का धाम निर्मल मनस चित्त् भावभक्ति से साधु जनों द्वारा देखा जाता है। धरा स्थित वृन्दावन के अन्तर्निहित दिव्य वृन्दावन तथा चिदानन्दधन श्रीराधाबिहारी का मलावरण से मुक्त भावुक भक्त ही प्रभूकृपा पूर्वक दर्शन कर पाते है।

आचार्य श्री कि रचनाओं में धराधाम स्थित वृन्दावन व अन्तर्निहित दिव्य वृन्दावन दोनों का समिश्रित भावमय सुषमा सौरभ है।

"राधाकृष्णप्रियालाल मञ्जुललीला रसस्थलम" (श्री वृ. सौ. ३.) में श्री राधा कृष्ण के मञ्जुललीला रसस्थल धराधाम स्थित वृन्दावन का भाव है तो "अनिर्वचनीयरूपञ्च युगलांऽघ्रिरसावहम्" (श्री वृ. सौ. ४.) में श्री युगल किशोर के अनिर्वचनीय रसानन्द को प्रदान करने वाले दिव्य वृन्दावन धाम का भाव है

अनन्तवैभवाऽन्वीतं युग्मलीलासुधानिधिम्।
वेद तन्त्र पुराणाद्यै र्गीतं वृन्दावनं भजे।।७।।वृ.सौ.

अनन्त वैभव सम्पन्न युगललीला सुधानिधि वृन्दावन का इतिहास, पुराणादि शास्त्र ग्रन्थों में प्रतिपादित है। (पूज्य पाद आचार्य श्री ने वृ. सौरभ के आमुख लेख पृष्ठ १०–११ में विस्तृत उल्लेख किया गया है) समराध्यं सुरश्रेष्ठै र्विधिशेन्द्रैरनारतम्। श्री वृ. सौ. २०

श्रीराधाकृष्ण का लीलाधाम श्री वृन्दावन ब्रह्मा–धरा–इन्द्रादि देवताओं द्वारा समाराधित क्यों है ? इस पर कहा है–"युग्मोपासनसंलग्नै" क्यों कि यह युगल हरि के उपासक है।

''वृहद्वृन्दावने मुख्य श्रीमद्वृन्दावनं वरम्''(वृ.सौ.१६)

वृहद वृन्दावन में तालवन आदि द्वादशवन और द्वादश उपवन आते हैं इन में यह मुख्य पूर्वोक्त पांच कोसी परिक्रमा वाला श्री वृंदावन श्री राधा–कृष्ण की मुख्य धाम भूमि है।

''स्थलपद्मै र्महादिव्यं पञ्चकोषपरिक्रमम्'' (वृ.सौ.२२)

यहां यह मुख्य श्री धाम के लिए कहा है- कमल के समान महादिव्य यह धाम स्थल पांच कोष की परिक्रमा का है। वैसे वृंदावन के सम्पूर्ण क्षेत्र को चोरासी कोषी परिक्रमा का माना जाता है।

''यमुना-वेष्टितं चारू यमुनाकूलसंस्थितम्।
यमुनाऽम्बुकणैः सिक्तं श्रीवनं हृदि भावये।।(श्री वृ.सौ.२)

कङ्कणाकार रूप से श्री वृन्दावन को यमुना जी ने आविष्ठित कर सुन्दर शोभा प्रदान कर रखी है। श्री वृन्दावन, यमुना के पावन तट पर स्थित है व यमुना जी के निर्मल जल से अभिषिक्त है।

श्री वृन्दावन का नाम वृन्दावन क्यों है ? इस उत्कठ निवास वाच्छा में इस का अभिप्राय निहित है–

''वृदाद्रुवृन्ददिव्याऽऽभा निकरैः समप्रकाशितम्।
तद्धरीतिमया हृद्यं वाञ्छामि श्री वनाधिपम्''।।(श्री वृ. सौ. ३२)

तुलसी के पावन पादप की दिव्य आभा से दैदीप्यमान व तुलसी की हरितरूप राशि से शौभायमान परमरम्य हृदयाकर्षक जो धाम है–वह वृन्दावन है। अर्थात् सघन रूप से यहां तुलसी वृक्ष होने से इसे वृन्दावन कहते है। श्रीवृन्दा से श्रीहरि को अतिप्रेम है श्रीवृन्दा व श्रीहरि अमल

भावानुरागी है अतः श्री वृन्दावन में श्री हरि का वास है। ऐसे पावन वृन्दावन के मंगल दर्शन व वास की आचार्य श्री ने उत्कण्ठा लक्षित की है।

श्यामा-श्यामप्रियालाल रासलीलाप्रियं स्थलम्।
कोटीन्दुधिकभाऽऽकर्ष पावनं श्रीवनं भजे।।(श्री वृ.सौ. ३३.)

श्री श्यामा श्याम प्रियालाल श्रीराधाकृष्ण विहारी की रासलीला विलास का प्रिय स्थल श्री वृन्दावन कोटि चन्द्रमा से भी अधिक आभाकर्षक है। युगल किशोर की रासलीला स्थल होने से यह वृन्दावन धाम जगत में पूजनीय हैं।

''वंशीवटाऽगम-प्रेष्ठं प्रियाप्रियप्रभान्वितम्'' ।(श्री वृ सौ. ३४)

जिस वृन्दावन के वंशीवट तरू के नीचे श्री बृजराज विहारी श्यामा–श्याम शोभायमान हैं ऐसा वृन्दावन रमणीय है।

कदम्ब-कदली-जम्बू तमालाऽऽम्रवटादिकैः।
विविधैस्तरूभी रम्यं, भजे वृन्दावनं मुहुः।।८।।(वही)

भजनीय वृन्दावन कदम्ब केला, जामुन तमाल आम वट आदि नाना विधि तरूवर से शोभायमान है।

यूथिका मालती कुन्द वासन्ती माल्लिकादिभिः
लताभिरभितो रम्यं श्रीमद्वृन्दावनं भजे।।६।।(वही)

जूही, मालती कुन्द मोगरा चमेली आदि विविध लताओं से शोभित वृन्दावन भजनीय है।

चारू सरोवरैः पूर्ण निर्मलाऽम्बुप्रपूरितः।
सुरत्नजटितैर्घट्टैः प्रभजे श्रीवनं सदा।।१०।।

नान मणि रत्न जटित, दर्शनीय सुन्दर घाटों वाले, निर्मल सुपावन जल से भरे पूरे, अनेक सुभग सरोवर यहां वृन्दावन में शोभित हैं।

रसाल-दाडिम-द्राक्षा-खर्जूर-वदरी फलैः।
नारङ्गीकदलीयुक्तै रूचिरं श्रीवनं भजे।।१६।।

श्री वृन्दावन आम, अंगूर, अनार, खजूर, बेर, सन्तरा, केला आदि फलों से परिपूर्ण है।

"मृदुदुर्वांकुरे रम्यं हरिताभं हरिप्रियम्"। (२१)

श्री वृन्दावन में कोमल दूबदलपुञ्ज की मुग्धकारी हरियाली फैली हुई है।

प्रावृड्काले प्रिये मासे श्रावणे धनगर्जिते।
भजेचाऽपि वनंरम्य वसन्त होलिकोत्सवे।।३८।।

यथा समय समस्त ऋतुओं के वैभव से सम्पन्न वर्षा ऋतु के समय आनन्दकारी श्रावण मास में श्याम घन के गम्भीर–गर्जन व वर्षा से सुशोभित होता है। ऋतुराज वसन्त व फाल्गुन मास के होली उत्सव में यहां रमणीयता रहती है।

गोभि र्गोपिभिराराध्यं श्रीमद्‌वृन्दावनं धनम्।
पूर्णं सनातनं नित्यं स्पृहामि विपिनाधिपम्।।४७।।

श्री वृन्दावन असंख्य गौ समूह व गोपालक यूथ से परिपूर्ण और नित्य सनातन है।

कुञ्जोपकुञ्जसान्द्रञ्य षड़पदैरभि गुञ्जितम्।
खग कलरवै र्हृद्यै र्गुञ्जियतं श्रीवनं भजे।।११।।

कुञ्ज उपकुञ्जों के समूहों मे उत्पन्न रमणीय, भ्रमर गुञ्जार व पक्षी समूह के सरस कलरव से श्री वृन्दावन गुञ्जायमान है।

कोकिला-सारिका-केकि-कीरादि सुभगैः खगैः।
गम्भीरं गुञ्जितं श्रीमद् वृन्दावनं विभावये।।१३।।

श्री धाम वृन्दावन कोयल मैना, तोता आदि पक्षीगणों के गम्भीर गुञ्जन से गुञ्जायमान है।

अनेक विधहर्म्यैश्च दर्शनीयं मनोहरम्।
कुञ्जसहचरीवृन्दैरर्चितं श्रीवनं भजे।।३१।।

नाना प्रकार के सेवा कुञ्ज, श्रृंगार कुञ्ज , भोजन, कुञ्ज महल आदि से परम शोभित हैं। यहां निकुञ्ज सहचरीगण सेवारत हैं।

श्री राधायाः समुत्कण्ठा-पालने नित्य तत्परम्।
अष्टाऽऽली परिसेव्यायाः श्रीमद् वृन्दावनं भजे।।३६।।

श्री रगंदेवी, सुदेवी–ललिता, विशाखादि अष्टसखी वृंद से सेवित श्रीकृष्णबल्लभ राधाप्रिया की दिव्य उत्कण्ठा के अनूरूप श्री वृन्दावन समस्त सेवा सामग्री प्रदान करने में तत्पर हैं।

निकुञ्जाऽष्टसखीभिश्च गीयमानं निरन्तरम्।
लोकोत्तरस्वरूपं तं विपिनेशं विभावये।।१४।।

श्री रंग देवी, सुदेवी, ललिता विशाखा, चम्पिका चित्रा, तुङ्गविद्या इन्द्रलेखा यह प्रधान प्रधान अष्ट सखियां श्री वृन्दावन के नवनिकुञ्ज धाम में श्री राधा–सर्वेश्वर–श्यामा–श्याम विहारी की नित्य सेवा में अभिरत है यह लोकोत्तर स्वरूप श्री धाम वृन्दावन, वृन्दावन विहारी का निरन्तर यशोगान करता रहता है।

श्रीसेवाकुञ्जलता पुष्पैरभितः परिशोभितम्।
राधाकृष्णमहारास-मुदितं विपिनं भजे।।३७।।

सेवा कुञ्ज लता–द्रुमावलि के सुन्दर पुष्पों से अतीवशोभायमान है जहां नवल विहारी श्री राधाकृष्ण महारास पर परम हर्षित हो रहे हैं।

रासलीलारसस्थानं सततं रस निर्झरम्।

रसानामुपजीव्यञ्चाऽऽश्रये वृन्दावनं परम्।।५२।।

श्री वृन्दावन निकुञ्ज विहारी राधा–कृष्ण की मधुर मंगलमयी रास लीला का दिव्य स्थल है तथा समस्त दिव्य भक्ति रस का जनक है।

मुक्ता वैडूर्य गोमेद दिव्य रत्नादि मण्डितम्

दिव्यातिदिव्यश्री युक्तं वृन्दावनमहं भजे।।५।।

श्री वृन्दावन दिव्य रत्नों से प्रकाशमान है।

श्रीधामरसकैः सेव्यं युग्माऽध्रि समुपासकैः।

वाणीस्वाध्यायसंलग्नै वृन्दारण्यं हृदाभजे।।१५।।

श्री वृन्दावन धाम की रसिक भक्तजन, श्री युगल किशोर राधा–माधव के उपासक व वाणी के स्वाध्याय अनुशीलन सृजन में संलग्न साधुजन महिमा गाते है।

सद्भिः सद्भावना पूर्णै प्रत्यहं स्वस्थचेतसा।

प्रोक्तं सविस्तरं वाचा तद्विपिनं हृदाभजे।।१७।।

वृजभक्तैर्जनैर्गेयं व्रजजीवन जीवनम्

वृजाऽऽलीभिः समाराध्यं वृजवृन्दावनं भजे।।२७।।

भक्त–जन व पवित्र अन्तःकरण कृष्ण भक्त श्रेष्ठ महानुभावों द्वारा श्रद्धाभाव से श्री वृन्दावन की मधुर यशगाथा सरसवाणी में गाई गई है। इस वृन्दावन की महाभागगोपीजनों द्वारा आराधना की जाती है।

समग्र धाम सर्वेशं राधा भक्ति रस प्रदम्।

सकलाऽभीष्टदं धाम वृन्दावनं हृदा भजे।।२६।।

श्री वृन्दावन समस्त धामों में सर्वोपरि है। श्री सर्वेश्वरी राधा के पदारविन्द की मधुर रस भक्ति प्रदायक है और अनेक मांगलिक आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाला है।

दिव्यसुधामहाकुम्भं शास्त्रेषु वर्णितं प्रियम्।

एवम तितरां भव्य भावये विपिनेश्वरम्।।२५।।

श्री वृन्दावन इस भूतल पर दिव्य अमृत कुम्भ स्वरूप अर्थात भक्ति रस रूपी अमृत को प्रदान करने वाला दिव्य अमृत कलश है। ऐसा महत्व आचार्य श्री ने व ब्रज आदि विभिन्न भाषा के विद्वानों व शास्त्रों ने बताया है।

आविर्भवति यत्रोच्च-रसभक्तिस्तु सत्वरम्।

ध्रुवं धामनिवासेन तं प्रभजे वनाधिपम्।।४२।।

सदगुणाऽर्णव कल्लोलं दोषगन्धविवर्जितम्।

रसकोषं प्रियाधाम तद्वृंदा विपिनं भजे।।४३।।

श्री वृन्दावन में स्थिर श्रद्धा पूर्वक निवास से युगल चरण की प्रेम लक्षणा पराभक्ति अन्तर्मानस में प्रकट होती है। सौन्दर्य, माधुर्य लावण्य, गुणगणमहोदधि श्रीहरिकृपा की उत्ताल तरगें श्री वृन्दावन में सदैव विद्यमान रहती है यहां दोष गंध का स्पर्श तो क्या कल्पना भी नहीं है यह रसकोष निधि, पराभक्ति प्रदायनी, श्री राधा जी का सचिन्मय दिव्यधाम है।

राधा-राधेति सर्वत्रयत्राऽऽयातिध्वनिश्शुभा।

तच्च वृन्दावनं नित्यं स्मरामि स्वीय मानसे।।४५।।

श्री वृन्दावन में श्री राधे। श्री राधे। यह परम मंगलमयी मधुर ध्वनि गूंजती रहती है ऐसे वृन्दावन धाम की आचार्य श्री के अनुरूप सब को स्मरण भावना करनी चाहिए।

राधा कृष्णेति नामनि जपन्ति रासिकोत्तमाः।

एवं वृन्दावनं तद्वै मनसि भावयेऽनिशम्।।४६।।

श्री वृन्दावन में श्रीराधाकृष्ण–श्रीराधाकृष्ण यह भगवद् नाम भावुक रसिक अहर्निश जपते रहते हैं। ऐसे पुरूषोत्तम धाम की आचार्य श्री ने हार्दिक महिमा कही है।

भक्त, भाव व भगवान का धाम है वृन्दावन। व्यक्ति की धाम व धामी के प्रति भाव श्रद्धा हो तब व्यक्ति भक्त कहा जाता है। श्रद्धावान भक्त को धाम में भगवद् भक्ति का रस अनुभव होता है। श्रद्धा हीन को धाम में रहकर भी धाम की दिव्यरसानुभूति नहीं हो सकती है। धरातल पर श्री वृन्दावन आदि भगवद् धाम में निवास करने वाले श्रद्धाहीन को मात्र धाम की सामन्य लौकिकता ही समझ में आती है। भगवद् धाम क्षेत्र से बाहर रहने वालों को धाम–धामी की निरन्तर भावना करते रहने से उन के धाम श्री वृन्दावन व धामी श्री राधा माधव की दिव्य व अलौकिक रूप छटा का प्रकाश हो जाता है। जब निरन्तर स्मरण श्रद्धा करने वाला भक्त धाम धरा का दर्शन करता है तो भावानन्द से पूर्ण हो जाता है। जो सामान्य श्रद्धा वाला है उसे धाम धरा क्षेत्र के दर्शन स्मरण से भक्तिरस की प्रेरणा होती है।

आचार्य श्री ने श्री वृन्दावन धाम व धामी श्री युगल किशोर श्याम श्यामा का, श्री वृन्दावन सौरभ में "भावये" "भजे" आदि वचनो से भावमय भजन किया है। इन ग्रन्थों के माध्यम से भजन स्मरण करने की प्रेरणा प्रदान की है। वृन्दावन के अमोघ फलप्रद महत्त्व के बारे में आचार्य श्री ने कहा हैं।

रसबीजं सुधागारं रासरससुखावहम्।
राधिकावल्लभाधारं श्रीवृन्दावन माश्रये।।५१।।श्री.वृ.सौ.

श्री वृन्दावन भक्ति रस का बीज है भक्ति रस सुधा का भण्डार है श्री राधा बल्लभ लाल की प्राप्ति का आधार है। युगल विहारी के रास विहार रस सुखका वाहक है ऐसे लोकोत्तर फलदाता श्री वृन्दावनधाम का हम आश्रय लेते है।

आचार्य श्री के सभी ग्रन्थ स्वकीय भगवद् वंदना के साथ भक्ति भाव को प्रसस्त करने के प्रयोजन से भक्ति साहित्य व शास्त्र के मान्य सिद्धान्त के अनुरूप प्रखरकुशलता से काव्यबद्ध है। एक छोटे शब्द और श्लोक में

भी श्रुति स्मृति, आर्षपुरूषों की वाणी और परम अनुभव का प्रकाश हुआ है, यह आप श्री के स्वाध्याय, भक्ति, ज्ञानानुभव व तप का ही प्रभाव है।

"निकुञ्ज सौरभ" भक्ति दर्शन की अत्यन्त गहनता को समेटे हुऐ है। परम्परा से चली आ रही है निकुञ्ज सौरभ की गन्ध युगलगीति में भी है। "युगल गीति शतक" आप श्री की सब से पहली पद्य रचना है यह शब्द छन्द अलंकार व्याकरण व भाव की दृष्टि से अत्यन्त प्रौढ व पूर्ण रचना है।

भक्त भाव व़ भगवान, भक्ति के प्रमुख आधार है। यह आधार जहां जीवन्त हुआ है वह धाम है श्री वृन्दावन। द्वापरान्त पर यहां भक्त और भगवान ने जीवन्त लीलाचरित्र किया। श्रीमद्भागवद् आदि पुराण शास्त्रों में है—

भगवान श्री कृष्ण ने गौ, ब्राह्मण दीन भक्त और देवताओं की प्रार्थना पर धर्म समृद्धि के लिए मथुरा—वृन्दावन मे लीला अवतार लिया। गोलो—कधिष्ठाता भगवान श्री सर्वेश्वर श्री कृष्ण के साथ श्री राधा जी ने भी लीला अवतार लेने का भाव प्रकट किया। भगवान के पार्षद, वरदानी भक्त, गौ, गोप गोपीजन, लता वृक्ष पक्षी, गिरी सरोवर आदि ने भी लीलाभूमि पर साथ रहने का मनोरथ जताया। जब यहां गौ लोक के परिकर का लीला भूमि पर लीलावतार के साथ आना तय हुआ तब भगवान ने गौ लोक की दिव्य निधियों सहित वृज मण्डल को पहले पृथ्वी पर प्रकट किया । तब श्री वृजमण्डल पर श्री राधा जी व श्री कृष्ण ने लीला परिकारों सहित लीलावतार लिया।

भक्तिरसमय इस वृन्दावन पर भक्त व भगवान ने अनन्य भाव सम्बन्ध से रसमय लीला की। कोई भगवान श्री कृष्ण को वात्सल्य भाव से कोई सखाभाव से, कोई महाभावस्वरूपा श्रीराधाजी के अनुगत सहचरी सेवा परिकार बन मधुररसउज्ज्वलभाव से, कोई सर्वाधिक पतिपरमेश्वर मानते हुए कान्ता भाव से, कोई दासभाव से, कोई शान्तभाव पूर्वक भगवान से

सम्बन्ध बनाकर भगवान श्री कृष्ण के लीला चरित्र में सहगामी हुआ है।

श्री वृन्दावन में वृन्दावनधीश सर्वेश्वर श्रीराधा माधव का परिकारों सहित वही लीला वैभव आज भी अन्तर्निहित है। जो भावुक भक्तों को अनुभव होता है।

आचार्य श्री के "युगलगीतिशतक" ग्रन्थ के प्रारम्भ में श्री वृन्दावन का यही दिव्य वैभव प्रकट हुआ है।

आहो वृदारण्यं युगलललितं भक्तिरसदं
प्रपनार्तिहर्तुं त्वरितमभितोऽनुग्रहपरम्।
सखीनां संगीतैरमितरूचरं चिद्घनमिदं
भजे नित्यं स्वान्ते रसिकजनहार्दाऽमृतरसम्।।१।।

श्री वृदारण्य श्रीयुगलकिशोर श्यामा–श्याम विहारी की ललित लीलाओं के रसानन्द से पूर्ण है। इसका यही अभिप्राय हुआ कि श्री वृन्दावन में आज भी श्री राधा कृष्ण का लीला रमण होता है। वृन्दावन, भक्तों को इस लीला रस का आस्वादन देता है प्रपनार्ति भक्तों की भववाधा दूर करने में अनुग्रहशील है। तभी तो भावुक जन श्री धाम वृन्दावन की यात्रा दर्शन करने दूर दूर के क्षैत्रों से आते है और अत्यन्त भावुक भगवद्भक्ति में संलग्न रहकर यहां वास करते हुए भवताप निवृत होते है और भगवत कृपा पाते है। वृंदारण्य आज भी गोपजनों के रूचिर लीलाविहार व दिव्य संगीत के आनंद से युक्त है। श्री वृन्दावन भक्त रसिकों को आनन्द देने वाला है, रसामृत से पूर्ण करने वाला है। अर्थात् श्री राधाकृष्ण की अत्यन्त संनिधी रूप साक्षात्कार कराने वाला है। इसीलिए–

यत्राऽस्ति राधाहरिनित्यलीला
तद्वासलिप्सा सुतरां विधेया।।६।।

जहां वृन्दावन मे राधा हरि का नित्य लीला दर्शन है उसी स्थान पर वास की वाञ्छा की गई है।

युगलकेलीविलास महास्थलं
द्रुमलतानवकुञ्जमनोहरम्।
शुक-पिकादि विहङ्गम कूजितं
विपिनराजमहो हृदि भावये।।३।।

प्रिया–प्रियतम के क्रीड़ा–विलास का स्थल द्रुम–लताओं नवनिकुञ्जों व कोक कीरादि पक्षी समूह से शोभायमान है। वृन्दावन की भावना से ही भावभक्ति का रस प्राप्त होता है। इसीलिए तो आचार्य श्री हृदय से भावना करके भक्तिरस का स्वयं आस्वादन कर रहे हैं।

जो वृन्दावन में जाकर श्री युगल किशोर की भक्ति करता हुआ निवास करता है "स उदितनिजभाग्यों युग्मपदाब्जनिष्ठः।।४।। वह परम भाग्यशाली है।

जिस धरा की धूल पर स्वयं परमेश्वर व उनके भक्त चरण रखते है। जिस भूमि में प्रभू क्रीड़ा करते है धूल धूसरित होते हो जहां उठते–बैठते–गाते और विश्राम करते हो निश्चय ही वह धरा दिव्य प्रभा युक्त है–

श्रीधाममह्यारजसा स्वदेहं
प्रालिप्य सर्वं रसिका वरेण्याः।
स्वोपास्यनिष्ठाऽभिरता रसज्ञाः
सौभाग्यवन्तो विहरन्ति धाम्नि।।८।।

जो रसिक भावुक श्री धाम की रज से अपनी देह को विभूषित कर श्री श्यामा–श्याम की भक्ति में संलग्न हो श्री धाम में विचरते है वे परम सौभाग्यशाली है।

संस्कृत में संगीत वाद्य के साथ ताल–लय से गाने योग्य, श्री वृन्दावन के विभिन्न वैभव को व्यक्त करते हुए, श्री युगल गीति शतक में तीन– "वर्षति मेघः श्रीवनकुञ्जें।" "अवलोकय सखि। वृदाविपिनम्।" "अलोकय सखि दोलाऽऽनन्दम्।" पद है इसी तरह श्री वृन्दावन सौरभ में चार "चलमनत्वरितं वृदाविपिनम्।" "श्री वृन्दावनमतिशयशुभगम्।" "प्रभवाति विपिने युग्मरस स्त्रवणम" "वृंदा विपिनं शोभागांरम्" पद है। इसके साथ आपकी हिन्दी काव्य पदावली " श्री सर्वेश्वर सुधाबिन्दु" व "श्री राधासर्वेश्वर मञ्जरी" ग्रन्थों मे भी वृन्दावन का दिव्य वैभव सुललित भाषा भाव से व्यक्त किया गया है।

आप श्री के प्रणीत दो स्तव संग्रह है। इन में धाम–धामी की महिमा का गान सर्वाङ्ग रूप से हुआ है। सभी स्तव के शब्द छन्द अलंड्कार व भाषा सुललित, रसमय व हार्दिक भावगर्भित है। यह स्तव हार्दिक भाव से पाठ करने पर भक्त व भगवान दोनों का हृदय पुलकित करने वाले है। वस्तुतः यह स्तव शब्द–बह्म से साकार बह्म की रसानुभूति कराने वाले है।

"श्रीस्तवरत्नाञ्जली" में वृन्दावन के दो स्तव है– श्री वृज भावनाष्टकम्, श्री वृन्दावनाष्टकम्। सभी स्तव अपने ध्यये सदंर्भ से पूर्ण है। इन स्तवों की व्याख्या की जाऐ तो धाम वृन्दावन की वहं महिमा जो हमने अन्य ग्रन्थों में पूर्व में देखी है, इनमें ही समाहित हो जाती है। रसामृत पीना है तो पाठ करके देखिऐ।

श्री वृजभावनाष्टक - **वृषभानुसुतापदकञ्जधुता**
व्रजवल्लभमञ्जुलकेलीकरा।
गिरीराजलताद्रुमकुञ्जतता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा।।२।।
व्रजगो व्रजगोप कदम्बलसा
व्रजगोपसखी मधगीतरसा।

व्रजवासिभिरूत्तम नृत्ययुता।

जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा।।७।।

श्री वृषभानुसुता ब्रजबल्लभ केली सहित गौ–गोपी लता–द्रुम गिरीराज से सुशोभित, मधुर गीतो से गूंजती हुए मञ्जुल केली धरा श्री वृन्दावन का यह चित्र श्री वृज भावनाष्टक से हैं। अब यह है श्री वृन्दावना अष्टक के दो छन्द–

गोलोकधामतिलकं भुविराजमानं

सद्वृदसेवितरजःकणशोभमानम्।

श्रीरङ्ग.हर्म्यकिरणैरतिमोहनीयं

वृंदावनं रसधनं हृदि भावयामि।।६।।

राधासुधारसवृतं मृदुमोहनाङ्ग.

गोविन्दधाम नव नित्यनिकुञ्जरूपम्।

प्रेमाब्धिविग्रहमयं परमातिदिव्यं

वृन्दावन रसधनं हृदि भावयामि।।८।।

श्री वृन्दावन विहारी के लीला विहार के कई विशिष्ट अंग है। इन में से श्री धाम के कई स्थानों की महिमा आचार्य श्री के ग्रन्थों में है।

श्री यमुना जी वृजवन को प्राकृतिक व अलौकिक स्वरूप सौन्दर्य व श्रृंगार प्रदान करती है। "श्री युगल गीति शतक" में इसका वर्णन इस तरह से है–

भजेऽहं कालिन्दीं विमल सलिलोल्लोलललिताम्

वरं बाला-माला कनककलशाऽऽपूरित जलाम्।

वरेण्यां श्यामाङ्गीं स्वजनकलुषौघक्षयकरीं

सुरद्रुश्रेणीनां नवसुमनसां सौरभपराम्।।१७।।

श्री कालिन्दी निर्मल जल की उताल तरंङ्गो से सुशोभित है सुरद्रुमा लियों के नवविकसित पुष्पों से महक रही है ऐसी प्राकृतिक सुजल निर्मल यमुना के मनोरम घाटों से ब्रजबालायें स्वर्ण कलशो में जल भरकर ले जा रही है। स्वजनो का– स्वजन कौन ? जो यमुना जी श्री वृन्दावन तथा श्री वृन्दावन विहारी श्यामा–श्याम को श्रद्धा भाव से अपना मानते है। उनके कलुष को अर्थात बाहरी मैल को तथा अघ को अर्थात जन्म जन्मान्तर के आन्तरिक मलावरण का क्षय करने वाली है।

"श्री स्तवरत्नाञ्जली" के यमुनाष्टक में कितना भावपूर्ण वर्णन है–

युगलांगविनिस्सृत पुण्यपराम्
सलकाभयदानपरां प्रवराम्।
रससारभरां रसभक्तिधरां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम्।।२।।

जिनका श्री कृष्णचन्द के दिव्य विग्रह से प्रादुर्भाव है। यम त्रास से अभय देने वाली , रस विग्रह श्यामा–श्याम के सानिध्य व सेवा भक्ति से पूर्ण श्री यमुना जी को प्रणाम है।

नव कुञ्ज किशोर विहार परां
नव कुञ्ज सखी जल केली धराम्
नव कुञ्ज शुकोक्ति सुमोदभरां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम्।।६।।

जिस यमुना में श्री युगल किशोर विहार करते है, जिस में कुञ्ज की सखी–वृद जल–विहार करती है जहां कुञ्ज के पिकशुकशारिकादि मोद भरी वाणी से आनंद उल्लास बिखेरते हैं।

"श्री युगलस्तव विंशतिः" के यमुनाष्टक में "पंङ्कजैः चर्चितां चारू स्वर्णघट्टैश्चशोभनाम" (३) "मकरैः कच्छपैर्मत्स्यैः सुरम्यामं रसवर्षिणीम्" (५)

श्री यमुना जी कमल पुष्पों से सुशौभित स्वर्ण घाटों वाली मकर, कछुवें एवं मछलियों से अति रमणीय दिव्यभक्तिरस की धारा प्रवाहिणी है।

श्री गोंवर्धन क्षैत्र श्यामा–श्याम विहारी के लीला चरित्र का मुख्य स्थल है। यहां भगवान ने गौचारण किया गोवर्धन की गिरी कन्दरा और शिखर पर क्रीड़ा की, वंशीनाद किया दौड़े भागे यहां के कदम्बादि वृक्षों के नीचे बैठे, चढे और यहां के वृक्ष पौधे लता आदि के फल फूल ग्रहण किये। श्री गोपाल श्री गोवर्धन की तलहटी के कुण्ड–सरोवर व गांव–गलियारों में रचे बसे हैं। श्री कृष्ण ने वृजवासियों से गोवर्धन को अपना देव मानकर पूजा कराई। इन्द्रकोप से वृजवासियों की रक्षा के लिये श्री गोवर्धन को अपनी अंगुली पर धारण किया और गिरधारी कहलाये जिस गोवर्धन को प्रभू ने सम्मान दिया वह तो सब के लिए पूजनीय है।

"श्री युगल गीति शतक" के सात पद्यों में श्री गोवर्धन का महिमा गान है–

गोवर्धनं गिरिपतिं गिरीराजमीशं
गोविन्दरूपमपरं गुणवद्गरिष्ठम्।
गंङ्गाऽगमौघसुभगं नवगव्यसिक्तं
गो गोपगीतमुदितं सततं नमामि।।१६।।

गुणों में श्रेष्ठ श्री गोवर्धन भगवान गोविन्द का ही दूसरा स्वरूप है यह मानसी गंगा से सुशौभित गौदुग्धधारा गौ और गोप विचरण से सदा प्रमुदित हैं।

"श्री युगल स्तवविंशतिः" के श्री गोवर्धनाष्टकम में श्री गिरीराज का भावपूर्ण महिमा गान है।

निर्झाराणां महानादै र्विहङ्गमकलस्वनैः।
रमणीयं मृगै र्मुग्धैः संभजामि गिरीश्वरम।।३।।

गौवर्धन निर्झरों से निनादित, विहंग कलरव से गुञ्जायमान और मृगों से परम रमणीय है।

सप्तकोश सुविस्तीर्णं श्रीकृष्णकररञ्जिम्।
कल्पद्रुमं कृपापूर्णं गिरीराजं सदाभजे।।६।।

जिसे श्री कृष्ण ने अपने कर कमलों पर धारण किया वह सात कोष के विस्तार वाला श्री गिरिराज भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करने में सदा तत्पर कल्पद्रुम के समान है।

आचार्य श्री ने वृजमण्डल के धाम, मानसीगंगा श्री राधाकुण्ड, श्री कृष्णकुण्ड श्री ललिताकुण्ड व श्री निम्बग्राम का स्तवन किया गया है।

गोवर्धन स्थित मानसी गंगा का प्रादुर्भाव भगवान श्री कृष्ण के मन संकल्प से हुआ यह बात श्रीभागवद् व गर्गसंहितादि ग्रन्थों में है मानसी गंगाष्टक मे आचार्य श्री ने कहा है। "श्री कृष्णमानसोद्भवाम्" (१) (श्री यु. विं) कूर्मै विंशोभितां दिव्यां मत्स्यै र्जलचरैरहो।नमामि मानसीगंगां पंकजैरमितप्रियाम।।२।।

श्री मानसी गंगा कच्छप, मछली आदि जलचरों सहित विकसित कमल पुष्पों से शोभायमान है।

इस की प्राकृतिक छटा का और भी मनोरम वर्णन है– 'आवृतां तरू भी रम्यैः कूजितां कीर कोकिलैः।" (३)

सुन्दरवृक्षावली से आवृत व तोता, कोयल आदि विहगों में कूजित है। मानसी गंगा के महात्म्य को प्रकट करते हुए कहा गया है– श्री करीं श्री धरां श्री शां श्री प्रियाम् श्री सुखावहाम्। नमामि मानसीगङ्गां श्रीप्रदां श्रीवर प्रदाम्।।७।।

लक्ष्मी प्रदान करने वाली, शोभा सम्पन्न, श्री हरि, श्री राधा जी को अत्यन्त प्रिय, व सुख पहुंचाने वाली, सर्व सम्पदा श्रेष्ठ आध्यात्मविद्या प्रदान

करने वाली व सर्व सम्पदा का वर देने वाली गोवर्धन स्थित श्री मानसी गंगा है।

"श्री राधाकुण्डाष्टक" (श्री यु.स्त. विं.) में श्री राधाकुण्ड का दिव्य व मनोरम स्तवन है।

विहंगानां नानाविधकलरवेः शोभनतमं
द्विरेफानां पुञ्जैः परिलसितगुञ्जैः प्रियकरम्।
सरा सब्दिगैंयं कलिमलहरं कीर्त्तनरतै
भजे राधाकुण्डं सरममधुरं श्री सुख करम् ।।७।।

पक्षियों के कलरव से शोभित भवरों से गुञ्जायमान, वैष्णव साधु भक्तों द्वारा हरिनाम कीर्तन से परिपूर्ण कल्मषहारी सुखप्रद श्री राधाकुण्ड दर्शन स्मरण योग्य हैं।

"श्री कृष्णकुण्डाष्टक" (श्री.यु.स्त.वि.) में श्री कृष्णकुण्ड का महिमा महत्त्व है।

बंशीधर : श्रीभगवनमुकुन्दो
बंशीनिनादं विदधाति यत्र।
एवं वरिष्ठं वरणीयमाशु
श्री कृष्णकुण्ड समुपाश्रयामि।।६।।

बंशीधर भगवान मुकुन्द जहां बंशीनाद करते हैं। जिस के स्मरण श्रवण से रसिक भक्तों में प्रेम रस दौड़ा आता हैं जिससे भक्तजन प्रेमानन्द का अनुभव करते हैं। यह वंशीधर का श्री कृष्णकुण्ड भक्तों के लिए उपासनीय है।

श्री राधाकृष्णकुंण्ड श्री गोवर्धन परिक्रमा परिसर में ही है। श्री राधा कुण्ड के समीप ही श्री ललिताकुण्ड है। यह कुण्ड श्री राधाकृष्ण की कुञ्ज

सखी श्री ललिता का कुण्ड है। आचार्य श्री विरचित श्रीललिताकुण्डाष्टक श्री युगल स्तव विंशति में है–

श्री ललिता सखी सेव्यं नानाविधकलाऽङ्कि.तम्। (५) विविध कला कोशल में निर्मित ललिता कुण्ड श्री ललिता सखी का स्थल है। "नित्यलीला रसाधारं नित्यलीलासुखस्थलम् (६) यह श्री ललिता कुण्ड नित्य लीला रस व नित्य लीला सेवा सुख का आधार स्थल है।

श्री वृजमण्डल में श्री गौवर्धन परिक्रमा के पास ही है श्री निम्बग्राम। निम्बग्राम श्री सुदर्शन अवतार आदि निम्बार्काचार्य की तपस्थली रहा है। यहीं श्री सुदर्शन कुण्ड है श्री युगल किशोर का यहां सदा सर्वदा वास रहता है और भक्तजनों को कृपा उपलब्धि होती है। "श्री निम्बग्रामाष्टक"

"श्री युगल स्तव विशंतिः" में इसका महिमा गान है।

श्री सुदर्शन कुण्डेन माण्डिते दिव्य पावने।
निम्बग्रामे दर्शनीयं निवासं नित्यमाश्रये।।४।।

श्री सुदर्शन कुण्ड की दिव्य पावन स्थली व निम्बग्राम दर्शनीय है।"**मयूरैः कोकिलैः कीरैः खगवृन्दैः प्रकूजते**"(६) यहां मयूर कोयल आदि खग वृन्द कूजते हैं। "दीक्षितो यत्र निम्बार्कस्तत्र श्री नारदेन वै"(३) श्री निम्बग्राम, सुदर्शन कुण्ड वह स्थान है जहां देवर्षि नारद जी ने श्री सुदर्शन अवतार निम्बार्क को मंत्र दीक्षा प्रदान की थी।

भगवान श्री कृष्ण ने विष्णुचन्दन को धारण किया गोपियों ने इस का अभ्यंङ्ग. किया अतः यह गोपीचन्दन नाम से प्रसिद्ध हुआ है। "प्रभोरंङ्गऽकितव्याप्त" (५) "गोपीचन्दनाष्टक" (श्री.यु.स्त.वि.) यह गोपीचन्दन पीले रंग का सुखधाम प्रदान करने वाला है (१) इस का तिलक धारण करने से यमदूत भय खाते पास नहीं आते (६–१०) गोपी चन्दन का तिलक धारण करने से मनुष्य हरि का पार्षद बन जाता है। (४)

वैष्णवानां महावित्तमातुराऽऽरोग्य दायकम्।

मन्दानां शेमुषीकारं गोपीचन्दनमाश्रये।।८।।

श्री वृन्दावन, वृन्दावनधीश व उपासकों का गोपी चन्दन से अमित संबन्ध है अतः यहां कहा–गोपी चन्दन वैष्णवो का परम धन है। यह अरोग्य श्रेष्ठ वित्त व भगवद्बुद्धि प्रदान करने वाला है।

भारतीय मनीषा गाय में सब देवों का वास मानती है। गाय दूध दही घी आदि हमें प्रदान करती है। भगवान श्री कृष्ण व गाय का अभिन्न सम्बन्ध है। श्री कृष्ण ने गौकुल में नन्द बाबा की गाय चराई और गोपाल कहलाये। गोपियों से दूध दही लूट–लूट कर खाया और इनका महत्व मान बढ़ाया स्वयं कामधेनु ने भगवान का दुग्धाभिषेक किया और श्री कृष्ण को गोविन्द नाम दिया।

आचार्य श्री की रचनाओं में गाय की महिमा गाई गई है–

ब्रह्मेश शेष सनकादि महर्षि सेव्यां

वेदादि शास्त्र वचनैः प्रतिपाद्य मानाम्।

स्वाचार संस्कृति विवेकनिदान भूतां।

वन्दे मुकुन्द सुखदां व्रज सौरभेयीम्।।२६।।

गाय की ब्रह्मा शिव आदि देवगण महर्षि, महात्माओं व शास्त्रों ने महिमा गान व सेवा की है। गाय भारतीय संस्कृति आचार–विचार व ज्ञान का मूलाधार है। "मोक्षप्रदात्री" व्रजवल्लभेष्टां (गोमहीमाष्टक १ स्तव र) वृज बल्लभ श्याम सुन्दर की प्रिय गौमाता मोक्षदात्री है "करूणनिधानां सुख स्वरूप" मधुर दूध देती है। जिस के गौमूत्र गोबर के प्राशन से मनुष्य अन्त बाह्य पवित्र हो जाता है "यतपञ्चगव्याऽमृत–सेवनेन। रोगाः समग्राः प्रशमं प्रयान्ति।।"(५)

यत्पृष्टभागे मुरलीं निधाय
हस्तारविन्दे मधुरां मनोज्ञाम्।
वृदावने गच्छति माधवस्तां
गोमातरं नित्यमहं भजामि।।७।।(श्री स्त.र.)

वृन्दावन मण्डल में भगवान श्री कृष्ण चन्द जिस गौ माता के पीछे पीछे चलते है जिस के पास खड़े हो कर मुरली बजाते है वह गौ माता सेवा करने योग्य है।

श्री वृन्दावन श्री हरिप्रिया तुलसी के ही नाम पर है श्री तुलसी महिमाष्टक (श्री.यु.स्त.वि.) में तुलसी का सम्पूर्ण महिमा गान हुआ है–

वृदां प्रसिद्धां सरसां सुगन्धां।
प्रफुल्लितां पल्लव मञ्जरीभिः।
गोविन्द पादम्बुजयोश्चरन्तीं।
हरिप्रियां श्री तुलसी नमामि।। १ ।।

वृंदा नाम से प्रसिद्ध रस सुगन्ध वाली हरित पत्र व मन्जरीयुक्त गोविन्द को प्रसन्न करने वाली श्री हरिप्रिया तुलसी है।

संसार दावानल शान्त करके श्री हरि के गौलोक धाम को देने वाली है श्री तुलसी जी (२) श्री तुलसी शालिग राम शिलापर अर्पण करने से प्रभू धाम प्रदान करती है (३) जिस के दर्शन स्पर्श से यमदूत भाग जाते है तथा जिस के सेवन दर्शन सेवा से अधि–व्याधि दूर रहती है।(५) तुलसी के बिना भगवान नैवैध्य ग्रहण नहीं करते हैं।

यत्काष्ठामालां परिधाय कण्ठे
सद् वैष्णवाऽऽग्रया विचरन्त्यशङ्काः।
तां सुभावां वरणीय वृन्तां
हरिप्रियां श्री तुलसीं नामामि।।८।।तु.महि.(यु.स्त.विं)

तुलसी कण्ट माला को कष्ट में धारण करने से वैष्णव संसार में निर्भयविचरण करते है विविध ताप का समन करके सर्व कल्याण करने वाली है ऐसी अमोध महिमा मयी श्री वृन्दा, श्री वृन्दावन को हम प्रणाम करते है ।

अध्याय-6

निकुज लीला अनुगत भक्ति-रस

अनन्त श्री विभूषित श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य की समस्त रचनाऐं पराभक्ति से सम्बन्धित है, पराभक्ति में संलग्न है और परभक्ति से परिपूर्ण है। इस का उल्लेख आपने अपनी रचनाओं में किया है। समस्त अष्टक स्तव में– "परा भक्ति प्रदायकम्" "परा भक्ति प्रदं" "परा भक्तिप्रदारम्" "राधा भक्ति प्रदं दिव्यं" "व्रज भक्ति प्रदं आदि अभिवचन है तो "व्रजनिकुञ्जरस स्तवो" (श्री युगल गीति शतक) "निकुञ्ज रस वर्धनम" (निकुञ्ज सौरभ) "रस भक्ति समन्वितम्" (श्री वृन्दावन सौरभ) "रसप्रदः" (श्री राधा–राधना)" "प्रभोर्माहात्म्यरूपञ्च" (श्री राधाशतकम्) "रसिकेभ्यः सुख प्रदम्" (श्री राधा माधव शतकम्) इस तरह सभी को पराभक्तिभिष्ट बताया है।

निर्मल--निष्काम--अन्तःकरण पूर्वक, अनन्य श्रद्धा समन्वित, प्रभू की उपासना परा–भक्ति है। विषयप्रपञ्च का मनस् चित्त से शान्त हो जाना व श्रद्धा के साथ शान्त मनस् चित्त से प्रभू भक्ति में तत्पर व तल्लीन हो जाना, यह प्रभु कृपा पर ही निर्भर है। यह हरिकृपा, परमेश्वर के निरन्तर स्मरण चिन्तन और सतसंग स्वाध्याय से प्राप्त होती है।

जिन महात्माओं की सात्विक, सरल, निर्मल चित वृत्ति हो जाती है उन महात्माओं में "दैन्यादि" लक्षण उत्पन्न हो जाते है। इस दैन्य भाव से वे परमप्रभू के सामने मनसा–वाचा–कर्मणा शरणागत रहते है। इस तरह परम प्रभू के सामने मनसा वाचा कर्मणा शरणागति ही उत्तम पराभक्ति है।

आदि आचार्य श्री निम्बार्क द्वारा रचित "वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी के नवें श्लोक में इस का निर्देश है–"कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते" आप श्री ने इस ग्रन्थ की "नवनीत सुधा" नामक व्याख्या की है। नवनीत सुधा में इस श्लोक की व्याख्या है–

अस्य ..... श्री कृष्णस्य। कृपा ..... निर्हैतुक परम दिव्यानुग्रहो। दैन्यादि युजि ..... सर्वथैवाभिमानादि शून्ये निरवलम्बे श्री भगवच्छरणापन्ने परमानन्यप्रपन्ने कार्पण्यादि युक्ते। हि .... इतिनिश्चप्रचतया। प्रजायते .... आविर्भवति प्रकटी भवति.........।

यह कार्पण्यादि युक्त भगवद् परायणता विषय प्रपञ्च के शान्त होने से ही सम्भव है। कुछ महात्माओं को तो जन्मजात संस्कारों से ही पराभक्ति प्रभू कृपा से प्राप्त होती है जैसे सनकादि परमऋर्षि, देवर्षि नारद, महामुनिन्द्र निम्बार्क, भक्त प्रहलाद आदि व कई बालावस्था में ही भगवद भक्ति का अवलम्बन ले लेने वाले भगवद् भक्त।

जीव मात्र का प्रभू से भिन्न और कोई कल्याणकारक आश्रय नहीं है अतः विशेषतः मनुष्यों को अनादि–माया के बन्ध से छुटने के लिए भ गवद्–भक्ति का अवलम्बन लेना चाहिए। "उपासनीयं नितरां जनै सदा प्रहाणये ऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः (वे.का.द. ६) यही आचार्य निम्बार्क का निर्देश है।

मनुष्य को पराभक्ति प्राप्त करने के लिए जगत में शास्त्र निर्देशित अपने कर्तव्य कर्म करते हुए वेदानुगत सम्प्रदाय परम्परा की दीक्षा लेकर उपासना–साधना करनी होती है। मनुष्य समुदाय में प्राचीन काल से ही उपासना की परम्परायें चली आ रही है। इस भक्ति साधन का आदि

निम्बार्काचार्य ने संकेत दिया है– "सा चोत्तमा साधन रूपिकाऽपरा" सतसंग, गुरू आदेश के अनुसार उपासना–साधना करते–करते भगवद कृपा रूप अभिमान शून्यता, कार्पण्यादियुक्त भगवद्परायणता बढती जाती है त्यो त्यो भगवान के प्रति अनुराग बढता जाता है। पराकाष्ठा पर पहुँच कर यही भगवद् अनुराग का भाव–विशेष प्रेम लक्षण युक्त हो जाता है। भगवान के प्रति यह विशेष प्रेम ही प्रेमानुगाभक्ति, महाभाव, आनन्दभाव और उज्ज्वल भाव "रस" है। आचार्य श्री ने "नवनीतसुधा" में नवे श्लोक की व्याख्या में कहा है– "तदन्तरं भगवस्वत्रूपस्य विशेषज्ञानं प्रजायते, तेन च प्रेम लक्षणा पराभक्तिरार्विभवति।"

देवर्षि नारद जी ने भक्ति सूत्र ५२ में प्रेमासक्त भक्त के ग्यारह भाव बताये है– गुणमहात्म्यासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति, सख्यासक्ति, कान्तासक्ति, वातसल्यासक्ति, आत्मनिवेदनसक्ति, तन्मयतासक्ति और परमविरहासक्ति।

पराभक्ति में यथायोग्य समय इन सभी भावों का आविर्भाव होता है। श्री हरिकृपा से जिस–जिस गुण महात्म्य का भक्त को स्मरण व ज्ञानानुभव होता है वैसे ही भाव का उद्दीपन होकर भक्त के हृदय में उस समय उसी भाव की भावना प्रमुख हो जाती है।

उपासना सरणी में इन सभी भावों का अवलम्बन लिया जाता है। उपासक गुणमहात्म्य के अन्तर्गत प्रभू के गुणगान, कथाकीर्तन करते है। रूप महात्म्य भाव से प्रभू के स्वरूप विग्रह का अवलोकन आसक्ति व श्रृंगार करते है पूजासक्ति से प्रभू विग्रह की सेवा पूजा करते है व सेवा देखकर आनन्दित होते है सेवा में सहयोग करते है इस तरह यथा योग्य रूप से पूजा का अवलम्बन करते है। गुरू मंत्र से प्रभू का नाम स्मरण जप आदि करते है। कोई दासभाव से कोई सख्य भाव से तो कोई कान्ता भाव से कोई

वात्सल्य भाव से, आत्मनिवेदन पूर्वक प्रभू में तन्मयासक्त होते है। परम–विरहासक्ति–विरल भक्तों में देखी जाती है।

तन्मयता व परमविरहासक्ति उज्ज्वलमाधुर्यरस व महाभाव है जो परम प्रेम का सर्वोच्च शिखर है। यहि परमरस आनन्दमय कोष है।

आचार्य श्री की स्तव रचनाओं में गुणमहात्म्य, रूप, पूजा, स्मरण, सख्य (सहचारी भाव, गोपी भाव) व आत्म निवेदन का प्रावल्य है।

"प्रेमाधिष्ठातृ शक्तिञ्च" (२६) पीयूसरसवर्षिणिम् (२६)रंसाऽऽधारं (२८) कारूण्यादि गुणाऽऽपूर्णा (३०) दिव्यामाचरन्तीं (४१) दयापराम् (४१) स्वतिमस्तु (४६) (राधा शतक) परात्परतरम (६) रस शेखरम् (६) प्रपन्नार्तिप्रहतारं (१०) कोटि ब्रह्माण्ड सर्वेशं (१६) (श्री सर्वेश्वर शतक) गुण महात्म्य के अनुगत है। कमनीया (६) शुभाऽऽननाम (६) श्री राधाशतक से कोटी कन्दर्प लावण्य (१२) सौन्दर्य सागर (१४) (श्री सर्वेश्वर शतक) रूपाभक्ति है। पूजा, स्मरण सख्य गोपीभाव व आत्मनिवेदन तो आप श्री की रचनाओं के प्रत्येक पद्य में व्याप्त है। तन्मयता व परम विरह के लक्षण भी प्रत्येक रचना में है। श्री राधासर्वेश्वर की सेवा साधना आप श्री के जीवन में जन्म के साथ ही अभिन्न रूप से जुडी हुई है। प्रभू के सेवा स्वरूप में तन्मयता का प्रमाण आपश्री का जीवन व रचनायें प्रत्यक्ष दे रहीं हैं।

श्रीमद् भागवद् में भक्ति उपासना के नो अङ्. बताये गये है–

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्।

अर्चनं वंदनं दास्य सख्यमात्म निवेदनम्।।

भगवान के नाम रूप गुण लीला प्रभावादि का श्रवण कीर्तन व स्मरण तथा भगवान के श्री विग्रह की सेवा पूजन और वन्दन, दास्य सख्य आत्म निवेदन आदि भाव से करने का उल्लेख यहां किया गया है।

आप श्री की रचनाओं में और जीवन चर्या में भक्ति के यह सभी अङ्. परिपूर्ण रूप से दृष्टिगोचर होते है।

श्री निम्बार्कसम्प्रदाय में श्री राधा–कृष्ण की युगल उपासना का प्रचलन है। "ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्" कमल नयन हरि भगवान कृष्ण का" अड़े.तु वामे वृषभानुजा मुदां" वामाड़. विराजित वृष भानुजा श्री राधा जी सहित ध्यान करने का संकेत आदिआचार्य निम्बार्क ने दिया है। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में श्री राधा–सर्वेश्वर श्री राधा माधव श्री राधा मोहन श्री राधा गोपाल श्री राधा गिरधारी श्री राधा गोविन्द आदि निकुञ्ज बिहारी की उपासना इष्ट होने के कारण श्री कुञ्ज बिहारी श्री मुरली मनोहर श्री बाँकेविहारी, श्री वृजराज विहारी श्री मुरली मनोहर श्री युगलकिशोर की निकुञ्ज लीला विग्रह की सेवा उपासना की प्रमुखता है। सम्प्रदाय के असंख्य मन्दिरों में श्री युगल किशोर की सेवा–उपासना उत्सव आदि नवधा अंड़ों से होते है। सम्प्रदाय जनों द्वारा विष्णों के कई अन्य विग्रहों की सेवा पूजा भी की जाती है जैसे लक्ष्मीनारायण, रामसीता, हनुमान और शिवशिवा आदि भी है किन्तु स्वकीय भक्ति साधना की सरणी श्री युगल किशोर की नवधा–भक्ति, माधुर्य रस प्रवण ही है। श्री विग्रह सेवा उपासना द्वारा चाहे वह चित्र पट से है या मन्दिरों में प्रतिष्ठित विग्रह उपासकों–द्वारा नाम–जप लीला–कीर्तन, भजन व स्तव स्तुति के साथ रसेश्वर भगवान श्री राधा–माधव को ही रीझाया जाता है।

आचार्य श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के पीठाधीश आचार्य है अतः आप श्री का उपास्य भाव श्री राधा सर्वेश्वर की उपासना परक है। आप श्री की रचनाओं में श्री राधा कृष्ण की निकुञ्ज लीला भाव परक रस की ही सृष्टि हुई है। श्री युगल किशोर के धाम, सखा, सहचर सखी परिकर व अन्तरंग पार्षद यमुना गोवर्धन गंगा वेणु, गो, वृंदा आदि की स्तव स्तुति आप की रचनाओं में है।

श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के ग्रन्थों में भक्ति के पांच रस माने गये है।

शान्तं दास्यञ्च वात्सल्यं सख्यमुज्वलमेव च।

अमी पंचरसाज्ञेयाः प्रोक्ता वै रसवेदिभिः।। (सि० र०)

शान्त दास्य वात्सल्य सख्य और उज्ज्वल।

"श्री युगलगीति शतक" ग्रन्थ के प्रारम्भ में "श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में उपासना" (अ.ब्रजबल्लभशरण वेदान्ताचार्य) लेख में बताया गया है– श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में यद्यपि पांचो रसो की उपसना है तथापि प्रधानता मधुर (उज्ज्वल) रस अभिप्सित है।" उज्ज्वल रस की परिभाषा करते हुए इस लेख में आगे कहा है– मधुर रस भावना में सभी स्त्री पुरूषों का अधिकार है। साधक अपने को प्रिया–प्रियतम उपास्य युगल किशोर की सहचारी मानकर उन की आराधना करता है।——
——प्रिया प्रियतम बाल–पौगण्ड, कुमार, किशोर किसी भी अवस्था में लीला करे, उन्हें देखकर प्रमुदित होना और उसी क्रिया के अनुकूल सेवा करते रहना इसी को मधुर उत्तम उज्ज्वल रस कहते है।"

आचार्य श्री की कृतियों में श्री युगल विहारी की निकुञ्ज विहार की दिव्य लीलाओं का रससिक्त उज्ज्वल भाव प्रकटी करण है।

वृदावने कुञ्ज निकुञ्ज पुञ्जे

भृङ्गै., विंहङ्गैरभि गुञ्ज्यमाने।

नाना लता पादप पुष्परम्ये

राधा मुकुन्दं रूचिरं स्मरामि।। (श्री नि.सौ. १)

वृन्दावन के कुञ्ज–निकुञ्ज समूह नाना प्रकार के सुरम्य पेड–पोधों लता–पुष्पों से आच्छादित है,भ्रमर व विहंगों ने कुञ्ज का वातावरण मधुर–मधुर ध्वनि से गुञ्जायमान कर रखा है।

ग्रन्थ के पहले ही श्लोक में "रूचिरं स्मरामि" यह शब्द विशेष अभिप्राय लिए हुए है। जिस के प्रति मन में लगाव हो, जिस में मन रमे वह

मनोरम है वह रूचिर है। वह उज्ज्वल भाव से सम्पन्न है। जो, वृन्दावन कुञ्ज निकुञ्ज में विहाररत परम प्रभू राधा–मुकुन्द की लीलाओं का, लीलाधीश के नाम व धाम का सदा स्मरण करते है। अभिप्राय यह भी है कि श्री राधा सर्वेश्वर के नाम धाम व लीला का रूचि व लगन के साथ सदा स्मरण करना चाहिये।

यह श्लोक आदि आचार्य निम्बार्क के "प्रातः स्तवराजः" के प्रथम श्लोक "प्रातः स्मरामि" की अनुगति करता हुआ प्रतीत होता है। इस में भी भगवना श्री राधा–कृष्ण की मधुर रसाप्लावित केली, दिव्यवैभव सम्पन्न वृन्दावन, यमुना, वृक्षलतादि की रमणीयता के साथ प्रातःकाल अर्थात प्रथम स्मरण किया है। आचार्च श्री के पूर्वोक्त श्लोक में श्री वृन्दावन कुञ्ज–निकुञ्ज के इस दिव्य वैभव का वर्णन है और दोंनो अपनी–अपनी संदर्भ रचनाओं के प्रथम श्लोक है। जो भाव "प्रातः स्मरमि" कह कर कहा गया है वहीं यहां "रूचिरं स्मरामि" से कहा गया है।

मन बाह्य व अन्तस्थ दो तरह से प्रभावित है। ज्ञानेन्द्रिय द्वारा सुनने देखने–सूघने–स्वाद लेने व स्पर्श करने से व अन्तस्थ चित्त बुद्धि पर आवृत हुई संस्कार स्फूरणा द्वारा। यह दोनों संस्कार स्फूरणायें प्रारब्ध, संचित, क्रियमाण आदि कर्म संस्कारों द्वारा पूर्व के व इस जीवन की कर्म प्रवृति द्वारा मिलजुल कर होती है।

ज्ञानेन्द्रिय प्रभाव भी अन्तस्थ में जाकर धारण बुद्धि से यथायोग्य संस्कर विवेक के अनुसार मन में रुचि व लगन जगाकर बुद्धि द्वारा कर्मेन्द्रिय को कर्म में प्रवृत करता है। अतः हमारे यहां सदाचारी व कल्याणकारी जीवन के लिए सद्‌शिक्षा संस्कार व परमेश्वर प्राप्ति हेतु सद्‌गुरू दीक्षा (अनुगति) की परम्परा है।

वैष्णव सम्प्रदाय में निरन्तर भक्ति भाव के लिए श्री विग्रह सेवा दर्शन सतसंग, स्वाध्याय, भगवदनामजप विग्रह की सेवा–पूजा–पुष्प–

गन्ध नैवैद्यादि अर्पित कर उन्हें प्रसाद रूप में ग्रहण करना, उत्सव आयोजन, लीलानुकरण संकीर्तन व कथादि की परम्परा उत्कण्ठा जाग्रत करने के लिए है। यही रूचि जब अन्तस्थ में धारण हो जाती है तो हार्दिक लगन बन जाती है। प्रभू के नाम लीला स्मरण में मन रमने लगता है, इसे प्रभू से सूरत लगना भी कहतें है। सदा स्मरण उसी का होता है जिस के प्रति मन में अन्तरंड़ लगाव होता है, उत्कण्ठ रूचि होती है।

इस तरह "रूचिरं स्मरामि" से भक्ति के नो अंड़ो में हरि के नाम लीला गुण श्रवण कीर्तन व स्मरण तक के तीन अंड़ो का समाहार हो गया है। स्मरण ही ध्याता, ध्यान और ध्येय को एक रूपता देने वाला है अतः स्मरण प्रारम्भिक लगाव से लेकर विशिष्ठ प्रेमारड़ प्रदान करने वाला है।

सखी समूहैः परिसेव्यमानं
ध्येयं सदा धाम सुनिष्ठभक्तैः।
रसानुरक्तै रसिकै रसज्ञै
स्तद्भावये श्री युगलं निकुञ्जे।। (नि.सौ.२)

इस दूसरे श्लोक में, निकुञ्ज में सखी समूह द्वारा सेवत, धामनिष्ठ माधुर्य रस में सलग्न रसिक रसिज्ञो के उपास्य श्री युगल प्रभू के प्रति भावनिष्ठा समर्पित की गई है।

यहां "सखी समूहैः परिसेव्यमानं" से भक्ति–सूत्र के "यथा व्रज गोपिका" की अनुगति हो गई है। "ध्येयं सदा धाम सुनिष्ठ भक्तै रसिके रसज्ञै" से आदि आचार्य निम्बार्क सहित सभी पूर्वाचार्य व अद्यावधितक के सभी भक्त समुदाय का स्मरण सम्मान हो गया है। साथ ही उन्ही के अनुरूप युगल उपासना की निष्ठा ज्ञापित हो गई है। इस पद से भक्ति का चौथा अड़. पाद–सेवन सिद्ध हो गया है जैसे आदि आचार्य निम्बार्क ने "उपासनीयं नितरां जनैः" में–सनन्दनाद्यै मुनिभिस्तथौक्तं श्रीनारादाया अखिल

तत्त्व साक्षिणे" कहकर अपनी उपासना की परम्परा निर्देशित की है।

रूचि लगन व स्मरण से प्रभू के प्रति धारणा होती है व स्मरण सेवा-ध्यान की निष्ठश्रद्धा से "मनसे वेदमाप्तव्यम्" (क.३०) मन में भगवन की कृपानुभूति होने लगती है मनचित्त प्रभू में रमने लगता है अतः रूचिरं के बाद "भावये" भक्ति का उत्तरगामी चरण है।

श्री कुञ्ज कान्तिं परिवीक्ष्य दिव्यां
मनोहरां चित्र विचित्र रूपाम्
प्रहर्षितं रासरसाब्धिरूपं
श्री राधिका माधवमर्चयामि।। नि.सौ.३

यहां तो आचार्य श्री स्वयं ही अपने आराध्य को अपनी भावना की रसाञ्जली अर्पित कर रहे है। अभिप्राय रूप में यह ग्रन्थ भक्ति का एक उद्गीथ निबन्ध सृजन कर रहा है। अनुशीलन करने वालो को यह ग्रन्थ भक्ति रस से तरबतर कर सकता है।

इस ग्रन्थ में आगे कहा है कि-हमारा हृदय भी कुञ्जवत है। कुञ्ज की भावना करता हुआ भक्त कुञ्ज में कुञ्ज विहारी को ही अपनी सेवा अर्पित करता है। जब भावना परिपक्व हो जाती है तो अन्त-बाह्य में एक रूपता आ जाती है, तब दिव्य भाव से दिव्य रूप रसता का रसास्वादन होने लगता है। विभिन्न विचित्रतायें होते हुए भी भिन्न-भिन्न भक्त, भावनानुसार हाव-भाव प्रदर्शन करने लगता है। इन निर्मल चित्त भावुक-भक्तों के हार्दिक भावसेवा समपर्ण को भगवान हर्षित होते हुए अवलोकन व स्वीकार करते है। कोई भक्त भगवन को न देखे तो भी भगवान भक्त के भाव सम्बन्ध को स्वीकार करते है। भक्त भगवन के सामने स्तुति करता है प्रार्थना करता है पुकारता है भगवान के दर्शन की उत्कण्ठा करता है। भगवान उसे पूरी करते है।

मीरा जी ने एक पद में कहा–

"मनमन्दिर में ज्ञान बुहारी, दे दीनी सरकार आओ आओ जी सावरियां म्हांरद्वार। ढाड़ीन्हालूं बाठड़ली।।"

जब मन मन्दिर में दृढ शरणगति भाव हो जाता है तब सब मैल हट जाते है, यह ज्ञान अवस्था है। इस तरह ज्ञान होने पर भक्त भगवान में परस्पर अवलोकन, निवेदन व अर्चा पूजा होती है।

यहां इस "अर्चयामि" पद में भक्त भगवान का अतिनिकटतम दिव्य आलोक है। इस अभिवचन पूर्वक भक्ति का पांचवा अङ्. अर्चन व्यक्त हो गया है।

अवलोकयन्तीं हरि बिम्बरूपं
श्रीधाम वृंदावन कुञ्जराज्ञी।
कृपामयी मंगलरूप राधा
स्वान्तेमदीये स्फुरतु प्रियासा।।नि. सौ. ४

श्री कृष्ण की ह्लादिनीशक्ति परा श्री राधा जी महाभाव रूपा है। श्री राधाजी की कृपा से ही श्री कृष्ण कृपारूप पराभक्ति प्राप्त होती है, भक्ति भाव को स्थाई रूप प्राप्त होता है यह आर्षग्रन्थ व पूर्वाचार्यो का वचन है। निकुञ्ज धाम की सखीयोवत माधुर्य भाव श्री राधाजी के ही अनुगत है वे परमरस निकुञ्जधाम की स्वामिनी है। और पराभक्तों की गुरू स्वरूपा है। श्री राधा जी के कृपा कटाक्ष से ही निकुञ्ज धाम में प्रवेश मिलता है।

इस श्लोक में आचार्य श्री अतीव अनुराग पूर्ण दृश्य उपस्थित करते है– श्री धाम वृन्दावन की नित्य निकुञ्जेश्वरी कृपामयी राधा जी श्री हरि की रूप छवि का अवलोकन कर रही है। श्री हरि–दर्शन के इस अत्यन्त सुखद दृश्य के साथ श्री प्रिया जी से अन्त में प्रार्थना की गई है– स्वान्ते मदीय स्फुरन्तु प्रियासा" हे प्रिया जी इस तरह, जैसे आप विराजी हुई है

और आप को श्री हरि अवलोकन कर रहे, कृपारस बरसा रहे है। इसी कृपा कटाक्ष के साथ अब हमारे हृदय में प्रकाशित होईये।

यहां यह रसिक भक्त की नित्य निकुञ्जेश्वरी से कुञ्ज प्रवेश की प्रार्थना कें साथ भक्ति का छटाअड़. वन्दन प्रकट हुआ है।

उपासनीयं रसिकैश्च नित्यं
श्री राधिकाकृष्णमनुग्रहेनम्।
अनन्त सौंदर्य सुधा निधानं
सञ्चिन्तयामो विपिने वरेण्यम्।। नि. सौ. ५

यहां उपास्य सौंदर्य–माधुर्य–निधी–श्रीराधाकृष्ण की मनसचित्त से अनन्य धारणा प्रदर्षित हो गई है। यह नित्यनिकुञ्ज में अन्तरड़. प्रवेश का भाव प्रदर्शन है। जो प्रभू की अन्तरड़. भावनिष्ठा से परिपूर्ण है यहां दास्य सरव्य आत्मनिवेदन आदि भक्ति के नवधा अंड़ो का समाहार है। भक्ति के नवो अंड़. व निम्बार्क सम्प्रदाय के मान्य पांच रस विशेषतः उज्ज्वल रस आचार्य श्री के सब ग्रन्थों में है।

"निकुञ्भ सौरभ" में पांचवे पद से आगे वृन्दावन धाम निकुञ्ज की अन्तरड़. से अन्तरड़. होती हुई दिव्यातिदिव्य विविध लीलाये प्रदर्शित की गई है। पूरा ग्रन्थ समग्र रस दर्शन लिए हुए है। यहां हम उज्ज्वल रस भाव प्रवण निकुञ्जलीला की दृस्यावली का उल्लेख अंकित करते है।

छटे पद में सखियों के साथ श्री राधामाधव की यमुना जल क्रिड़ा है।

अनारतं मञ्जुल केलिमग्ना, वृदाटवीरम्यनिकुञ्ज धाम्नि।
कृष्णेनसाकं हरिणाप्रियेण दिव्यानुकम्पां विदधातु राधा।।७।।

इस पद्य में रमणीय निकुञ्ज में श्री श्यामा–श्याम की अन्तरड़. रस केली है। "दोतन एक भाव" "एक भाव दो ओर" परस्पर के दिव्य रसानुराग

का यह समान भाव सम्मेलन है, आत्मा–परमात्मा का यह स्वात्मरमण है। अन्तिम पंक्ति में –दिव्यानुकम्पां विद्धातु राधा" प्रार्थना पूर्वक इस आत्म रमण को व्यक्त कर दिया है।

इस ग्रन्थ के ४५ वे श्लोक में–

"राधा प्रिया मोहन कृष्ण रूपां", राधास्वरूप रसधाम कृष्ण राधा प्रियमोहन ही श्रीकृष्ण स्वरूप है, रसधाम श्री कृष्ण ही राधा स्वरूप है "सदैक रूपं रसिकाअलि सेव्यम्" रसिक भक्त और सखियों द्वारा सेवित यह युगल स्वरूप वस्तुतः एक ही रूप है। अखिल सौन्दर्य माधुर्य सुखसिन्धु परमात्मा श्री कृष्ण व आत्मा पराश्री राधा जी की यह नित्यनिकुञ्ज लीला, आत्मरति है। यह परमानन्द स्वरूप दो एक भी है और एक दो भी।,

जहां श्री कृष्ण द्वारा राधा जी का अवलोकन होता है वसै ही ८ वें पद्य में मानकुञ्ज में श्री राधा जी श्री कृष्ण के रूप सौदर्य का अवलोकन करती हुई है।

निकुञ्ज उपासना सरणी के अनुसार वृन्दावन में यमुना तट पर सखी समूह मध्य रासविहार करने वाले श्री राधा विहारी को "स में गति" (११) स ही में गतिः स्यात (१७) एक मात्र गति एक मात्र आश्रय माना है।

अन्योन्यकेलि रसचिह्नसखी दृगोघं
सख्यावृतं सुरत् काममनोहरं चं।।३।।

"प्रातः स्तवराज में आदिआचार्य निम्बार्क ने इस निकुञ्जकेली का ध्यान किया है तथा श्री भट्ट ने युगल किशोर की सनातन रससाम्य केली को "सदा सनातन एक रस विहरत, अविचल नवल किसोर किसोरी" कह कर प्रकट किया है।

प्रार्थना पूर्वक प्रभू प्राप्ति का मार्ग यहां सहज रूप में प्रकट हुआ है।

– श्री राधिकामाधव आप्तमृग्य आगछतु प्रीतिसुरज्जुबद्धः (१२) श्री राध्ग–माधव प्रभू प्रेम डोरी से बंधकर आवें अर्थात आते है। ऐसे ही" प्रेमैक–

लब्धां रसदानशीलां प्रपन्न भक्तैः समुपासनीयाम्"(१५) दीनार्त भक्तों द्वारा उपासनीय, भक्ति रस दानशीला परमेश्वरी एक मात्र प्रेमा भक्ति से ही प्राप्त होती है

भजस्व नित्यं हरि पादकञ्ज, मनन्य भावेनः सुखेन चेतः।

ततों हितं ते चपलः स्वभावः स्थिरत्व माप्नोति न संशयोऽस्ति।।

इस ४६ वे श्लोक में–हे चित्त नित्य–भगवान का भजन कर, निसंन्देह इसी से तेरा चञ्चल स्वभाव स्थिर होगा, इसी में तेरा हित है।

इस तरह नित्य भजन की प्रेरणा उत्सर्जन कर, "भजन से चित्त चञ्चलता का निरोध होता है" यह महत्त्व बताया गया है चित्त चञ्चलता का शमन होने पर ही भगवान में चित्त लगता है। शुद्ध भक्ति भाव की उपलब्धी होती है यही परम श्रेय और परम हित है। इस तहर भगवद् भजन को परमहित कहा है।

गीतानि गायन्ति हरे र्गुणांश्च

स्वाचार्यशास्त्रे रसिकाः प्रवीणाः।

निम्बार्क वीथी पथिका वरेण्या

स्ते वैष्णना धन्यतमा ही लोके।।५१।।

सम्प्रदायाचार्यो की अनुगतिपूर्वक निरन्तर भगवद् भजन में संलग्न रहने वाले रसिक, भावुक भक्तों को लौकिक और पारलौकिक श्रेष्ठता प्राप्त होती है। यही हित है– ऐसा अभिप्राय यहां है।

परोधराऽऽभं नव पद्मनेत्रं

पीताम्बरं कर कञ्ज वेणुम्।

राधा समेतं रसकृष्ण चन्द

माराधयामो नवकिङ्.रीड्यम्।।१६।।

महारसाब्धौ नितरां निमग्नं

मयूरपिछै रभिशोभमानम्।
सुरम्य वृन्दावन धाम कुञ्जे
राधाहरिं नौम्यभिनृत्य शीलम्।।२०।।
लावण्य-कारूण्य-वरेण्य रूपः
सौन्दर्य माधुर्य गुणैक धामा।
सौगन्ध्य-सौशील्यमहापयोधिः
सार्द्धं हरिः श्री प्रियया प्रयाति।।२८।।

निकुञ्ज सौरभ ग्रन्थ के इन श्लोक में आराध्य भगवान श्री कृष्ण के रूप गुण लावण्य स्वभावादि का वर्णन है।

श्रीराधा सहित सखीजनों द्वारा सेवित भगवान श्रीकृष्ण कमलनयन, पीताम्बरधारी कर में वेणु लिए हुए नूतन जलधर के समान कान्तिमान है। सिरपर मोर–मुकुट धारण किये हुए है और श्री वृन्दावन के नित्य निकुञ्ज में रासलीला नृत्य परायण, सौन्दर्य–माधुर्य–गुण–निधि भगवान लावण्य कारूण्य सौगन्ध्य सौशील्यादि गुणप्रसाद के सागर है।

इन पद्यो में मनोहर लीलादृस्यावली प्रणतिपूर्वक प्रदर्शित की गई है–

विलोकयन्तं दयितां निकुञ्जे
चाऽन्तर्हितां नीलसरोजहस्ताम्।
श्री कृष्ण चन्द्र प्रफुल्लमुद्रं
मुदा हसन्तं प्रणमामि शश्वत।।१६।।

श्री राधा जी कुञ्जो में कहीं छुप गई है भगवान श्री कृष्ण अपने करारबिन्द में नीलकमल लिए हुऐ हास्ययुक्त प्रफुल्लमन से श्री राधा जी को कुञ्ज में खोज रहे हैं।

यहां अभिप्राय यह भी हो जाता है कि भगवान अपने प्रिय भक्तों को सदा खोजते–सम्भालते रहते है।

प्रफुल्लितेन्दीवरदिव्य माला
मादाय राधा हरिरम्य कण्ठे।
मन्दं हसन्ती परिधारयन्ती
सदामदन्तःकरणे वसेत्सा।।२१।।

श्रीराधाजी खिले हुऐ कमल की दिव्यमाला कर में लेकर मन्द–मन्द मुस्कंराती हुई श्रीकृष्ण के रमणीय कंठ में धारण करा रहीं हैं।

द्राक्षाफलान्याम्रफलानि पाणौ
निधाय सम्पड्. मधुराणि तानि।
समपिंतानीह वने सखीभिः
स्वीकुर्वन्तीं तां प्रणमामि राधाम्।।२३।।

मानो निकुञ्ज में श्रीराधाजी दिव्यासन पर विराजमान है। सखियां द्राक्षा–आम्र आदि मधुर फल लेकर इन्हें समर्पित कर रही है और राधाजी प्रफुल्लमन से इन्हें स्वीकार कर रही है।

श्री रड़. देवी-ललिता-विशाखा
चित्रा-सुदेवीतिहिता स्वरूपैः
हरिप्रियाद्यैः समलङ्कृताऽड़.
राधामुकुन्दं ह्रदि धारयामि।।३०।।

श्री राधामुकुन्द प्रभू निकुञ्ज में दिव्यासन पर बिराजे हुए है। श्री रड़.देवी श्री ललिता श्री विशाखा, श्री चित्रा श्री सुदेवी आदि अष्टसखि परिकर एवं हितु तथा हरिप्रिया जी युगलप्रभू की सेवा कर रही है।

श्री भानुजायाः पुलिने सुरम्ये
राधा प्रिया श्रीः सह किङ्करीभिः।
क्रिडाविधानेन मनो हरन्ती
मन्दं व्रजन्ती परितश्चकास्ति।।३१।।

श्री यमुना जी का सुरम्य पुलिन है। यहां श्रीराधाजी अपनी सहचारियों के साथ दिव्यरसविहार का भाव लिए हुए रासस्थली की ओर पधार रही है।

पूर्णेन्दुरात्रौ यमुना सुकूले
दिव्यां महारासनिकुञ्ज लीलाम्।
आस्वादयन्तं सहितं सखीभि।
स्तं राधिका माधवमर्चयामि।।३२।।

पूर्णिमा की सुखद सोम्य चांदनी है। यमुना जी के पावन तटीय निकुञ्ज में श्री राधा–माधव सखींपरिकारों के साथ महारास लीला कर रहे है।

अनन्तवल्लीतरूसान्द्र कुञ्ज
रन्ध्रैः समालोकयतीह कृष्णः।
राधां महाभावविलक्षणाञ्च
विराजमानां विपिने निकुञ्जे।।३३।।

श्री धाम निकुञ्ज में श्री राधा जी महाभाव की विलक्षण रसमयी अवस्था में विराजी हुई है। लतावृक्षावलियों के बीच जो छिद्र रूप झरोखे है उन में से श्री श्यामसुन्दर श्री राधाजी को निहार रहे है।

श्री मन्निकुञ्जे रससिक्तगीतैः
सखीगणानां सुमनोहराणाम्

नित्यं प्रसन्नं रसरूप धाम
राधामुकुन्दं हृदि भावयामि।।३८।।

मानो श्री धाम स्थित निकुञ्ज में युगल विहारी दिव्यासन पर विराजे हुऐ है। कुञ्जप्रविष्ट अनन्त कोटीसखीयूथ रससिक्तभाव से युगल सरकार की मधुर–रूप–गुण–लीला माधुर्य के मनोहर गीत गा रहीं हैं और राधामाधव भगवान श्रवण करते हुए अतीव प्रसन्न है।

श्री कुञ्जपुञ्जे श्रियमालपन्तं
राधांरसाधार महास्वरूपाम्
अनन्तसौंदर्यं रसैकसिन्धुं
श्रीमन्मुकुन्दं समुपासयामि।।४२।।नि.सौ.

महाभाव–रसाधार स्वरूप श्रीजी श्रीराधाजी व अनन्त सौन्दर्य रससिन्धु भगवान मुकुन्द निकुञ्ज में दिव्यासन पर विराजे हुए है और परस्पर विनोदभरी वार्ता में संलग्न है। ऐसे धाम विराजित राधामुकुन्द की हम परम्परा से उपासना करते है।

निकुन्ज लीला अनुगत भक्तिभाव–सौरभ आचार्यश्री के सब ग्रन्थों में है अब दूसरे ग्रन्थों से लीला रस का अवलोकन करते है।

"श्री युगलगीति शतक" में "स्मरेमदेवींसकलेष्ट कामदाम्" निम्बार्काचार्य की इस अनुगति में यह पञ्चचामर छन्द कितना मनोहारी है।

अनन्त कोटिनिर्जरैर्विनम्र-भाववन्दितां
निकुञ्जपुञ्जभूवने कदम्बकुञ्जराजिताम्।
प्रफुल्लकुन्दमल्लिका प्रसूनहार भूषितां
सदा स्मरामि राधिकां सखीकदम्बसेविताम्।।३२।।

श्री राधा जी निकुञ्ज भवन प्राङ्.ण स्थित कदम्ब कुञ्ज में विद्यमान है। मल्लिकादि के प्रफुल्लितपुष्पों के हार धारण किये हुए हैं। देवगण विनम्र भाव से वन्दना स्तुति कर रहे हैं और सखीपरिकर सेवाचर्या में तन्मय हैं।

रासेश्वरीं तरणिजाजलकेलिमग्नां
नानासखीपरिकरैरूपचारितांध्रिम्।
पद्मस्थिताऽलिकुलगुञ्जितमञ्जुलेन
श्री राधिकां प्रमुदितां हृदि भावयामि।।३५।।

श्री राधा जी यमुना तट समीपस्थ कमलपुष्प पर बैठी हुई है भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं। सखीपरिकर नाना अभ्यङ्. आदि से श्रीराधा के चरण कमल पूज रहे हैं और श्री राधा प्रसन्न मुद्रा में हैं।

शिरीष पुष्पादपिकोमलाङ्गी
शशीशरूपा रविजा प्रतीरे।
शरन्निशायां शशिचन्द्रिकायां
कृष्णेन साक लसति प्रिया सा।।३७।।

श्री राधा जी शिरीष पुष्प से भी अधिक कोमल अङ्.वाली है चन्द्रमा से भी अधिक शीतल आभा वाली है ऐसी अमित प्रभावाली श्रीराधा श्रीकृष्ण के साथ शरत चांदनी में यमुना तट पर शोभायमान है। यह सर्व मंगल मांगल्य प्रदान करने वाला ध्यान उपजाति छन्द में है।

भगवान अपने भक्त को मनाते हैं। मनुहार करते हैं, भक्त के भ्रम का परिहार करते है यह परम प्रभू की अहैतुक कृपा हैं। यह मानलीला व्यक्त छन्द देखिए–

वीक्ष्य स्वरूपं रविकन्यकाप्सु
परप्रिया-प्रीति-करो मुकुन्दः।

मत्वेति राधा धृत-दिव्य-माना
तां तोषयामास हरिः सखीभिः।।३६।।

भगवान श्रीकृष्ण राधाजी के साथ जल विहार कर रहे है। जल में श्रीराधा जी को श्रीकृष्ण के साथ अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। श्री राधाजी को श्रीकृष्ण के साथ अपना ही प्रतिबिम्ब पराया लगा और उन्होंने समझा भगवान तो परप्रीतिपरायण हो गये है अतः मान धारण कर लिया। तब भगवान श्रीकृष्ण ने सखियों की सहायता से श्रीराधाजी को मनाकर प्रसन्न किया।

हैयङ्.वीनं ब्रजसुन्दरीणां
प्रादाय गेहाद्यदि नन्दसूनो।
पलायनं वाच्छसि पेशल ? त्वं
बध्नामि रज्वा कर कञ्जयुग्मम्।।५४।।

मानो भगवान श्यामसुन्दर गोकुल में गोपीजनों के मध्य खड़े हैं। गोपियों से भगवान द्वारा माखन चोरी की वार्ता चल रही है ऐसे में एक ब्रज गोपी कहती है– हे नन्दलाल चुराकर भागने का यत्न करोंगे तो मैं आप के कोमल–करों को रस्सी से बांध दूंगी।

यहां यह ध्यान तो निरन्तर व बार बार करने योग्य है

ललितं नवकोमलं वपु--
व्रंज गोपीजन सेवितं मुहुः।
मुरलीरवमोहित व्रजं
व्रजचन्द्रं व्रजजीवनं भजे।।५८।।

ललित कोमल व नित्य नवीन भगवान श्री कृष्ण के स्वरूप की गोपीजन नित्य निरन्तर सेवा करते हैं। व्रजचन्द व्रजजीवन भगवान श्री गोविन्द का मुरली वादन समस्त वृजमण्डल को मोहित कर रहा है।

मधुरं माधवं वन्दे मनोज्ञं मुरलीधरं।

मोहन मन्दिरे रम्ये मुक्ताविद्रुममण्डिते।।५६।।

मुक्ता मणि मण्डित मनोहर मन्दिर में विराजित मुरलीधर माधव (सदैव वन्दनीय है) की हम वन्दना करते हैं।

आचार्य श्री के समस्त स्तव–ग्रन्थ निकुञ्ज–अनुगत भक्तिरस का सतत प्रवाह मान निर्झर है। "श्री राधाशतक" "राधा राधना" में श्री राधा के प्रधान्य में निकुञ्ज लीला का गौरवगान किया गया है–

कदम्ब-पुष्पहारेण कमनीयां शुभाऽऽननाम्।

कौशेयवसनां दिव्यां श्रीराधां भावये प्रियाम्।।६।।

सभी रचनाओं में श्रणणं कीर्तनं, स्मरणं पाद सेवनम्,
अर्चनं वंदनं दास्य–सख्य और आत्मनिवेदन भाव से नवधा भक्ति का ही उज्ज्वल रस से अवलम्बन हुआ है।

यहां उक्त पद में–दिव्य मुखारविन्द श्रीराधा जी सुन्दर रेशमीवस्त्र धारण किये हुए है, सुगन्धित पुष्पों का हार पहने हुए निकुञ्ज में दिव्यासन पर विराजी हुई है।

"श्रीराधा शतक में– निकुञ्जे हरिणा सह (२८) निकुञ्ज रास लीलाञ्च प्रियण सह राधिकाम् (३२) ताम्बुल–विटिकां नीत्वा सखीभिरर्पितां मुदा (३५) सखी निनादितै र्वाद्यैः प्रफुल्लां (४४) आम्र द्रुमावली मध्ये विक्रीऽनरतां (६४) आदि विविध लीला चरित्र का दिव्य स्मरण है।

कुछ लीला दृश्यावली हम यहां लेते हैं–

दर्शं दर्शं सखीकेलिं विहसन्तीं स्वके वने।

श्री राधां मधुरा दिव्यां प्रभाते भावयेऽनिशम्।।१८।।

अति सरस मधुर प्रभात वेला है दिव्याभा श्रीराधाजी सखीयों के साथ व्रजवन में पधारी हुई हैं। सखी समूह जो परस्पर आमोद–प्रमोद कर रहे है उन्हें देखकर श्री राधा जी मुस्कुरा रही हैं, प्रसन्न हो रही हैं।

श्री कृष्ण से मान कर विराजी राधा जी करूण स्वर से "श्री कृष्ण श्री कृष्ण" का नाम रट रही है। (२०)

श्री राधा जी व कुञ्ज विहारी श्री कृष्ण कन्दुकक्रीडा कर रहे है। (२१) मानों सावन का महिना है श्यामघनघटा छाई हुई है और मन्द–मन्द फुहार से श्री राधा जी को अभिषिक्त कर रही है (३७) सखियों के मधुर गीत–संगीत को सुनकर श्री राधा जी हर्षित हो रही हैं (५३)

हंसीगतिं व्रजन्तीञ्च कालिन्दी पुलिने प्रियाम्।
कुञ्जेश्वरेण साकञ्च श्री राधा भावये पराम्।।५५।।

श्री यमुना जी के पुलिन पर हंस की सी मन्द–मन्द गति वाली श्री राधा जी के युगल चरण कमलों की दिव्य सेवा, कुञ्ज विहारी श्री कृष्ण कर रहे है और श्री राधा अपने अराध्य के संग अत्यन्त प्रफुल्लित–चित्त व पुलकित है।

कुञ्ज पत्रावली मध्ये भोज्य पदार्थ सेवनम्।
कुर्वन्तीं हरिणा साकं श्री राधां नितरां भजे।।७४।।

श्रीराधा श्रीहरि के साथ हरितकमलपत्र पर निवेदित नाना मधुर सेवनीय पदार्थो का सेवन कर रही है।

कुञ्जविहारिणा साकं मुरली वादने रताम्।
क्षणे वादन चातुर्य मभ्यस्तां राधिकां भजे।।

कुछ क्षणों में वंशीवादन में निपुण हुई श्रीराधाजी श्रीकृष्ण के साथ वंशी वादन कर रही है।

इत तरह "श्री राधा–राधना" का निकुञ्ज–लीला स्मरण भी अत्यन्त पुण्यदायी है। श्री राधा–राधना में मुख्य रूप से सर्वत्र श्रीराधाजी का ही दिग्दर्शन है।

राधां राधां सदा राधां श्री राधां रससम्पदाम्

वृन्दावन निकुञ्जरथां दिव्याऽऽभां नोमि राधिकाम्।।२५।।

नीलाम्बर प्रभायुक्तां सखी चामरसेवताम्।

कोटीन्दुसौभगां राधां भजेहं राधिकामहो।।२८।।

"श्री सर्वेश्वर शतक" में भी श्री सर्वेश्वर श्रीकृष्ण की महिमा पूर्वक, निकुञ्जरस बोधक प्रसंगो का ही वर्णन, वंदन है।

राधांया प्रियया साकं सखीभिः परिसेवितम्।

रासलीलारतंदिव्यं नौमि सर्वेश्वर प्रभुम्।।२३।।

अनन्त किङ्करीवृन्दै राधायाप्रियया सह।

महारासरतंरूच्यं नौमि सर्वेश्वर प्रभुम्।।२७।।

भगवान श्रीकृष्ण श्रीराधा के साथ अन्तरंग सखी समूह में महारास में अभिरत है।

सौरी-गम्भीरधारायां राधाया सह माधवम्।

नौकाविराजितं सायं, नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।२६।।

भगवान श्री कृष्ण राधाजी के साथ संध्या समय यमुनाजी की मध्यधारा में नौका में विराजे विहार कर रहे है।

कदल्यम्बुजपत्रस्थ बहुविधफलान्यपि।

स्वादयन्तं रसागारं नौमि सर्वेश्वर प्रभुम्।।३२।।

द्राक्षाऽऽम्र-कदली-जम्बू-नारङ्गी-दाडिमानि च।

अदन्तं राधिकाकृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।३३।।

भगवान के श्री विग्रह की मन्दिर में जाकर सेवा को देखना, दर्शन करना भगवान की लीला व सेवा का स्मरण करना, मानसिक व हार्दिक सेवा है इस से सेवा–भक्ति के अङ्गों का पालन होता है।

पूर्वोक्त श्लोक में लीला स्मरणपूर्वक भगवान को विविध फलाहार अंगूर आम केला जामुन सन्तरा आदि केला कमल की हरित पत्रावली पर नैवद्य अर्पित किया गया और भगवान उस का सेवन कर रहे है। हमें स्मरण से भगवान की नैवेद्य सेवा का फल प्राप्त होता है। ऐसा ही सब प्रसंगों में है।

कन्दुक-क्रीड़ने मग्नं सखीभिराधयासह।
भानुजा पुलिने रम्य नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम।।३५।।

श्री राधाकृष्ण सखियों के साथ यमुना पुलिन पर कन्दुक क्रीड़ा कर रहे है।

जिन श्री कृष्ण को जगत रटता है वे जगतपति श्री राधा को रटते हैं।

राधाराधेति राधाति वदन्तं श्री मुखेन वै।।
श्रीमुकुन्द गोविन्दं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम।।४१।।

श्री गोविन्द–श्रीराधे श्रीराधे श्रीराधे !!! इस मधुर नाम ध्वनि का उच्चारण कर रहे है।

आदाय श्रीवने राधां राजेश्वरीं हरिप्रियाम्।
व्रजन्तं विहसन्तञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।४५।।

वन्दनीय भगवान श्री राधा–कृष्ण परस्पर गलवैया दिये हुऐ मन्द स्मित मुख से विहार कर रहे हैं।

नवनिकुञ्जहर्म्ये च कुसुमसौरभान्विते।
हेमसिंहासनासीनं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।४६।।
स्वर्ण चामर हस्तैश्च पुष्प स्तवकराशिभिः।
सखी वृन्दैः समाराध्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।४७।।

कदम्बकुसुम स्तोम मञ्जुल माल्यविभूषितम्।
दिव्यसौरभसयुक्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।८५।।

भगवान श्रीराधासर्वेश्वर पुष्पों से सुगन्धित नित्यनव–निकुञ्ज में स्वर्ण सिहांसन पर विराज–मान हैं। हाथ में पुष्प लिए स्वर्ण मण्डित चवरों को सखी वृंद डुला रही है। भगवान कदम्बपुष्प की सुन्दर सुगन्धित माला पहने, अतिशोभा–सम्पन्न लग रहे हैं भगवान का यह वपु गुलाव जल से अभिषिक्त और दिव्य सौरभ से सुरभित है।

काश्मीर दिव्य पङ्केन तिलकाऽऽचर्चिताऽऽननम।
उर्ध्वपुण्ड्रेण राजन्तं नोमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।६०।।

वन्दनीय भगवान केशर के कमनीय उर्ध्वपुण्ड्र तिलक को धारण किये हुए अतिशय सुशोभित हो रहे है।

इसी तरह "जलं विहारलीलायां निरतं" ६१ श्लोक में जल विहार लीला है ६२ में वसन्त ऋतु की प्रभात वेला का ६४–६५ में अष्टसखी सेवा का ८६ में रथारूढ श्री राधा कृष्ण विहार का ८१ में हिंडोला ८२ में भोजन कुञ्ज का व ८३ में होली उत्सव का, प्रभू की मनोहर लीला स्वरूप का वर्णन है।

अखिलेशं महाधीशं श्री गोपीजनजीवनम्।
शुद्ध सनातनं मूलं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्।।६७।।

हृदयानन्द वर्धक सुख दाता वृन्दावन लीलाधीश कुञ्जगामी श्री राधाकृष्ण निकुञ्ज लीलाधीश की प्रेरणा प्रदान की गई है।

वृन्दावन कालनाथों हृदयानन्द वर्धनौ
सुख दो राधिका कृष्णों भजेहं कुञ्जगामिनौ।

(परम्परागत ध्यान)

श्री गोविन्द दास जी "सन्त" ने ग्रन्थ के आमुख में "दो शब्द में लिखा है– "श्री राधा–माधव शतक" श्री वृन्दावन बिहारी प्रिया प्रियतम लाल युगल किशोर श्यामा–श्याम की अन्तरंग रहस्मयी लीलाओं से ओतप्रोत है।

इस के श्लोकों के पूवार्द्ध (प्रथम आधे भाग) में श्री निकुञ्ज की वि़विध रसमयी लीलाओं का वर्णन है और उत्तरार्ध में (पिछले आधे भाग) में "राधा–माधवमाराध्यं भजेद्वृदानवधिपम्" ऐसा पाठ सभी श्लोको में है।

श्री राधा माधव शतक में– श्री राम गोपाल शास्त्री जयपुर ने आमुख लेख "भाव–प्रसूनाञ्जलि" में इस ग्रन्थ के विषय में लिखा है– प्रस्तुत रचना में विशुद्ध निकुञ्ज लीलाओं का स्मरण व मानस साक्षात्कार किया गया है।"

"श्री राधा माधव शतक" में निकुञ्ज लीलाओं का स्मरण व मानस साक्षात्कार सर्वाङ्. भक्ति–भाव के साथ हुआ है।

कदम्बपुष्पकुंञ्जेषु स्वर्ण सिंहासने स्थितम्
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृदावनाधिपम्।।२।।

कदम्ब पुष्प कुञ्ज में स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान उपासनीय श्री राधामाधव का भजन करे। ऐसे ही–

कालिन्द्या मञ्जुले कूले कञ्जकुञ्जे मनोरम्।

श्री यमुना जी के रमणीय तट के कमल कुञ्ज में विहरत परम मनोहर आराध्य श्यामाश्याम का भजन करें।

मल्लिका मालया मञ्जु चारू चन्दन चर्चितम्।।७।।
रासलीला धंर दिव्यं रसधाराऽवगाहिनम्।।१०।।
भ्रमरै गुंञ्जिते रम्ये श्री वने नित्यशोभितम्।।२२।।
शिखिपिच्छधरं बह्म वरेण्यं परमेश्वरम्।।२७।।

सखीभिः सार्द्धमानन्दं नृत्यन्तं रासमण्डले।।३०।।

वंशीवट तटे नित्यं रासलीलालसद्धरिम्।।३६।।

कदम्बतरू दोलायां दोलयन्तं दयार्णवम्।।४१।।

कलयन्तं महाकेली वसन्ते होलिको उत्सवे।।५४।।

भुञ्जानं भोजनं कुञ्जे सुस्वादुमधुरं वरम्।।५५।।

अमित आवृतं कुञ्जे मयूर सारिकादिभिः।।५६।।

स्वी-करारविन्देन यच्छन्तमभयं सदा।।६१।।

नाना सरोवरे क्रीडा माचरन्तं रसात्मिकाम्।।६८।।

अञ्जनाक्षं महादक्षं प्रियं कौस्तुभवक्षसम्।।६२।।

कहीं यमुना के रमणीय तट़ के कमलकुञ्ज में कहीं मल्लिका माला व चन्दन से चर्चित हुऐ कहीं रास लीला मे रत कहीं भ्रमर गुञ्जारित वन में कहीं मोरपिच्छ धारण किये हुए कहीं सखियों के साथ नृत्यरत, वंशीवट पर रास लीला रत, कदम्ब तरू पर हिंडोला झूलते हुए कही वसन्त और होलिका उत्सव रत, भोजन कुञ्ज में सुस्वाद भोजन पाते हुए, मयूर और सारिका आदि से घिरे हुऐ, सरोवर में क्रीड़ारत, आंख में अञ्जन व वक्ष पर कोस्तुभ धारण किये हुए श्री राधा माधव का दिव्यालोक प्रकाशमान है–

रासलीला महालास्य प्रवीणौ रास मण्डले।

राधाकृष्णौ कृपाकोषौ नमामि व्रजबल्लभौ।।८।।

निकुञ्ज सरसि रम्ये मञ्जुल पङ्क.जान्विते।

श्यामाश्यामो भजे प्रात दिव्याऽम्भः केलि मञ्जुलो।।१०।।

तुलसी मञ्जरीमाला मञ्जुलौ नलिनाननौ।

युगलौ राधिका कृष्णौ नितरां भावयेऽन्तरे।।१४।।

श्री युगलो रथारूढौ सखी वृन्द सुसेवितौ।

समुपास्यौ व्रजालीभी राधासर्वेश्वरौ भजे।।१५।।

रासलीला का कमलपुष्पों में शोभित, तुलसी मञ्जरी माला धारण किये, सखी सेवित, रथारूढ श्री युगल विहारी की विविध लीलाओं का चित्राकंन है

श्रीमद्भागवद् में देवर्षि नारद जी वेद व्यास जी को कहते हैं–

इदं हि पुंसरत्तपसः श्रुतस्य वा रिवष्टस्य सूक्तस्य च वुद्धिदत्तयोः।

अविच्युतोर्ऽथःकविभिर्निरूपितो यदुत्तमश्लोक गुणा नुवर्णनम्।।२२।।१-५

विद्वानों के अनुसार, तप अध्ययन यज्ञ स्वाध्याय ज्ञान व दान आदि मनुष्य द्वारा किये जाने वाले कर्मो का प्रयोजन–श्री कृष्ण चिन्तन में मन लगे और श्री कृष्ण की भावमयी गुण लीलाओं का प्रचार हो, यही है। यह तप अध्ययन यज्ञादि परमप्रभू–श्री कृष्ण के लिए श्री कृष्ण को अर्पित श्री कृष्ण की भक्ति व कुंजलीला कथा का प्रसार करने वाले हो।

आचार्य श्री के तप अध्ययन यज्ञ स्वाध्याय ज्ञान व दान आदि सब कर्म सर्वविध श्री राधाकृष्ण को समर्पित है और श्री युगल विहारी के कीर्तनीय गुणानुवाद में आप श्री की लेखनी से समुद्भूत यह रचनायें भी स्वकीय भक्ति भाव के साथ भगवद् भक्ति के प्रचार–प्रसार में संलग्न है।

श्री कृष्ण के अवतार चरित्र का वृंदावन में महारास तक का जो चरित्र है वह विशेषप्रेमभक्ति की या प्रेमयोग की जीवन्त व्यवहार किया है। प्रेमभक्ति के लिए भाव की आवश्यकता होती है और यह भाव ही यहां रस कहे गये हैं। भगवान ने इस प्रेम योग को सिद्ध करने के लिए पहले महाभाव श्री राधाजी को वृन्दावन में प्रकट किया, वात्सल्य शान्त सख्य दास्य माधुर्य आदि भावरस समन्वित पुण्यात्माओं का यहां सम्मेलन हुआ। इस प्रेमयोग में बाधक तत्वों का संहार व मानमर्दन करते हुए भगवान श्री कृष्ण ने भी इन भाव–रसों को पुण्यात्माओं में यथायोग्य रूप से समुन्नत किया। इन भाव–रसों को जो सर्वोच्च महाभाव अर्थात अविछन्न प्रेम स्वरूपता प्राप्त हुई, वही **महारास** है।

महाभाव रूप होने से श्री राधा जी इन भावरसों की प्रमुख है व इस महाभाव की नायक होने से रसस्वरूप व प्रेम स्वरूप है।

भगवान ने जब सभी रस चरित्रों का परम अभ्युदय कर दिया तब शरदकालीन रात्रि में यमुना तटीय निकुञ्ज पर वंशीवादन कर महाभाव लीला का अनुष्ठान किया। जिन में परिपूर्ण प्रेम का आवेश हो गया था वे गोपाङ्.नाये दौड़ी चली आई। भगवान ने परीक्षा लेने के लिए कहा– रात को अपने पतियों को छोड कर क्यों आई हो ? चली जाओं। गोपियों ने कहा–जैसे भक्तों पर भगवान नारायण कृपा करते हैं वैसे ही हमें स्वीकार करो। आप सर्वआत्मन है, आपने देखते ही देखते हमारा मन मोह लिया है। अब हमारा चित्त घर के काम धन्धों की और अग्रसर नहीं है, तुम ही हमारी गति–मति और सुख हो, आप पतियों के भी पति और समस्त देह धारियों के पति हो।

सिञ्चाङ्. नरस्त्वदधरामृतपूरकेण हासावलोककलगीतज हृच्छयान्गिम्।
नोचेदंवयं विरहग्न्युपयुक्तदेहाध्यानेनयाम पदयोः पदवीं सखे
ते।।३५।।(श्री मद् भागवद् स्कं-१० अ० २६)

हे सखा ! हे प्राणबल्लभ ! तुम्हारी मन्द मन्द मुस्कान, प्रेम भरी चितवन व मनोहर संगीत ने हृदय मे मिलन की प्रेम उत्कण्ठा जगा दी है जिसे तुम अपनी मधुर कृपा रसधार से बुझाओ अन्यथा हम अपने शरीर को विरहाग्नि में जला लेंगी और ध्यान से तुम्हे प्राप्त करेंगी।

गोपियों का दृढ़निश्चय था–प्रभू को प्रेमभाव के साथ प्राप्त करना है। और यह भी यहां ज्ञात होता है कि प्रभू का प्रेमभाव सबन्ध ध्यान से भी होता है।

इस तरह "रसानां समूहो रासः" रसो का समूह महारास हुआ। सभी भाव चरित्रों को यथायोग्य रीति से श्री राधाकृष्ण की सन्निधि में महाभाव प्राप्त हुआ।

भगवान ने श्री यमुना तटीय निकुञ्ज में किङ्करीजनों को सहचरीभाव प्रदान किया। कुञ्जमहल, यह लता वृक्षादि से घिरा वन वृक्ष, लता, पुष्पादि से आच्छादित निकुञ्ज सर्वथा विकार रहित व दिव्य–शान्त और सौम्य है। ऐसे ही इस निकुञ्ज लीलाके सखीजन परिकर है जिनमें विकार लेश मात्र भी नहीं है। अतः यह निकुञ्ज लीला सर्वथा निर्विकार सौम्य व मधुर है।

देह मन प्राण का भाव से, भाव का रस से सम्बन्ध है अतः रस का देहाङ्. व भाव से सम्बन्ध हो जाता है। जो सर्वथा निर्मल सुन्दर–सौम्य व अलङ्कारित हो वही श्रृङ्.ार है। यह सुन्दर सौम्य दिव्य–श्रृङ्.ारित भाव–प्रवण लीला ही श्रृङ्.ार–लीला है। प्रेमोन्मुक्त भाव में विभिन्न क्रीड़ाये होती है इस तरह यह निर्मल स्वरूप की निर्मल प्रेमोन्मुक्त क्रीड़ाये निकुञ्ज लीला में परिवर्णित है।

भावुक, भक्तिअङ्. पालन पूर्वक प्रभू–उपासना करके निकुञ्ज अनुगत लीला रस (महाभाव) को प्राप्त कर सकता ।

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्
श्रवणमङ्गलं श्रीमदततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः।।६।।
प्रहसितं प्रियं प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमंगलम्
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि।।१०।।
श्री मद् भा. दशमस्कन्ध अ. ३१-

श्री हरि/आप की भक्ति–विरह में तप्त हुऐ भक्तों के लिए आप की लीला कथा अमृतस्वरूप है। बड़े–बड़े ज्ञानी–महात्मा और कवि आप की लीला का गान करते हैं। आप की सरस लीला पाप–ताप का शमन करती है इसके श्रवण मात्र से ही कल्याण होता है। वस्तुतः आप लीला–कथा का दान करने वाले सब से बड़े दाता है।

प्यारे किसी–किसी दिन हम तुम्हारी प्रेम भरी हंसी, चितवन और मधुर क्रीड़ाओं का ध्यान करके आनन्दमग्न हो जाया करती थीं। यह ध्यान परममड़्ल दायक है इसी ध्यान के परिणाम से तुम मिले हो। तुमने एकान्त में हमसे हृदयस्पर्शी ठिठोली की, प्रेम भरी बाते करी, तुम्हारी यह याद, तुम्हारी यह बातें हमारे मन को क्षुब्ध करती हैं। मन का यह क्षोभ विषयों में विरक्ति व प्रभू प्रेम रति प्रदाता है।

श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाय गोपीभाव अनुगत निकुञ्ज लीला रस का अनुगामी है। आचार्य श्री ने इसी भाव के अनुगत निकुञ्ज लीला का प्रणयन किया है।

आचार्यश्री द्वारा प्रणीत स्तव नित्य गाकर प्रभू की स्तुति करने योग्य है। इनमें व्यक्त प्रभू–महात्म्य व सरस लीलाओं से प्रभू–कृपा रूप परमभाव की प्राप्ति हो सकती है। इन का पठन–श्रवण सांसारिक पाप–ताप का शमन करने मे सक्षम है।

"श्री स्तवरत्नाञ्जलिः" में अनुवादक श्री रामगोपाल जी शास्त्री, जयपुर ने लिखा है– "स्तव रत्नों की इस अञ्जलि में स्वतः महान प्रकाश है। अनुपम साधना है। प्रसाद व माधुर्य गुणों की अहमहमिका भाषा में प्राञ्जलता को ला रही है। इस का प्रत्येक वर्णन मन्त्र रूप है।

स्तवों के मूल पाठ में ही इतना चमत्कार है कि नित्य पाठ करने वाले भक्त जनों के लिये तत्काल आनन्द की प्राप्ति होती है एवं उन के मनोरथ शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं।

कोटिन्दु लावण्य प्रकाशराशिं।
श्री खण्ड पङ्काङ्कित दर्शनीयम्।
भक्तेप्सित-स्वाश्रयदानशीलं
स्मरामि राधा पद कञ्जयुग्मम्।।(श्रीस्तवरत्नां श्री राधाष्टक-७)

श्री राधा जी महाभाव रूपा हैं भक्ति के समस्त भाव समूहों की स्वामिनी हैं भक्ति के समस्त भाव चरित्रों की आश्रयदाता है सभी भावुक भक्तों को यथाभाव अनुग्रह–पूर्वक स्वाश्रयशील है।

श्री राधा जी का रूपलावण्य कोटि–कोटि चन्द्रमाओं की प्रकाश राशि से भी अधिक है अपरिमित है तथा यह शीतल श्रीखण्डचन्दन का लेप किये हुये हैं।

करूणाऽमृतसिन्धु भरा मधुरा
रसिकैरूपसेवितहर्ष धरा।
प्रियमाधव चञ्चल चित्तहरा
व्रषभानुसुता जयतीह मुदा।।६।। (श्री स्त.र. श्री वृषभानुसुताष्टक)

श्रीहरि, प्रेम के अधीन है और राधाजी समस्त भाव का निकाय रूप आश्रय या समुद्र है अतः प्रेमरसरूप माधव का चञ्चल चित्त भी श्री राधा हर लेती है। करूणामृत श्री राधा हर्षाह्लाद से परिपूर्ण है ऐसे वृषभानुलडैती का हर्षपूर्वक जय जय कार हो।

सखीवृद समाराध्यां कालिन्दी तीर शोभिताम्
कोकिला-कीर-संगीतां भाव ये राधिकां सदा।।२।।
(श्री यु.स्त.विं. श्री राधा)

श्री यमुना तट पर शौभित, सखी समूह द्वारा पूजित कोयल, तोता आदि पक्षी गणों द्वारा यशगीयमान उपासनीय राधाजी का भावना पूर्वक स्मरण किया गया है।

भक्तिभाव के जीवन का भी जो जीवन है अर्थात जो भक्ति भाव का परमाधार है रस का आलय है रमणीरूप जीवात्मा में रमण करने वाली है रस कुञ्ज की स्वामिनी श्री राधा जी का नवनिधि रूप महालक्ष्मी सेवा

करती है। अर्थात् कुञ्ज में नवनिधि रूप विद्यमान रहती है।(५) (यु.स्त.विं. रा.र.)

दिव्य केली नव रास मण्डले
माघवेन सह लास्य सोत्सुकाम।
अलिभिश्च रसकेलि भाविताम्
राधिकाम सरसौभगां भजे।।५।।
(श्री यु.स्त. विं. श्री राधाप्रियाष्टकम्)

नवरास मण्डल में सखी समूह सहित लीलारास केली को उत्कण्ठित हुई श्री राधा की उपासना की गई है।

श्री कृष्णमव्ययं नित्यं राधिकादक्षिणे स्थितम्।
विभुं क्षराक्षरातीतं हरि सर्वेश्वरं भजे।।१।।
(श्री यु.स्त. वि. श्रीकृष्णाष्टकम्)

श्री कृष्ण अव्यय अर्थात पूर्ण स्वरूप है सर्वत्रव्याप्त है नित्य सनातन है क्षरा–अक्षरा तीत सर्वनियन्ता है। ऐसे सर्वेश्वर हरि श्री कृष्ण का भजन किया गया है।

वृंदावनाधिपं कृष्णं पूर्णब्रह्मसनातम्।
राधासर्वेश्वरं देवं प्रभजेऽङ्सखीवृतम्।।४।।
(श्री यु.स्त. वि. श्री सर्वेश्वराष्टकम्)

उपासनीय श्री वृंदावनधीश्वर सदासनातंन पूर्णब्रह्म नित्यलीला निकेतन है।

नित्य हरि कर कञ्जयुग्मेः।
प्रद्योतमानो व्रजकिंकरीभिः।
उपसनीय कलनादकारः
श्री कृष्णवेणू रसयेत्कदान।।२।।

श्री कृष्णचन्द्र के युगल कर कमलों में सुशोभित "क्लि" नाद का उच्चारण करने वाली श्री कृष्ण,वेणु है। निकुञ्ज रास का आह्वान श्री कृष्ण, वेणु द्वारा ही करते है।

वनकेली करं रसरासधरं
प्रतिकुञ्जगतं प्रतिपत्रततम्।
प्रभजेप्रियराधिकया प्रियया
सहमाधवमञ्चित मालिजनेः।।४।।(स्त.र.मा.)

रसरासधर श्रीराधामुकुन्दविहारी विपिन राज के प्रतिकुञ्ज निकुञ्ज में पधारते है जहां कुञ्ज लता भी प्रेमविभोर होकर श्री राधाकृष्ण का जय–जय कार रहे है।

निखिल भुवन चन्द्रो रासलीला विहारी
सखिपरिकरमध्य शोभितः श्री निकुञ्जे।
अनुपम-मणिमुक्ता कान्ति कोटि प्रकाशे।
स्फरन्तु मनसि राधा माधवः केलिसन्धुः।।४।।(स्त.र.रा.मा.)

श्री रास लीला विहारी सम्पूर्ण भुवन कोष के चन्द्रमा हैं। क्यों हैं। क्योंकि चन्द्रमा समष्टि मन का स्वामी व मन के समस्त भावों का अधीपति है। निकुञ्ज लीला जो उज्ज्वल माधुर्य भाव है। जो रसानन्द कोष आनन्द भाव है उस आनन्दमय कोष के यह रसविहारी श्यामा–श्याम चन्द्रमा है। अर्थात रसविहारी चन्द्रमा को भी प्रभावित करने वाले चन्द्रमा के भी चन्द्रमा है; निकुञ्ज में यह सखियों के साथ, समूह के मध्य मणिमुक्ताओ की छवि सम प्रकाशमान है।

राधा हृदागारनिमज्जिताय
निकुञ्जलीलारतिवर्धकाय।

कालिन्दी कूले रसलासिताय

नमोस्तु सर्वेश्वर माधवाय।।४।। (श्री स्त.र. श्री सवैश्वराष्टकम्)

महाभाव स्वरूपा श्री राधाजी के हृदय से समुद्भूत माधुर्य रस में निमञ्जन करने वाले जमुना जी के रमणीय कूल पर नवलीला विलास के सम्वर्धक रसोल्लास में निमग्न श्री सर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार।

जयति राधिका वल्लभौ हरीः

स्मर विमोहनः श्रीवनाधिपः।

नवलकिङ्करी यूथ सेवितो।

नलिनलोचनः कृष्णलालनः।।२।।

(श्री स्त.र. श्री यु.गी.)

कोटि कामदेवो से भी अधिक लावण्यमय निकुञ्ज सखियों के समूहों द्वारा सेवित लाल कमल नेत्रवाले राधिका वल्लभ की जय हो।

सुशिखि चन्द्रिका मौलिधारिणं

कनक कुण्डल चन्दनाऽङ्कितम्।

कुसुम मालया मञ्जुविग्रहं

रसविहारिणं भावयेऽनिशम्।।१०।

मस्तक पर मोर मुकुट, कानों मे मकराकृत कुण्डल, चन्दन चर्चित श्री विग्रह, गले में सुगन्धित बनमाला वाले उपास्य श्री हरि का यह अनिर्वचनीय दिव्यरूप है।

सौन्दर्य-माधुर्य-महार्णवाय

सर्वप्रियायाऽम्बुज लोचनाय।

नामोऽस्तु नित्यं रसिक प्रियाय

निम्बार्क गोपीजनबल्लभाय।।५।। (नि.गो.)

सौन्दर्य, माधुर्य लावण्य, कारूण्य आदिगुणों के महासमुद्र सर्वजन प्रिय कमलदल–लोचन, रसिकजनप्रिय श्री निम्बार्क गोपीजन वल्लभ को हम प्रणाम करते हैं।

गोपाल ! कृष्ण ! नलिनप्रियमञ्जुमाल्य
शोभायमान ! सततं विपिने सुरम्ये।,
सर्वार्थ सिद्धिवरद ! वृजनन्द सूनो !
मां पाहि माधव ! विभो ! नितरां प्रपन्नम्।।८।।
(श्री माधव प्रपन्नाष्टकम्)

सुरम्य श्री वृंदाविपिन में कमलपुष्प की मञ्जुलमाला से सदा शोभायमान प्रपन्न भक्तों के समस्त मनोरथ व समग्र सिद्धियों को देने वाले व्रजेन्द्र नन्दन गोपाल ! कृष्ण ! सर्वज्ञ ! सर्वेश्वर ! माधव, प्रभो ! आप के चरण शरणागत का संरक्षण करें अनुग्रह करें।

अध्याय–7

हार्दिक भावोद्गार

आचार्य श्री की यूँ तो समस्त रचनायें ही स्तुति परम होने से भगवान के रूप–लीला–गुण–विरद से परिपूर्ण, स्मरण–ध्यान आत्मनिवेदन परक है। किन्तु कई पदों में स्वयं का हार्दिक भाव द्रवित होकर रचना में प्रवाहित हुआ है।

भावुक साधक अपने ईष्ट की स्मृति, चिन्तन, कीर्तन, सेवादि में सतत संलग्न रहता है तब हृदय में दैन्य भाव द्रवता उत्पन्न होती है। इस भावावस्था में हावभाव, सेवा, विनय आदि जो क्रिया–कलाप होतें है वे स्वतः हार्दिक होते है। प्रभू के प्रति यह हार्दिक भावापन्नता ही प्रेमविशेष–भक्ति का स्वरूप है।

"श्री राधा शतक" के प्रारम्भिक लेख में लिखा है–आराधना क्रम में प्रगाढ़ भक्ति के साथ जब आराध्य का चिन्तन होता है तब तन्मयता की स्थिति आती है इस तन्मयता में आनन्दानुभूति से अनन्तानन्तभाव हृदय में समुद्भूत होते जाते है। वे ही भाव जब शब्द रूप में बाहर व्यक्त होते है तब वे मनोहर स्तोत्र बनकर श्रद्धालु भावुक जनों के लिए भक्तिपूर्ण उपासना में अवलम्बन हो जाते है।

पढने–सुनने गुनने वालों को यह भावोद्‌गार हार्दिक भक्ति रस का आस्वादन कराते है।

कथन्न रे मानस ! मोह मुग्ध
श्री धाम वृन्दावन मेषि तूर्णम्।
यत्राऽस्ति राधाहरि नित्यलीला
तद्वासलिप्सा सुतरां विधेया।।६।।(श्री यु.गी.श.)

विषयों की आसक्ति ही मन की मुग्धता है। जब तक मन जगत से मोहित है प्रभू की तरफ नही जाता। जो मन प्रभू में आसक्त है वह जगत में रहते हुए भी श्री हरिकृपा वैभव में ही रमण करता है। इस दोहरी गति के मन को जगत की मोह मुग्धता से ताड़ित करते हुऐ कहा है–हे मानस श्री धाम वृन्दावन की ओर क्यों नही जाता। मानस शब्द से अन्तः बाह्य सब कृति वृत्तियां आ गयी है जो मनस् चित्त वृति में धारण होती है। मोह ग्रस्त मानस का केन्द्र जगत होता है व श्रद्धावान मानस का केन्द्र सात्त्विक सदाचार मय कृतिवृति के साथ ईष्ट का, धाम, लीला–चरित्र, नाम–स्वरूप और विरद होता है। जो मन के केन्द्र है वही लक्ष्य होते है, वही ध्येय होते है। अतः यहा कहां है–हे मन मोह मुग्ध होकर अपने लक्ष्य से विचलित क्यो होता है अपने लक्ष्य पर केंद्रित हो श्री धाम वृन्दावन की ओर चल जहां अपने आराध्य अपने ध्येय श्री राधा हरि है और इन के नित्य लीला विहार का आनन्द है। इतना ही नहीं यहां श्री धाम में भलीप्रकार भावलिप्सा से आबद्ध होकर रहने की वाञ्छा कर।

वैराग्य वृत्तिं परिधार्य सम्यग
वृंदावने माधव धामरम्ये
वसन्ति नित्यं युगलाड.घ्रिलीना
धन्यास्तु ते वैष्णव नाम धेयाः।।७।।श्री.यु.गी.

जगत विषय की मोह आसक्ति मय ऐषणाओं से मनस चित्त का उपराम हो जाना वैराग्य है। निष्काम भाव से अपने कर्तव्य कर्म को करना और संयम पूर्वकर रहना वैराग्य की भली प्रकार अर्थात उत्तम धारणा है। वैराग्य धारण के साथ प्रभू–श्रद्धा–शरणागति पूर्वक भक्ति–भाव में प्रवृत रहना वैराग्य वृति है।

मोहमाया आसक्त सभी कर्म अविद्या है अज्ञान है। सर्वज्ञ सर्वनियन्ता सर्वाधार श्री राधासर्वेश्वर की शरणागति पूर्वक निष्काम कर्तव्य कर्म करते हुए प्रभू भक्ति में तत्पर रहना, यह वैराग्य वृति धारक की ज्ञान धारणा है। वस्तुतः वैराग्य वृति धारक विद्या व अविद्या को भलि प्रकार जान जाता है व विद्या अर्थात ज्ञान का अवलम्बन ले लेता है। यहां पद्य में वैष्णव नामधेय, वैराग्यवान सत्‌पुरूषों को हार्दिक धन्यवाद प्रेषित किया गया है जो श्री धाम वृन्दावन में रहते हुऐ श्री राधा–माधव की सेवाभक्ति में लीन है।

श्री धाममह्यारजसा स्वदेहं
प्रालिप्य सर्वं रसिका वरेण्याः।
स्वापास्यनिष्ठाऽ भिरताः रसज्ञाः
सौभाग्यवन्तो विहरन्ति धाम्नि।।८।।श्री यु.गी.श

श्री धामवृन्दावन की परम–पवित्र–रज से अपनी सम्पूर्ण देह को विभूषित कर अपने उपास्य की निष्ठापूर्ण भक्ति में संलग्न है–वे रसवेत्ता, रसिकजन, साधु, भक्त परमसौभाग्य शाली है। अपने इष्ट श्याम–श्यामा की लीला–भूमि वृन्दावन की रज को भावापन्न होकर अपने शरीर पर मल लेना यह विशेषप्रेमराग का परिणाम है। निश्चय ही जो भगवद् भावानुराग से सम्पन्न है वे पूज्य है आदरणीय है।

यहां दोनों पद्यों में श्री धाम का व साधु भक्तों के प्रति हार्दिक आदर व धन्यवाद प्रकट किया गया है।

संत्यज्य सर्वं भवमोह जालं
भयावहं भीषण काल रूपं।
नित्यंभजस्व व्रजधाम मूलं
वृन्दावनं रे मन ! आप्तमृग्यम्।।११।।

यह संसार तो मोह का जाल ही है। जो इस जगत में पुत्र वित्त मानादि ऐषणाओं में बंधकर कर्म प्रवृत रहता है, वह काम, कोध ईर्ष्यादि विकारों द्वारा मोह ज़ाल को लपेटता रहता है जगतजाल से निवृत नहीं होता, जगत–क्लेश की आवृति से पीडित रहता है। इस जगत क्लेश की निवृति के लिए चेतना प्रदान करता हुआ यह श्लोक है।

हे मन ! भीषण जगज्जाल रूपी जगत आसक्ति का त्यागकर और उस व्रजधाम तथा धामाधिपति श्री राधा माधव का भजन कर जिन का निवृतकाम साधुजन भजन करते है।

चलरे चेत ! सुचपल ! श्री वृदारण्य धाम-वासय।
पथि माचिन्तय नितरां कृष्णः कुशलं करोत्याशु।।१२।।

ये चित्त बड़ा चञ्चल है ! मीरां जी ने कहां है– यो मन म्हारों बड़ो हरामी ज्यूँ मदमातो हाथी। सदगुरू हाथ धर्यो शिर ऊपर अंकुश दे समझाती।।" यह मन मदमाते हाथी के समान चञ्चल है। गुरू रूपी वरदहाथ अर्थात नाम दीक्षा शिष्ठाचार संस्कार के पालन बार बार स्मरणभजन से समझता है। "श्री वृन्दावन सीमा के बाहर हरि हू को न निहार" (श्री भट्ट) के अनुसार श्री वृन्दावन धाम व वृन्दावन धीश की ध्यान व उपासना यहां चरितार्थ हुई है।

हे चित्त चञ्चलता त्याग कर वृन्दावन धाम को चलो। मार्ग की चिन्ता मत करो। क्योंकि "योगक्षेम वहाम्यहं" (गीता) भगवान ने स्वयं कहां

है कि–भक्तों के योगक्षेम की मै स्वयं रक्षा करता हूँ। अतः विश्वास कर भगवान श्री कृष्ण सब प्रकार से मंगल करेंगे।

कदा श्री गोविन्दाऽऽधररस सुधांऽऽस्वादरते
व्रजाऽऽलीनामन्तर्मनसिममतावर्द्धनपरे।
रसज्ञैराराध्ये ! प्रचुररस-दान-प्रमुदिते
भवेत्त्वन्निस्वानो हरिमुरलिके ! मे श्रुति गतः ।।२८।।

वंशी भगवान श्री कृष्ण के मन–वचन–प्राण से जुडी हुई, भाव रस गंगा का वह प्रेम रस श्रोत है जिस से निकलता हुआ स्वर भावुक भक्त सखी जनों को दिव्य प्रेम रसामृत का पान कराता है। श्री कृष्ण की वंशी स्वर डोरी से आबद्ध होकर गोपियां निकुञ्ज के महारास में प्रविष्ट हुई थी। आज भी भावुक प्राज्ञ जन उपासना परिपक्व होने पर इस वंशी स्वर का नाद सुनते है इस पद में रसज्ञे का उद्धरण देकर इस तथ्य को पुष्ट किया गया है।

श्री गोविन्द के अधरामृत निक्षित, वृज गोपाङ्गनाओ ओर रसिक जनों को मधुरनाद का दान कर प्रेमानन्द वर्धन व प्रेमानन्द से आबद्ध करने वाली हरिमुरली ! आप का रस प्लावन करने वाला वेणुनाद मुझे कब श्रवण करने का सौभाग्य मिलेगा।

श्रृंङ्गार कुञ्जे नवकिङ्करीभि
नीराजनेनाऽञ्चित मञ्जुलाङ्गीम्।
कोटिन्दुलावण्य मुखारविन्दां
विलोकयामीति कदा ही राधाम्।।३८।।

श्रीराधाजी अमल–निर्मल दिव्य स्वरूप है। दिव्य ही इन का श्रृंगार, अलंकार, व अर्पित नैवैद्य आदि है। दिव्य ही इन के सखीजन परिकर है। दिव्य भावा ही इन की सेवा श्रद्धा और भक्ति है। किसी भी प्राकृत विकार

से यह सर्वथा परे है सर्वदा नव्य–दिव्य है। चन्द्रमा आदि की लौकिक प्रभा से सर्वथा विशिष्ट और दिव्य लावण्य प्रभायुक्त है। यह परमानन्द पूर्णा है "न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकः (क.उ.) के अनुसार यह परमेश्वरी स्वयं प्रभावती है।

आचार्य श्री इस पद में अभिलाषा करते है– नित्य नवीन स्वरूपा, श्रृंगार कुञ्ज में सखी परिकर द्वारा श्रृंगारित कोटीचन्द सम सुन्दर मुखारविन्द वाली श्री राधाजी का मै कब दर्शन करूंगा ? विलोकयामीति कदा ही राधाम्" कब दर्शन करूंगा यह भावाभिव्यक्ति बडी भाव उत्कण्ठा से प्रकट हुई है।

कदा राधिके ते पदाम्भोज युग्मं
महाभाव रूपे प्रिय सौख्यपुञ्जे।
सदाऽभ्यर्थमाने मुकुन्देन कुञ्जे
प्रसन्नस्तवाऽहं द्रुतं द्रष्टुमीहे।। ४०।।यु.गी.

"महाभाव", आनन्द भाव है। भक्ति सूत्र में भक्ति की अन्तिम परिणति बताई गई है– "आनन्दो भवति, अमृतो भवति, सिद्धो भवति, तृप्तो भवति" यह रसानुगमा भक्ति में भक्ति की अन्तिम परिणति "महाभाव" कहलाती है। श्री राधा जी महाभाव स्वरूपा है महाभाव प्रदान करने वाली है महाभाव की स्वामिनी है।

महाभाव स्वरूप स्वामिनी श्री राधा जी से दर्शन रूपी कृपा कटाक्ष की अभ्यर्थना की गई है। हे महाभाव रूप सौभाग्य सुख की आगार श्री मुकुन्द द्वारा समादरित श्री राधे आप के शरणागत हुआ मैं आप के चरणारविन्द का कब दर्शन पाऊँगा। "द्रुतं" शब्द से यह भाव भी लक्षित है कि कृपया शिघ्रता से दर्शन दीजिये।

नाऽहं समीहे धनरूपराशिं
न च प्रतिष्ठामथ नो कवित्वम्।
स्वर्गादि लोकं न कदाऽपि राधे
वाञ्छामि चैकां तव पादभक्ति।।४६।।यु.गी.

निष्काम भाव पूर्वक भगवद् भजन ही भक्ति का यथार्थ स्वरूप है भक्त की लगन मात्र भगवान के प्रति ही होती है अतः भक्त की कामना मात्र भगवद् भक्ति ही होती है।

यही वाञ्छा इस पद में प्रकट की गई है– हे राधे ! मैं विपुल धन राशि की इच्छा नही करता न मान सम्मान और कवित्व ही चाहता हूं, न स्वर्ग की कामन रखता हूं मैं तो एक मात्र आप के श्री चरणों की भक्ति चाहता हूँ।

ब्रजेश ! राधावर ! नन्दनन्दन
मुकुन्द ! योगेश्वर ! कृष्ण माधव।
निकुञ्ज गोपीजन वल्लभ प्रभो
कृपाकटाक्षानभिवर्षयाऽच्युत।।४६।।यु.गी.

हे ब्रजेश, राधावर नन्दनन्दन मुकुन्द योगेश्वर, श्री कृष्ण माधव, निकुन्ज गोपीजन बल्लभ प्रभो हे अच्युत ! अपने कृपा कटाक्ष से हमें अभिसिंचित करो।

यहां दश नामो से पुकारा इस का भी मार्मिक अर्थ है।

प्रसीद गोविन्द ! दया सरित्पते !
भवाटवी-क्लेश सुकम्पितो मुहुः।
त्वदंध्रिरक्तोत्पल धूलीलोलुप
स्तथाऽपि राधाप्रिय ! माययाऽऽहृतः।।५०।।यु.गी.

हे दयासागर ! मै आप के चरण कमल की सेवा करने को लालायित हूं किन्तु हे राधाप्रिय आप की प्रबल माया से आहत हुआ भवबन्ध के नाना क्लेशों से बार बार कम्पायमान हूं। अतः हे गोविन्द कृपा करीये अर्थात माया निवृति पूर्वक आप के चरण कमलों की भक्ति प्रदान करीये।

"अनादि माया परियुक्त रूपं त्वेनंविदुर्वे भगवद् प्रसादात" वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी में है इस माया का आवरण भगवद् कृपा से ही उच्छेदन हो सकता है। तुलसी दास जी ने भी कहा है– "जो बाधें सोई छोडें" यहां "प्रसादात" के अनुरूप ही 'प्रसीद' शब्द का प्रयोग हुआ है।

न जाने कदाऽनन्त ! में चिन्तभृङ्गोऽ
स्थिरोऽति प्रमन्तो हरे र्भक्ति शून्यः।
अहो श्रीमुरारे ! दयाऽगाधसिन्धो !
प्रवृत्तो द्रुतं ते भवेदंघ्रियुग्में।।५५।।यु.गी.

हार्दिक दीनार्त भाव से प्रभू को पुकारा गया है जैसे डूबता हुआ हाथी एक मात्र प्रभू को ही सहारा मानकर पुकार रहा था– हे नारायण आओ अब मेरा कोई सम्बल नहीं है । वैसे ही– हे अनन्त ! हे दया के महासागर ! हे मुरारी ! हरि भक्ति शून्य चञ्चल चित्त आप के चरणार्विन्द में कब संलग्न होगा ? किसी सक्षम से पूछा जाता है कि हमारा यह काम कब तक हो जायेगा ? यहां प्रभू से पूछा है– आप के चरणों मे मन कब लगेगा ? अर्थात आप कब कृपा करके अपने चरणों की भक्ति प्रदान करेंगे। "द्रुतं" कहकर तो यह उत्कण्ठा भी प्रकट कर दी की अब बिना विलम्ब के शीघ्र कृपा कर दीजिये।

कृपालो ! दयालो प्रपन्नाघ हारिन।
घनश्याम ! कृष्णा व्रज प्राण ! पूर्ण।

यशोदाङ्कबाल ! प्रियाप्रेमलिप्सो।

विधायाऽनुकाम्पामनन्तां प्रसीद।।५६।।यु.गी.

इस पद में दस नाम से पुकार कर आत्मनिवेदन कर दिया– दयार्द्र होकर अनन्त कृपा की वर्षा कीजिये।

ललिता-हितु चम्पिकादिभि

र्नवनित्याङ्. सखीगणैः सदा।

व्रजराज पदाब्ज रेणवः

परिसेव्या कम भान्तु मानसे।।६०।।यु.गी.श.

हे दीन बन्धु वृजराज ! यह सम्बोधन काव्य में लुप्त किन्तु भाव में प्रकट है। ललिता हितु चम्पिका आदि नित्य नवस्वरूप सहचरी गणों द्वारा परिसेव्यमान आप की चरणकमल रज रेणु अर्थात आपकी पदारविन्द भक्ति मेरे मानस में कब भासमान होगी।

हे कृष्ण पाहि नितरां विफलं प्रपन्नं

कामादिघोररिपुभिः प्रहितैश्चतीक्ष्णैः।

नानाविधैरतिभयावहतीव्र वेगैः

संविध्यमानमिषुभिः खलु जर्जरं माम्।।६१।।

विषय कामदि कर्मो को या विकारों को क्लेश भी कहते है घोर भी कहते है और यही शत्रु कहलाते है ईर्ष्या संशय व विविध कष्ट कारक होने के कारण यह भयावह होते है।

हे कृष्ण भयावह विषयासक्त कामदि घोर शुत्रओं ने भेदने हेतु तीव्र व तीक्ष्ण वणों के प्रहार किये है। हमारी क्षमता सीमित है आप परम सक्षम है अतः इन शत्रुओं से मुझ शरणापन्न की रक्षा कीजिये।

विविधभवविपत्ति पत्यहं वीक्ष्य मर्त्यः,

प्रभवति न विरक्तौ सर्वथा विस्मयो नः।

इह पुनरपि मोहं याति कष्टं निकृष्टं
भगवति नितरां रे मूढ चित्तं विधत्स्व।।६३।।यु.गी.श.

यह सर्वथा आश्चर्य की बात है कि मनुष्य प्रतिदिन नानाविध जगत विपत्तियों को देख–सहकर भी वैराग्य की ओर प्रवृत नही होता। मोह–ग्रस्त हुआ इस असार संसार में बार–बार कष्ट को प्राप्त होता है।

अविद्याग्रस्त ऐषणादि क्लेश कर्मो से विविध ताप की प्रवृति होती है। काम–मोह प्रवृत कर्मो से कभी हार्दिक सुख नही मिला। अन्त में व्यथा ही प्राप्त होती है और संसार में जन्म–मृत्यु रूप आवागमन भी बना रहता है अतः यह देखते–भोगते हुए भी अविद्या ग्रस्त मानव सचेत नही होता यह आश्चर्य ही है। आदिशंकराचार्य ने चरपटी पञ्जर में कहा "पुनरपी जननम् पुनरपि मरणम् पुनरपि जननी जठरे शयनम् भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्द भज मूढ मते" ऐसी ही इस पद मे चेतावनी है।

भवाम्बुधौ प्रवाहितं त्रितापतापतापित
मनर्थ पुञ्जसभृतं मनोरूजाप्रपीडितम्।
मुकुन्द ! माधव ! प्रभो ! शरण्य ! दीनवत्सल ।
तवदंघ्रिपङ्कजाश्रितं कृपानिधे ! हि शाधिमाम्।।६४।।

प्रारब्ध, संचित और क्रियामाण कर्म के प्रभाव से, जगत विषयक कर्मो में ही जीवन का प्रवृत रहना या इन्हीं में उलझा रहना, भवसिन्धु में प्रवाहित रहना कहलाता है। प्राकृत सिद्धान्त के अनुसार इन कर्मों से तीन तरह के कष्ट, विध्न और पीड़ायें प्राणी को होती है देहिक–पीड़ा, रोगादि कष्ट, भौतिक–विपन्नता आदि, दैविक–प्राकृतिक आपदा, ये सभी तरह के विपरीयेय कर्म के परिणाम व्यथा जनक पतन कारक व अनर्थ है यह बराबर संग्रहीत होने पर भार जनक है। इस अनर्थ भार से मानसिक क्लेश विपरित धारणा स्फुरण होती है काम मोह इर्ष्यादि विकार उत्पन्न होते है जो

यहां दीनवत्सल भगवान से प्रार्थना की गई है। क्योकि प्रभू ही संसार के इन अनर्थो से बचा सकते है। अतः हे प्रभू त्रिविध तापों से संतप्त नानाविध अनर्थो के भार से युक्त मनोरूज से ताडित होकर संसार सिंधु में बहते हुए मुझे, कृपा सिन्धु सम्भाल लीजिये।

संसार राग परिताप समूहतप्तो
गोविन्द भक्ति विमुखो गुणहीन दीनः।
विद्या विराग रहितो बलकान्ति शून्यो
हे कृष्ण ! ते पदसरोजरतिं समीहे।।६५।।यु.गी.श.

जो गुणवान है बल कान्ति विद्या युक्त व धनवान है जिसे यह सब अपने पास हाने का अभिमान है और जिसको इन के सामर्थ्य पर विश्वास है वह तो जगत की क्षमताओं का ही उपासक है वह तो इन्हीं पर आश्रित है वह परमेश्वर पर आश्रित नहीं है और उसे परमेश्वर का आश्रय मिलता भी नहीं। परम प्रभू का आश्रय तो उसे ही मिलता है जो विद्यावान कान्तिमान बलवान हो चाहे न भी हो, अभिमानशून्य अकिंचन बना रहता है प्रभू को ही सर्वेश्वर सर्वसमर्थ समझता है ओर उन्हीं का आश्रय लेता है। सूरदास जी ने कहा "मो सब कौन कुटिल खलकामी।" उसे ही भगवान के पद सरोज की प्रीति मिलती है।

जगत का अभिमान और प्रभू का आश्रय यह दो ध्रुव एक जगह नही रह सकते। इस पद से यही भाव प्रकट हुआ है।

मै जगतविपत्ति समूह से संतप्त भक्ति विमुख गुणहीनदीन विद्या वैराग्य रहित, बल–कान्ति शून्य हूँ हे कृष्ण आप के चरणारविन्द के अनुराग की अभिलाषा करता हूँ।

क्लिश्यन्ति लोकाः सततं पृथिव्यां
सत्वेऽपि कृष्णावसुधा समुद्रे।

ते ज्ञानहीना निरये पतन्ति

दौर्भाग्यमेषां किमहो वदामि।।६६।।यु.गी.श.

अभिमान शून्यता पूर्वक ईश्वर को सर्वसमर्थ अनुभव करते हुऐ परमप्रभू में श्रद्धा भक्ति होना निष्काम कर्म करते हुए प्रभू पर आश्रित हो जाना ज्ञान है, विद्या है। इन विपरित क्षणभंगुर पदार्थो की भोगेइच्छा करते हुये धनसम्पदा बलादिको को समर्थ मानना व इन के लिए सकाम कर्म करना अविधा और अज्ञान है। यह मन अविद्या या अज्ञान से आसक्त होकर पतित होता है। और पतित कृति–वृति से आवरित होकर घोर क्लेंशो को भोगता हुआ नरकों में पड़ता है। न्याय–अन्याय अच्छे बुरे कर्मो का परिणाम सब जानते है दुर्भाग्य बस लोग फिर भी सचेत नही होते । यही इस पद में कहा गया है–

इस पृथ्वी पर श्री कृष्ण नामामृत सिन्धु के विद्यमान रहने पर भी इस से लाभ न उठाकर अज्ञानीजन क्लेश भोगत हुए धोर नरकों में पड़ते है यह बड़े कष्ट की बात है इन के दुर्भाग्य को कहां तक वर्णन किया जाये।

समीहे नैव सम्पत्तिं कवितां न च केवलाम्।

रसस्निन्धां पराभक्तिं वाञ्छामि नन्दनन्दनम्।।६७।।यु.गी.

जगद सम्पदा की कामना का निरसन करते हुऐं पराभक्ति की विनम्र वाञ्छा प्रकट की गई है।

संसृतिक्लेशसंतप्तः कामाद्यरिशरार्दितः।

प्रमत्तः पथविभ्रान्तो याचे हरिनुग्रहम्।।६६।।यु.गी.

संसार क्लेश संतप्त कमादि शत्रुओ से आहत को, हे कृष्ण ! हे हरि अनुग्रह करके बचा लीजिये।

हे प्राण नाथ ! विविधाऽघकदम्पूर्णो

विश्वाऽऽमनस्य परिताप नितान्तखिन्नः।

सम्प्रार्थये रसिक वत्सल ! कृष्णचन्द।
त्वत्पादपकंजरति र्हृदये भवेन्मे।७०।।

हे भक्त वत्सल ! हे प्राणनाथ ! यह प्राण उस आत्मा से ही उत्पन्न हुऐ और उन्हीं द्वारा शासित और उन में सदैव बंधे हुऐ है। मलावरण से यथार्थ बोध नही होता। वे आत्मा परमात्मा श्री कृष्ण है जो अमलात्मा सखीजनो के सर्वस्च है (यह उपनिषाद् कहती है) अतः यहां प्राणनाथ शब्द प्रयोग किया लगता है।

हे कृष्ण आप के चरणारविन्दका दृढ़ अनुराग दे दीजिये।

प्रभो न मै स्वर्ग वैभव चाहता हूं न संसार के भोग चाहता हूँ मैं तो आप की भक्ति की ही अभिलाषा करता हूँ।

रात्रोराधादिवाराधा श्री शं राधाञ्च राधिकाम्।
सततं राधिकां राधां स्मरामि राधिकां पुनः।।४१।।श्री राधा-राधना
गृहे राधां वने राधां स्थले राधाञ्च राधिकाम्।
अभ्रेराधां जलेराधां स्मरामि राधिकां मुहुः।।७५।।श्री राधा-राधना
प्रभाते राधिकां दिव्यां सायं राधां रसावहाम्
मध्याह्ने राधिकां राधां स्मरामि सर्ववैभवाम्।।६।।श्री राधा-राधना

दिन रात घर वन स्थल जल प्रभात सायं सब जगह प्रतिक्षण प्रतिपल श्री कृष्ण सहित राधा का ही स्मरण हो यही अभिलाषा है।

"श्री स्तव रत्नाञ्जलिः" व स्तवविंशतिः व माधव प्रपन्नाष्टकम् में वहुधा हार्दिक भावोद्‌गार है जिन में तत्त्व दर्शन, मधुर भक्ति उपदेश सब कुछ है ।

व्यर्थ भ्रमन्तीह जना धनार्थं
व्यर्थ समिच्छान्ति सदा प्रजार्थम्।

सर्वेश्वरे चेदनुराग बुद्धि

निश्च प्रचं संलभतेऽखिलार्थम्।।६२।।

दो तरह के अनुराग है एक रजोगुण उत्पन्न वासना गत अनुराग और एक सात्विक श्रद्धासम्पन्न परमप्रभू से अनुराग। परम प्रभू से अनुराग करेन वाला अनासक्त भाव से कर्तव्य कर्म करता हुआ निरन्तर प्रभू को भजता रहता हैं इसे श्रेय कर्म कहते है ऐसे मनुष्य को जीवन के चारों पुरूषार्थ धर्म अर्थ काम मोक्ष की परम प्राप्ति हो जाती है गीता में कहा है–

तस्मासक्तः सतां कार्य कर्म समाचर।

असक्तों ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरूषः।।अ.३. श्लो.१८

जगत आसक्तिवाला संसार के क्लेश प्राप्त करता है इन्हें प्रेय कर्म कहते है। इन से अधोगाति होती है। अतः गीता में भगवान ने चेताया–

उद्धेरदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।

आत्मैव ह्यींत्मनों बन्धुरात्मैव रिपुरात्माना:।।५।।अ.६.

अपने द्वारा आप ही अपना उद्वार करे अपने को अधोगति में न डाले। मनुष्य आप ही अपना मित्र और आप ही अपना शत्रु है।

इसी तरह का यहां यह उद्‌बोधन किया गया–व्यर्थ के धन सन्तानादि की ऐषणा से भ्रमित मनुष्य भगवान सर्वेश्वर में अनुरागा पूर्वक जीवन विताये तो निश्चय ही सम्पूर्ण पुरूषार्थ की प्राप्ति कर लेगा।

राधामुकुन्द युगनामरसाब्धि धारा

यन्मानसे प्रतिपलं प्रवहत्यहो सः।

सौभाग्यभागिह महारतिभावमुग्धो

युग्मप्रियो भवति नाऽतत्र कदापि चित्रम।।७४।।

भावना आबद्ध भक्त भगवान से विलग नहीं होता। भगवान को भाव ही प्रिय है अतः श्रद्धा भावापन्न भक्त भगवान राधामाधव को अतिप्रिय है। ऐसे भावुक भक्त के मन में भगवद् नाम की रस धारा प्रतिपल प्रवाहित होती रहती है निश्चय ही यह बड़े आनन्द की बात है। विषय विकार के आवरण से मुक्त हुआ ऐसा भक्त सौभाग्यशाली है।

येषां मनो हरिपदाम्बुजयुग्मनिष्ठं
येषां मनो हरि कथामृतपानजुष्टं
तै पुण्यतीर्थ सदृशा अमलाः प्रपूज्याः
तददर्शनेन बहुशो लभते प्रलाभम्।।१०३।।यु.गी.

भगवान के कथामृत श्रवण व नाम सुमिरण स्वाध्याय में मन तब ही लगता है जब मन निर्मल हो जावें ऐसे अमलात्मा जो भगवद् पदाम्बुज निष्ठ है निश्चय ही वे पुण्यात्मा तीर्थ के समान पवित्र करने वाले और पूज्य है ऐसे दिव्यात्माओं के दर्शन–सत्संग से अमोध फल होता है।

सत्सङ्. सततं सेव्यः राधकैश्च मुमुक्षुभिः।
यस्याऽवलम्बमात्रेणाऽमृतत्वं लभ्यते ध्रुवम्।।१०४।।

भजन साधना करने वाले साधु मुमुक्षु जनों की सत्संग सेवा करनी चाहिये ऐसा करने से उन्हीं के समान कृपा पूर्वक अमृत्व की प्राप्ति होती है।

सत्सङ्.ज्जायते भावो भावाद्भक्तिः प्रजायते।
भक्त्या एवं पराभक्तिस्तया तुष्यति माधव।।१०५।।

१०४ श्लोंक के भावर्थ को ही जैसे इस में स्पष्ट किया है। सत्संग से भगवद श्रद्धाभाव उत्पन्न होता है भाव से भक्ति का प्रादूर्भाव होता है भाव से भक्ति करते रहने वाला शनैः शनैः निर्मलता प्राप्त करता हुआ प्रभू से

अनन्य अनुराग रूप पराभक्ति को प्राप्त कर लेता है और निर्मल पराभक्ति से भगवान माधव प्रसन्न हो जाते है।

सुखिनस्ते भवारण्ये ये हरिचरणाम्बुजौ।
स्मरन्तः स्मारयन्तश्च वसन्त्यस्मिन्विपश्चितः।।१०५।।यु.गी.

सुख, मन की तुष्टि का भाव है। भगवद् श्रद्धा परिपूर्ण मन ही भगवद् भक्ति करता हुआ तुष्ट रहता है अन्य विषय में तुष्टि नही देखी जाती है अतः जो भगवान के भजन करता है व दूसरो को प्रेरणा देकर भजन करता है संसार में वही सुखी है।

सुखार्थं सर्वलोकानां कृत्यो भवति नित्यशः।
सुखस्थानमविज्ञाय पतन्ति संस्सृतौ पुनः।।१०७।।

सभी प्राणी सुख चाहते है ओर नित्य प्रति सुख के लिए ही कर्म प्रवृत है किन्तु अविचल सुख वस्तुतः क्या है ? और कहां है ? यह नही जान पाते या इसे जानकर भी हृदय से स्वीकार नही कर पाते इस भूल के कारण मनुष्य बार–बार संसार सागर में पतन को प्राप्त होता है।

उत्सृज्य जगदाकाङ.क्षां सम्प्राप्य गुरोराश्रयम्।
राधा सर्वेश्वरौ नित्यं भजन्तु भुवि भावुकाः।।१०६।।

वास्तविक सुख प्राप्ति के लिए–भावुक जन तृष्णाओं का त्याग कर के गुरू आश्रय अनुगत हो श्री राधा सर्वेश्वर का ही नित्य भजन करते है अर्थात सभी को गुरू उपदेश वैदिक परम्परा से लेकर भगवद् भजन करना चाहिये।

अध्याय–8

अन्य उपास्य स्तव व साहित्य

सनातन धर्म–संस्कृति श्रुति–स्मृति की आस्था–निष्ठा के अनुगत है। सनातन संस्कृति में श्रुति–स्मृति जिस आचार–विचार व कर्त्तव्य को यथा योग्य समय परिस्थिति, व्यक्ति, संबन्ध तथा कर्मानुसार हितावह व सद्कृति कृति मानती हैं वह धर्म तथा जिसे हेय मानती है वह अधर्म है। धर्म का ध्येय, सृष्टि–प्रकृति का सुचारू समुद्धभव बनाये रखते हुए, प्राणी मात्र का सुखद–जीवन के साथ सतत् अभ्युदय व विकास करना है। सृष्टि में मनुष्य देह व बौद्धिक क्षमता से, प्राकृत वस्तुओं का इच्छा अनुसार उपयोग लेने में सक्षम है अन्य प्राणीयों की यह क्षमता नहीं है। मनुष्य ही ऐसा है जो अपनी क्षमता से सुचारू जीवन यापन करते हुए सबको सुख दे सकता है व दुरूपयोग कर प्राणी जीवन को कष्ट भी दे सकता है, प्रकृतिकों विकृत कर सकता है। सनातन मनीषा ने सर्व अभ्युदयकारी कर्त्तव्यकर्म व सदाचार–व्यवहार की विस्तृत व्यख्यायें दी है जिन का यथायोग्यसमय विवेक–ख्याति से निर्णय किया जा सकता है।

सनातन मनीषा ने मनुष्य जीवन के सर्वाङ्गीण अभ्युदय के लिए धर्म–अर्थ–काम व मोक्ष के चार पुरूषार्थ सुझाये है। धर्म–मनुष्य के समस्त

जीवन में सदाचार–संस्कार व व्यवहार के रूप में व्याप्त रहता है। अर्थ मनुष्य के जीवकोपार्जनीय कर्त्तव्य कर्म व दैहिक–भौतिक सुचारू सुख सम्पनन्ता का हेतुक है। काम–मनुष्य के जीवन में धर्म–अर्थ–मोक्ष तथा सन्तान–सन्तति की समृद्धि व विकास के लिए यथायोग्य, सात्विक–राजस–तामस रूप में मानसिक–बौद्धिक संकल्प–विकल्प व कृति–वृत्ति के रूप में प्रवृत्त होता है। मोक्ष–मनुष्य का जीवन के समस्त संकल्प–विकल्पों से उपराम हो, शान्तचित्त होकर परम प्रभू परमेश्वर की उपासना करना, मोक्ष का पुरूषार्थ कहलाता है और जीवन में परमप्रभु को प्राप्त कर लेना मोक्ष प्राप्त करना कहा जा सकता है।

श्रुति–स्मृतियों ने मनुष्य जीवन का परम पुरूषार्थ, परमप्रभु परमेश्वर की प्राप्ति रूप मोक्ष को ही बतलाया है। अतः धर्म ने सात्विक आचार–व्यवहार पूर्वक, ईश्वर के शरणागत हो, जीवन में उपस्थित कर्त्तव्य कर्म को निष्प्रपञ्च–निष्काम भाव से करते हुए, नियमित सतत प्रभु उपासना को आजीवन कर्त्तव्य माना गया है।

श्रुति–स्मृति अनुगत सनातन धर्म में भावानुसार उपासना की विभिन्न पद्धतियां और परम प्रभू के कई प्रभावान उपास्य स्वरूप है जिन की आस्था उपासना से परम प्रभु प्राप्ति रूप, मोक्ष प्राप्त होती है।उपास्य के रूप में सगुण–साकार व निर्गुण–निराकार यह दो प्रकार की मान्यतायें हैं। ज्ञान योग व भक्ति यह तीन तरह की उपासना विधियां हैं अपनी अपनी मान्य प्रमुखता के कारण ही यह प्रकारान्तर है वैसे यह परस्पर एक दूसरे से ओत–प्रोत हैं।

सगुण–साकार में उपास्य स्वरूप के अनुरूप भी प्रकारान्तर है यथा–वैष्णव, गाणपत्त्य, शैव, शाक्त, सौर आदि। साकार उपासक वैष्णवों के चार सम्प्रदाय प्रसिद्ध है। इन सम्प्रदायों में एक श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय

सर्वाधिक प्राचीन है। इस सम्प्रदाय के प्रमुख उपास्य–स्वरूप निकुञ्ज विहारी श्रीराधामाधव हैं।

सभी वैदिक उपास्य स्वरूप श्रद्धेय और पूज्य है। यह मान्यता आदि आचार्य निम्बार्क ने भी "सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकम्" कहकर प्रदान की है। अपने उपास्य की स्वकीय साधना के साथ अन्य वैदिक स्वरूप व उपासना विधि भी श्रद्धास्पद व पूज्य हैं। यह सनातन धर्मावलम्बियों की एक समान श्रद्धा–निष्ठा है।

सनातन धर्म के इसी समन्वय को आचार्य श्री ने "वृहत् सनातन धर्म सम्मेलन" करके विविध धर्म सम्मेलनों में अपने प्रवचन से विविध उपास्य स्वरूप के मन्दिर बनवाकर व उपास्य स्वरूपों की सेवा चर्या के साथ स्तव स्तुति का सृजन कर प्रशस्त किया है।

अब हम आचार्यश्री के वैदिक मान्यता के विविध उपास्य स्वरूप भूमि महत्त्व व तीर्थ क्षेत्र पर सृजित स्तव साहित्य का संक्षिप्त सा अध्ययन प्रस्तुत करते है।

उपास्य स्तव

आचार्यश्री श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्यवर्य है। आप के स्वकीय उपास्य श्री निकुञ्ज विहारी श्री राधा सर्वेश्वर श्री कृष्ण के संबन्ध में हमने पिछले अध्यायों में विचार कर लिया है। यहां हम अन्य स्तव रचनाओं पर विचार करते है।

"श्री स्तवरत्नाञ्जलिः" के उत्तरार्द्ध में १६ स्तव है। इनमें तेरह वैदिक उपास्य स्वरूप के है। "श्री हनुमन्महाष्टकम्–श्रीजानकी वल्लभ स्तव "यह दो स्तव ग्रन्थ स्वतंत्र रचनायें तथा "भारत–भारती वैभवम्" संस्कृत संस्कृति व भारत वर्ष की गौरव गरीमा तीर्थादि की महिमा का ग्रन्थ है।

गणेश शिव शक्ति, सूर्य, विष्णों यह पांच परम प्रभायें पञ्च परमेश्वर के रूप में भारतीय मनीषा में प्रसिद्ध है। एक ही परमतत्त्व रूप यह परम

प्रभाये आदि और अनन्त है श्रुतियों में इन के विविध परम प्रभाव व पुराण स्मृतियों में इन की प्रभावोंत्पादक लीला कथायें भी वर्णित है। यह सभी परम प्रभायें आदि काल से पूज्य रही है। भगवान विष्णों मुख्य केन्द्रिय प्रभा कही गई है जिनके विविध युगों में कई अवतार हुऐ है।

श्री गणेशाष्टकम्– श्री गणेश गणाधीश्वर और सभी अवसरों पर प्रथम पूज्य है। श्री गणेशाष्टक में श्री गणेश को विध्नों के नाशकर्त्ता, चतुर, शान्त, गम्भीर प्रसन्न, मोदकारी हरि के ध्यान में मग्न आकृति से विशाल शुभकर सुन्दर विद्याकला प्रवीण, असीम प्रभावान गुणज्ञाननिधि समस्त देवों में पूज्य, गुणों के स्वामी, दयासागर मोदक धारण किये हुऐ, गौरे वर्ण, लम्बोदर मूषक पर विराजित ऋद्धि–सिद्धि द्वारा सेवित गज के समान मुख वाले विविध वस्त्रालङ्कारो से शौभित, दुर्वाङ्कुर व लाल पुष्पों से प्रसन्न होने वाले समाराधनीय बताया है।

अहो सुन्दरं शास्त्र सिद्धं स्वरूपं
महादेवदेवं शरण्यं वरेण्यं।
अचिन्त्यं सुधीवृदसेव्यं सुधापं
सदानन्दपुर्णं गणेशं प्रणौमि ।।८।।

"श्री शिव महिमाष्टकम्" में भगवान शिव का महिमागान इस तरह है–

देव मुनिश्वरों द्वारा वन्दितचरण, हिम शैल पर विहाररत, प्रेम सागर, सर्पों के आभूषणधारी, संताप, विपत्ति और भव बन्धन के मुक्ति दाता चन्द्रमा से भूषित, विषपान कर्त्ता, जटाधारी त्रिशूलधारी भक्तों को अभय दाता, वृष पर विराजित, हितकर उपदेश दाता, उल्लास युक्त मङ्गल रूप धारी, जटाओं में श्रीगंगा को धारण करने वाले, परम प्रसन्न शीघ्र कृपा करने वाले, श्री श्याम–सुन्दर श्री कृष्ण के चरण कमल का ध्यान करने वाले, व्रजकुञ्ज लीला में सहचरी अभिनव "गोपेश्वर" रूप धारण करने वाले उमापति, मङ्गल कारी भगवान राधामाधव की युगल केलि विहार के रसिक, रसतन्त्र, पुराण

कथाओं के चतुर, शास्त्र रसज्ञों में शिरोमणि, अघ का नाश करने वाले, तेजस्वी शक्ति शाली, श्री हरि की भक्ति से परिपूर्ण मङ्गलमय भगवान शिव की जय हो।

यमपाशभयाऽपहरोऽघहरः
प्रबलोऽति महा प्रबलः प्रखरः।
परिपूर्ण तपो हरिभक्ति भरो
जयतीह शिवःशिवरूपधरः।।८।।

''**श्री मन्नारायणाष्टकम्**'' में भगवान नारायण का महिमागान है–

अशेष कल्याण गुणैक कोषं
बह्मेन्द्र रूद्रादिक देव वन्द्यम्।
सर्वेश्वरं सर्वजगन्निवासं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि।।१।।

समस्त गुणों के कोष, ब्रह्मा, रूद्र, इन्द्र आदि देवों द्वारा वन्दनीय जग के आधार लक्ष्मी पति, भक्तों के पाप हरता, विश्व का भरण–पोषण करने वाले, अवतार विग्रह धारण करने वाले, भक्तों की इच्छानुसार रूप धारण करने वाले, कृपामूर्ति, आश्रय दाता, दीनबन्धुश्याम रूप, पीताम्बर धारी, कमलनयन, सृष्टि स्थिति, प्रलय के कारण, चराचर संसार के हृदयस्थ अन्तर्यामी, अचिन्त्य रूप, वैकुण्ठ धाम वासी, मुनिजनों योगी व देवराज द्वारा ध्यान किये जाने वाले विश्व पति परमेश्वर, सनातन सत्य, सर्व समर्थ, शङ्ख चक्र, गदा, पद्मधारण करने वाले श्री वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्नांकित किरीट, केयूर की दिव्य कान्ति से मनोहर है भगवान श्री मन्नारायण है।

श्री वत्सचिह्नाऽङ्कित वक्षसञ्च
गदाब्दशंखाऽरिलसत्कराब्जम्।
किरीट केयूर सुकान्ति मञ्जुं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि।।५।।

"**श्री लक्ष्मी महिमाष्टकम्**" से महा लक्ष्मी का उज्ज्वल विरद वर्णन है। पद्म निवासिनी हस्त कमल धारी प्रसन्न मुख आह्लादक स्वरूप श्रृगांर वाली देव वंद्य, गन्धर्वो से संस्तुत भक्तजनों द्वारा सेवित।

अनन्त लावण्य वरेण्य रूपां
करीन्द्र वृन्दार्पित पुष्प मालाम्।
किरीट केयूर विशोभमानां
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम्।।३।।

अनन्त लावण्यमयी, हस्ति समूह द्वारा पुष्पा माला द्वारा पूजित, किरीट केयूरादि दिव्य आभूषणों से शौभित भक्तजनों के निवास स्थान पर वास करने वाली धार्मिक जनों द्वारा सेवित श्री हरि की सेवा में तत्पर वैष्णवों को अभीष्ट फल प्रदान करने वाली माता लक्ष्मी की मनोहर स्तुति की गई है।

"**श्री गरूड़ाष्टकम्**" में "विष्णु रथं सुपर्णं" सुन्दर पंख वाले भगवान विष्णु के वाहन श्री गरूड़, नित्य भक्त, भगवान के पार्षद, वायु सम गतिमान, मन सदृश वेगवान, विनता सुत अपार शक्ति सम्पन्न, पिशाचो को हीनबल करने वाले भव–वन्धन काटने वाले आनन्द के मूल क्षोत श्री हरि की भक्ति प्रदाता है।

श्री कृष्ण सत्पार्षद नित्य भक्तं
महाबलं तीव्र समीर वेगम्।
मनोजं मञ्जुलरूप-धाम
श्री वैनतेयं गरूड़ं स्मरामः।।१।।

"**श्री देवी महिमाष्टकम्**" से भगवती माता देवी का स्तव गान किया गया है।

"परात्परब्रह्मपराद्य शक्ति" परात्पर ब्रह्म की पराद्या शक्ति रमणीय, सिद्धेश्वरी, देवस्वामिनी, दैत्यसंहारकर्त्री, भवभयहर्त्री, शिव–शक्ति स्वरूपिणी, दुर्गा ब्राह्मी अपर्णा गिरीजा, मृडानी, कात्यायनी, हैमवती, भवानी, ब्रह्माण्ड

विहारीणी, श्री कृष्ण शक्ति, भक्ति में अनुरक्त भक्ति स्वरूपा, भक्ति प्रदाता, आनन्द दाता, देव ऋषियों से सेवित मंत्र–तंत्र की सिद्धी दाता रसदानशीला शास्त्रानुकूल सेवा भक्ति से सदा प्रसन्न होने वाली देवी वैष्णवी की सर्व शक्तिमय महिमा है।

दुर्वृत्त दुर्दान्त निशाचराणां
संहारकर्त्रीं भवभीति हर्त्रीम्।
अनन्त शक्तिं शिवशक्ति दुर्गां
श्री वैष्णवीं नौमि वरेण्य देवीम्।।२।।

''**श्री सरस्वती महिमाष्टकम्**'' देवो द्वारा वन्दनीय श्रुति शास्त्रों द्वारा गेय, अनन्त शक्ति करूणामयी दिव्य स्मृति व विवेक दात्री मयुरारूढ वीणापाणी दिव्य वस्त्रालङ्कृत कलकण्ठ में सुमनोहर सुमन माला शोभित हंस विराजित सुस्मित विद्यादात्री पराद्याशक्ति प्रज्ञान, विज्ञान कला की आगांर वागीश्वरी वेदमयी, माला पुस्तक धारणी, कमल कुञ्ज में शोभित, कारूण्य, लावण्य सुधा की समुद्र श्री शारदा, शान्ति सुख को प्रशस्त करने वाली पद्मासन पर विराजित हस्त कमल धारी, श्री सरस्वती का सिद्ध स्तव आचार्यश्री ने ज्ञानार्थियों के लिए प्रदान किया है।

हंसाधिरूढां स्मितमञ्जुहास्यां
विद्या प्रदात्रीं वरदां वरेण्याम्।
पराद्य शक्तिं परमार्थ सिद्धां
सरस्वतीं स्तौमि सदास्मृतीशाम्।।३।।

''**श्री मिथिलेशसुताष्टकम्**'' मिथिलेश सुता माता श्री जानकी जी की जीवन लीला इन के नाम और इनका स्वरूप विग्रह सम्पूर्ण रूप से श्रुति–मंत्र मय है। तपोनिष्ठ भक्त साधु जनों के मानस में विराजित आनन्दमयी, कृपामयी, जनकदुलारी माता सीता के स्मरण से पाप ताप नष्ट हो जाते है। श्री मिथिलापुरी व अवधपुरी सम्पूर्ण लोकों में उत्तम धाम है जहां मिथिलेश

कुमारी के चरण चिह्न है और जहां मिथिलेश कुमारी विराजती है।

श्री मिथिला सर्वस्व स्वरूपा सुमधुर स्वभाव वाली ऐहिक सुख व परम आनन्द दात्री वर दात्री वैष्णव भक्तों की आश्रय दात्री व अपवर्ग की महान फलदात्री है। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राघवेन्द्र के वाम भाग में शोभित रस रूप सुधा के मधुर सार से परिपूर्ण ब्रह्मा शिव इन्द्र आदि देवों द्वारा वन्दित देव किन्नर मागध सूत व वैष्णव जनों द्वारा वन्दनीय माता सीता सुन्दर कमल को हस्तारविन्द में धारण किये हुये है श्री रघुनाथ के अवलोकन से पुलकित सरयू तट पर विहार परायण हीरा, रत्न गुम्फित सुवर्ण हार दिव्य कुण्डल किङ्किणी धारण किये हुऐ श्री राघवेन्द्र के साथ विराजित श्री रघुनाथ जी से भी अधिक सुन्दर है, साधु जनों के मानस व पवनात्मज हनुमान जी द्वारा सदा स्मरणीय है।

अवधेश कुमार सुवामवरा
रसरूपसुधा मधुसारभरा।
विधि शम्भु-पुरन्दरवन्द्य पदा
मिथिलेश सुता जयतीह सदा।।४।।

"श्री राम महिमाष्टकम्" दशरथ नन्दन भगवान राम भगवान विष्णों के ही पूर्णावतार है। त्रेता युग में भगवान ने धर्म मर्यादा संस्थापन सम्बृद्धि के लिए अवतार स्वरूप धारण किया–ब्रह्मादि देव, वेद, विद्वान व परमऋर्षि जिनके गुण गाते है और चरण पूजते है जो परिपूर्ण पुरूषोत्तम परमब्रह्म है जिनके तेजस्वी स्वरूप व सुयश का सदैव चर्चा है, चिन्तन है। माता सीता के साथ सुशोभित मातृवृन्द श्रीभरत जी, लक्ष्मण जी, शत्रुध्नलाल जी सहित शोभित पवन पुत्र हनुमान जी के मन मानस को सेवा भक्ति का मोद प्रदान करने वाले। नव विकसित कमल समान प्रसन्न मुख, श्याम स्वरूप सुन्दररूप सुधावाले शिवजी के धनुष को चढाने वाले, कर में कमल धारण किये दया करूणा सौंदर्य माधुरी आदि अमृत रस के आगार, भक्तों को भव बन्धन से

मुक्ति देने वाले अनुराग–विराग के रहस्य ज्ञाता, सुख दाता योग साधना के आश्रय भगवान राम परम उदार है।

जनकात्मजया संह कान्तिधरो
निज धाम्नि सदा विलसच्चरणः।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्ति हरः।।३।।

"**श्री जानकीवल्लभस्तवः**" इस में २८श्लोक से भगवान राम की महिमा का संस्तवन स्तुति की गई है।

विधि-शम्भु-पुरन्दरार्चितं सरयूतीर विहार-तत्परम्।
सततं पवनात्मजाऽञ्चितं भज रामं जनकात्मजाप्रियम्।।१।।

ब्रह्मा शम्भु–पुरन्दरादि देव पूजित सरयूतट विहारी, पवन पुत्र सेवित ' जानकी जी के प्रिय भगवान राम का भजन परम अभीष्ट है।

शरणागत भक्तिदम् प्रभूं सुखंद श्यामल रूपमभ्दुतम।
शरशोभित हस्तपङ्कजं रमणीयं प्रणमामि राधवम्।।३।।
नवनीरददिव्यसन्निभं नव सिंहासनपीठ राजितम्।
नवचन्दन-कुङकुमाऽङ्कितं नवरूप रघुनाथ माश्रये।।६।।
मणि मौक्तिकहार सुन्दरं तुलसी पत्र सुपूजितं सुरैः
धृत मञ्जुल हेम कुण्डलं रघुनाथं मनसा भजाम्यहम्।।६।।

इसी तरह **श्री सीता राम चतुश्श्लोकी** में भगवान सीताराम की स्तुति है।

श्री सूर्यवंश प्रभवं रमेशं
राजीवनेत्रं रमणीय कान्तिम्।
अनन्य भक्तैः सततं प्रपूज्यं
श्री रामचन्द्रं मनसा स्मरामि।।२।।

"**श्री हनुमन्महिमाष्टकम्**" हनुमान जी का अमर यश प्रभाव बहुआयमी और अमोघ है। श्री हनुमान जी रामभक्त, भक्ति के आचार्य, दुष्टदलन कर्त्ता, अजर–अ्मर, वज्र देह सम्पूर्ण ऋद्धि, सिद्धियों से पूर्ण, पवन पुत्र और रूद्रावतार है। इन्होंने राम व कृष्ण दोनों अवतार अवसरों पर ही पराक्रमी सेवा कर्म व चरित्र किया है और दुष्टों का दलन किया है। इन की सेवा भक्ति से वैष्णव जनों को आज भी क्लेशों से मुक्ति व भक्ति की प्राप्ति और महावीर हनुमान के दर्शन प्राप्त होते है। आचार्य श्री को भक्त श्री हनुमान जी की कृपा का विशिष्ठ अनुभव है। आप द्वारा रचित हनुमत स्तव सिद्ध स्तव कहे जा सकते है। इन स्तवों से हनुमान जी की स्तुति करने पर भावो द्रेक व रोमाञ्च उत्पन्न होता है

अनिशं निजनाथ गुणस्मरण।
श्शरणाभय दान महानिपुणः।
करताल सुकीर्तन नृत्य करो
जयतीश बलो हनुमान जितः।।३।।
करकंज सुशोभित हेम गदो।
निजगर्जन कम्पित शत्रु दलः।
प्रवलोऽतुल शक्ति धरो वरदो।
जयतीश बलो हनुमान जितः।।६।।

श्री हनुमन्महाष्टकम्– श्री हनुमान जी के पराक्रम का विशद वर्णन हुआ है।

पारं पयोंधेश्च जवेन यातं
येनाऽभितो राघवकार्यहेतोः।
तं रामभक्तं हनुमन्त मीड्यं
सदाऽऽञ्जेनयं मनसा स्मरामि।।५।।
क्षैत्रे महा भारत इष्ट-भूमौ
देवै र्नुतं पार्थरथध्वज स्थम्।

श्री कृष्ण कृणेति-महुर्जपन्तं
सदाऽऽञ्जनेयं मनसा स्मरामि।।८।।

इसी ग्रन्थ में है "श्री हनुमद्वन्दनाष्टकम्"

वज्रगात्रम् महारूपं वाम हस्ताब्ज पर्वतम्।
हनुमन्तं सुर श्रेष्ठं वन्दे सिन्दूर शोभितम्।।२।।
सवार्थ सिद्धि दातारं दारूण दुःख संहरम्।
अनन्त वैभवम् वन्दे हनुमन्तं निरन्तरम्।।५।।

भारत का गौरव

सम्पूर्ण विश्व मानव का घर है। सृष्टि की सभी जड़ चेतन प्रकृति से जीव का प्रभावी सम्बन्ध है। प्राणी का जन्म जीवन और अवसान विश्व सृष्टि में ही होता है। विश्व में सभी से सभी का परस्पर प्रभावी बन्धुवत सम्बन्ध है अतः भारतीय मनीसा में "वसुधैव कुटम्बकम्" के समग्र भाव का व्यवहार निहित है।

विश्व को जड़ चेतन प्रकृति की समग्र सुव्यवस्था ही सनातन धर्म की अवधारणा है।

व्यवस्था के क्रम से एक क्षैत्र विशेष को, जहां की सांस्कृतिक–वैचारिक ऐतिहासिक–प्राकृतिक व व्यवस्थागत शासकीय एक रूपता हो राष्ट्र कहा जा सकता है। इस तरह परिवार कुटुम्ब, ग्राम, समाज इकाई राष्ट्र की व विश्व की व्यवस्था सीमायें होते हुऐ भी इनमें समस्त प्राणी प्रकृति की समृद्धि का ही लक्ष्य समायोजित होता है। इस में राष्ट्र एक बहुत बड़ी व्यवस्था है। राष्ट्र के धराक्षैत्र, उत्पादन, ऐतिहासिक–संस्कृति, धर्म–समाज व शासकीय व्यवस्था में मानव जीवन निर्वाह करते हुऐ समृद्धि को प्राप्त करता है। जिससे सामुहिक समृद्धि व सुख का वातावरण उत्पन्न होता है।

राष्ट्र धरा के पुण्यपुरूष ग्रन्थ, तीर्थ, प्राकृतिक वैभव, सांस्कृति, आचार,

सद्भाव और ऐतिहासिक दृश्य भाव निष्ठा से ही राष्ट्रीय भावना व राष्ट्रीय चरित्र का उद्भव होता है। जहां राष्ट्रीय भाव नहीं है वहां मानव में परस्पर सौमनस्यता नहीं रह सकती।

आचार्य श्री का राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण ग्रन्थ "भारत–भारती वैभवम्" इन्हीं सब भावों को व्यक्त कर रहा है। आमुख लेख में आचार्य श्री ने लिखा है–मानव में मानवता का अभाव है तो उस का जीवन नगण्य है।" वस्तुतः मानवीय संस्कृति का उद्भव व्यक्ति के आचार विचार परिवार समाज व राष्ट्रीय निष्ठा के परिपालन से समृद्ध होता हुआ विश्व सृष्टि में व्याप्त होता है। व्यक्ति–पोषक व्यवहार संस्कृति व राष्ट्र के प्रति हीन भावना से संकीर्णता उत्पन्न होती है जो राष्ट्र व मानव सबके लिए अहित कर है। डा० राम प्रसाद ने इसी ग्रन्थ के प्रारम्भिक लेख में–"विशिष्ट व्यक्तित्व की यह सर्वोपरि मान्यता निरूपित होकर संकीर्ण व्यक्तित्व की परिचायक बन जाती है।" यहां आगे कहा है–ऐसा प्रतीत होता है मानो भौतिकवादी पाश्चात्य प्रभावों से प्रतिपादित हमारा जीवन देश के प्रति नीरस और भाव शून्य हो गया है"।
धर्माचार्य होने के कारण आचार्य श्री ने अपनी अध्यात्मिक विचार प्रबलता से राष्ट्रीय व मानवीय भाव को, साहित्य सृजन कर जगाने का प्रयत्न किया है।

"**भारत-भारती वैभवम्**" में भारत भूमि के पर्वत, नदी–नद, समुद्र तीर्थ, वृक्ष, पशु–पक्षी, जन धनादि से संयुक्त प्राकृत परिवेश के प्रति प्रगाढ रागात्मक अभिव्यक्ति हुई है (डा० रामप्रसाद) भारत की सम्पदा यहां के अध्यात्म–संस्कृति शौर्यसंस्कार धर्मपरायणता सन्तजीवन उच्चादर्श देववाणी संस्कृत व भारत के गौरव का महिमा गान किया है।

भारत माता के निर्मल सुभग प्राकृतिक वैभव का सुरम्य वर्णन इस तरह हुआ है–

जयति मदीया भारत माता।

निर्मल सुभगा मणिःमय रूपा, रम्या विविध गुणैरवदाता।

सस्य श्यामला परम विशाला, हिमगिरि धवला परिसंजाता।।

श्री राधा सर्वेश्वर शरणस्य चकास्ति चेतसि भारत माता।।८।।

"वन्दे नितरां भारत वसुधाम्।" (१) पद्य में यह वर्णन हुआ है–

भारत माता शश्य श्यामला धरावाली विशाल और विविध गुणमयी है धवल दिव्य हिमालय गङ्गा, यमुना, सरयू , कृष्णा, कावेरी आदि सलिल सरिताओं से पूर्ण, मुनिजन तपस्वियों द्वारा पूजित अर्थात साधु ऋषियों का साधना स्थल, समुद्र से आवेष्ठित, भगवद्लीला की धरती, विविध तीर्थों से रमणीय, अध्यात्म विद्या की मूलाधार, लक्ष्मी सुख शान्ति और धनधान्य से उर्वरा, सज्जन प्रसन्न और वीर पुरूषों कि निवासस्थली वेद–पुराणादि शास्त्रों द्वारा संस्तुत, मणिरत्न सुवर्ण आदि, सुसम्पन्न यह हरीभरी धरा परम् रमणीय है।

"विविध कला कृति रूपाभासः।।४।।

भारत माता कई कलाकारों, कलाकृतियों और दर्शनीय स्थलों से शोभित हैं। यह स्वर्ग सम्पदा से भी अधिक वैभव सम्पन्न है जिसे देख देश–देशान्तर के लोग अवाक् रह जाते हैं। (६)

अत्यद्भुतानि विपिनानि मनोहराणि

जम्बू-कदम्ब-कदली तरूशोभितानि।

आम्रवली विविध वृक्ष युतानि यत्र

वन्दे च तं रूचिर भारत वर्षदेशम्।।१२।।

भारत, सुन्दर मधुर फलों से युक्त है आम, जामुन, कदम्ब, केला आदि वृक्ष समूह से पूर्ण है यहां मनोहर वन–उपवन है।

नित्यं मृगाः खग गणाः करिणस्तुरङ्गा

गावः प्रसन्न मनसा विचरन्ति यत्र।

तं सुन्दरं निखिल राष्ट्रनरेन्द्ररूपं

वन्दे सदा रूचिर भारतवर्षदेशम्।।१३।।

भारत में हिरणादि वनचर पक्षीगण हाथी घोड़े और गायें आदि विपुल मात्रा में हैं और निर्भय विचरण करती हैं।

गुञ्जन्ति यत्र निगमागम दिव्य मन्त्रा

वर्षन्ति मेघनिकराः परिता यथेष्टम्।

हृष्यन्ति देश कृषकाः कृषि कार्य दक्षा

वन्दे च तं रूचिर भारतवर्षदेशम्।।१४।।

विद्वानों की वाणी से भारत में वेद–पुराणादि के मन्त्र गूँजते रहते हैं। सर्वत्र मेघ यथेष्ट वर्षा करते हैं। कृषकादि सब अपने कार्य में कुशल व हर्षित हैं।

स्वाध्याय दत्त हृदयाः सुधियः सुविज्ञाः

शिक्षा प्रंदान निरताः कुशलाः प्रबुद्धाः।

अध्यापयन्ति बटुकान्बहुलं हि यत्र

वन्दे च तं रूचिर भारतवर्षदेशम्।।१५।।

सुविज्ञ विद्वानों से स्वाध्यायशील छात्र समूह दत्त चित्त होकर शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हैं।

अध्यअध्यात्म धर्मपथतत्त्वविदो विदन्त

आचार्यवर्य चरणाः सकलाः प्रसिद्धा।

ज्ञानं प्रजार्थमतुलं ददतीति यत्र

वन्दे च तं रूचिरं भारतवर्षदेशम्।।१६।।

सांसारिक जीवों को, अध्यात्म पथ के प्रदर्शक आचार्य चरणों द्वारा अतुलित ज्ञान दिया जाता है।

क्रीड़न्ति यत्र लघुबालक बालिकाश्च

गायन्ति गायकवरा श्चतुराः सुगीतम्।

नृत्यन्ति नृत्य कुशलाः खलु नर्तकाश्च

वन्दे च तं रूचिर भारतवर्ष देशम्।।१८।।

वन्दनीय भारत वर्ष में छोटे–छोटे बालक–बालिकायें ललित क्रिड़ायें करते हैं। श्रेष्ठ गायक सुन्दर गान व नृत्य कुशल, भव्य नृत्य करते हैं।

युध्यन्त आशु नववीरवरा बलिष्ठाः

शत्रूञ्जयन्ति नितरां समरे प्रवीणाः।

नानाऽस्त्र शस्त्र कुशलाश्च भजन्ति राष्ट्रं

वन्दे च तं रूचिर भारतवर्षदेशम्।।१६।।

शत्रु को शीध्र ही पराजित कर देने वाले युद्ध कुशल श्रेष्ठ वीर भारतराष्ट्र की निरन्तर सेवा और सुरक्षा करते हैं।

कुर्वन्ति यत्र खलु शासन सुव्यस्थां

नेतार उत्तमगुणा जगति प्रसिद्धाः।

शान्ति प्रियाः सुमतयः कुशला वरिष्ठा

वन्दे च तं रूचिर भारतवर्षदेशम्।।२०।।

शान्ति प्रिय, बुद्धिमान, कुशल तथा उत्तम गुणों वाले देश भक्त नेता भारतं राष्ट्र की शासन सुव्यवस्था चलाते हैं।

वेदाः पुराण-नय-तर्कपरा अमूल्याः

सूत्र-स्मृतिप्रभृतयो रस बोधकाश्च।

ग्रन्था इमे जगति शब्दपरा हि यत्र

वन्दे च तं रूचिर भारतवर्षदेशम्।।२२।।

जहां वेद–पुराण–नीति शास्त्र–न्याय शास्त्र, ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र, भक्तिसूत्र, धर्म शास्त्रदि ग्रन्थ विद्‌यमान हैं वह देश भारत हैं।

देवालया अपि सुभव्यतमा मनोज्ञाः

श्रेष्ठाः पुरातनतमाः शुभदर्शनीयाः।

सन्ति प्रिया हरि कथा रसदाश्च यत्र

वन्दे च तं रूचिर भारतवर्षदेशम्।।२३।।

जिस देश में विशाल देव मन्दिर हैं जहां स्थापित श्री विग्रह के दर्शन में साक्षात प्रभू का सानिध्य प्राप्त होता है जहां मनोरम हरिकथा व मङ्गलमय सत्संग होता है, वह देश भारत है।

"भारत भारती वैभवम्" ग्रन्थ के २५–२६–२७–२८ व २६ श्लोकों में भारत के तीर्थ श्री जगन्नाथपुरी, सेतुबन्ध रामेश्वर, श्री द्वारिका व श्री बद्रीनारायण, चतुर्दिशा के धाम व अयोध्या, मथुरा, माया, काञ्ची, अवन्तिका आदि पावन सप्तपुरी, सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओंकारेश्वर, वैद्यनाथ, भीम शंकर, रामेश्वर, नागेश्वर, विश्वनाथ, त्रयम्बकेश्वर, केदारनाथ और घुश्मेश्वर आदि सर्व सिद्धिप्रद द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन है। श्री वृंदावन, तीर्थराज पुष्कर, प्रयाग चित्रकूट अयोध्यादि, धाम शोभा का उल्लेख है।

ग्रन्थ में विविध स्थानों पर, धीर जन साधुजन कवि व वीरों की जननी भारत की सन्तानों का गौरवमय उल्लेख है।

"श्री रामचन्द्र प्रभुराविरासी न्नयेन यत्रोत्तमदिव्य भूमौ।"(३१)

"गीर्तापदिष्टा हरिणा च यत्र कृष्णेन पूर्वं सद्नुग्रहेण"(३२)

जिस भारत भूमि पर परम परमेश्वर भगवान ने श्री राम–कृष्ण आदि स्वरूप में अवतार लिया जहां भगवान हरि ने धनञ्जय को गीता का उपदेश दिया उस देश का गौरव अतुलनीय है।

सदाऽऽश्रयो वै शरणागतानां

हिंसारतानां नहि यत्र पूजा।

विमुक्त हिंसो लभते प्रतिष्ठां

तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्।।३४।।

भारत देश में शरणागतों को आश्रय मिलता है किन्तु यहां हिंसारतों

को कोई प्रश्रय सम्मान नहीं मिलता सत्य अहिंसा अवलम्बी सुहृद जनों का ही यहां सम्मान है।

सन्तो गृहस्था वटवश्च छात्राः
सन्यासिनो वैष्णवसत्तमा वै।
शुद्धा विरक्ता विचरन्ति यत्र
तं भारत नौमि सुभव्य रूपम्।।३५।।

जहां शुद्ध पवित्रान्तः करण साधुजन, गृहस्थ, सन्यासी, बालक, ब्रह्मचारी, छात्र, वैष्णव व विरक्त महानुभाव विचरण करते है, रहते है वह देश भारत है।

सुरभाषा संस्कृत के लिये कहा है–सुरभाषेयं हरिमुखगीता।(३७) देववाणी श्री हरिमुख से गायी गई है अर्थात् उत्पन्न है यह स्वर्ग के देवताओं की भाषा है और विद्वानों के चित्त में समाई हुई है। ''संस्कृत भाषा संस्कृत गेयम्'' (३८) संस्कृत भाषा के शास्त्रों को जानना व मनन करना पुण्य कारी है इसमें ''श्रुति विज्ञानं'' वेद का अनन्त ज्ञान है। संस्कृत का कथन भाषण अध्ययन ही नहीं श्रवण ही जन्मजन्मातर के ''बहुविध पातक सहति हरणं'' (४३) पाप समूहों का नाश कर देता है, क्योंकि यह मन्त्रमयी है। ''संस्कृत क्षैत्रे मङ्ल कारामु'' (४४) जहां संस्कृत बोली सुनी जाती है वह मङ्लकारी क्षैत्र है। ''परम्परा संस्कृत बोध कारिणी मनन्त विज्ञान विवेक दायिनीम्।'' (४६) संस्कृत, संस्कृति का ज्ञान कराने वाली व ज्ञान को देने वाली है। ''समग्र भाषा जननीम धीश्वरीं'' (५१) ''विचार मूढाय पथ प्रदर्शिनीं'' (५३) संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है, मधुरस स्वरूपा है और अज्ञजनों का पथ–प्रदर्शन करने वाली है।

समस्त वेदाऽगम धर्म दर्शन
सुबोधनीं शास्त्रमति प्रदां प्रियाम्।

अतीव माधुर्य भरा भवेश्वरीं।
भज सदाऽहं हृदि देवभारतीम्।।(५५)

समस्त वेदशास्त्र व धर्म का ज्ञान व सद्बुद्धि प्रदान करने वाली अति मधुर है।

श्रीमद्भगवद्गीता का आचार्यश्री द्वारा पाचं पद्यों में वर्णन किया गया है।

श्री मद्धरे र्या ह्युपदेश वाणी
पीयूष वर्षा विद्धाति भूमौ।
श्रुत्यर्थ शुद्धाऽद्भूत मञ्जुसारा।
गीता सा वै जयताजगत्याम्।।५७।।

वेदादि शास्त्र की सार स्वरूप भक्तिरस ज्ञान की वर्षा करने वाली श्री हरिमुख की वाणी गीता पृथ्वी का दिव्यतम शास्त्र है।

श्री गङ्गा का इस ग्रन्थ में पांच श्लोक में व "स्तव रत्नाञ्जलीः" के स्तव में महिमा कथन हुआ है।

श्री गङ्गा का उद्गम श्री हरि के चरणारविन्द से हुआ भगवान शंकर की दिव्य जटाओं के रमंण उपरान्त गङ्गा हिमालय से भारत के जनगण व धरा को पुंण्यप्लावित करती हुई सागर में जाकर समाहित हुई है। भारत के धर्म अध्यात्म में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है अतः यह निश्चय ही स्तुति योग्य है।

स्वच्छऽम्बु सीकर समूह-(६४)
भवभीषण शोक विपत्ति हरां
भव सागरमग्नजनों द्धरणाम्।
व्रज मोहन कृष्णपदाब्ज रतां
भज मानस विष्णुपदीं नितरां।।८।।(श्रीगङ्गमहि.)

आचार्य श्री के ग्रन्थों में गौमाता की महिमा का बहुधा वर्णन है।

नित्यं स्त्रवन्ती प्रियदुग्धधारां
यद्गोमये पुण्यतमे धरित्र्याम्।
लक्ष्म्या निवासः खलु वर्तते सा
गोः कामधेनु जयतीह लोके।।६७।।

उद्बोधन

''भारत–भारती वैभवम्'' ग्रन्थ में आचार्य श्री द्वारा जन जीवन में सदाचार समृद्धि के लिए प्रेरक उद्बोधन भी है, इस में सार भूत का हम यहां उल्लेख करते हैं।

भ्रष्टाचारता ये तु दण्डनीयाश्च भारते।,
सन्तु ते जन सामान्या विशिष्टा वा प्रशासकाः।।७२।।

भ्रष्टाचार परायण चाहे वह सामान्यजन हो विशिष्ट हो या प्रशासन दण्डपाने योग्य है। अर्थात् भ्रष्टाचार को, समाज व शासन को दण्ड विधान द्वारा नहीं पनपने देना चाहिये अपराधी को निश्चय दण्ड देना चाहिये क्योंकि दण्ड बिना विधान की रक्षा नहीं होती।

धमाचार्यैः प्रबोद्धव्या जनता या कुमार्गगा।
तथैव साधुभि र्नित्यं प्रेरणीया सदैव सा।।७३।।

कुमार्ग की ओर जा रही जनता धर्माचार्यों के उपदेश व साधु जनों की सत्प्रेरणा के योग्य हैं। इस में दो–तीन भाव निहित हैं–एक तो जनता को कुमार्ग से बचाने के लिए धर्माचार्य व साधु जनों से सत्प्रेरणा लेनी चाहिये और उस सत्प्रेरणा का अवलम्बन करना चाहिये। दूसरा धर्माचार्य व साधुजन अपने–अपने श्रद्धालुओं का सदाचार के अवलम्बन का उपदेश करें, जनता को कुमार्ग पर न जाने दें।

मातृवर्गैः स्वदेशेऽस्मिन शिक्षणीयाश्चसर्वदा
वयस्का बालका नार्यः सदाचार परस्सरम।।७४।।

तथा हि पितृ वर्गैश्च योजनीयाः स्वकर्मणि।

बालका युवका वृद्धा नार्यश्च बालिकाः सदा।।७५।।

राष्ट्र समाज की समाजिक शासकीय सुव्यवस्था के लिए अपराधी भ्रष्टाचारी को दण्ड विधान का प्रयोजन उपरान्त आचार्य, साधुजन व श्रद्धालुओं को परस्पर सदाचार आदेश व पालन का कर्त्तव्य सुझाकर यहां माता–पिता के कर्त्तव्य की सत्–प्रेरणा हुई है।

वृद्धजन तथा माता–पिता, बालक–बालिका व पुत्र–पुत्रवधु सभी परिजनों को सदाचार पूर्वक शिक्षा प्रदान करे व सत कर्म कर्त्तव्य के लिए प्रेरित करे।

शिक्षकैः कविभि र्नित्यं शिक्षणीया जना ध्रुवम्।

सेवापरायणैरेभिः प्रशासक-चिकित्सकैः।।७६।।

कवि, शिक्षक, सेवा कर्मी, प्रशासक, चिकित्सक, आदि सभी जन सामान्य को सेवा, निष्ठा और सच्चाई से अपना कर्त्तव्य करना चाहिये व सेवा निष्ठामय जीवन से अन्य को शिक्षा प्रदान करनी चाहिये। क्योंकि मनुष्य परस्पर देख सुन कर शिक्षा ग्रहण करता है। इस तरह के आचरण से सार्वभौम सदाचार का अवलम्बन होगा।

इसी तरह के जीवन उन्नति के बहुमुखी उंद्‌बोधन है–"वैदिकी संस्कृति र्ज्ञेया"(७७) वैदिक संस्कृति को जानना चाहिये। "देवालया रक्षणीया" "गावोनार्यश्च सम्पूज्याः" (७८) देवालय की रक्षा व स्त्रीयों का सम्मान हो ! "त्याज्या हिंसा जनै दैर्शे" (७९) हिंसा का त्याग और निरोध होना चाहिये "सेव्या भारत संस्कृतिं" (७९) भारतीय संस्कृति का व्यवहारतः पालन होना चाहिये।

अवनीयानि तीर्थानि वनानि विविधानि च।

तथैव खगवृन्दानि पशु वृन्दानि मानवैः (८०)

प्राकृतिक सन्तुलन बनाये रखने के लिए व प्रदूषण अवरोध हेतु–वन,

उद्यान, तीर्थ स्थल तथा पशु–पक्षियों की रक्षा आवश्यक है। "सरितां रक्षणीया" सरिताओं की प्रदूषण से रक्षा होनी चाहिये पर्वतों की रक्षा होनी चाहिये।

"राष्ट्राचरणीयञ्च मिथः सौहार्द मुत्तम्।" विश्व के समस्त राष्ट्र परस्पर प्रेम भाव का वर्ताव करें। "सदा ऽनुशासनं देशे निष्कपटं हित प्रदं" (८४) देश में अनुशासन व निष्कपट आचरण ही हितं प्रद है। "गोहननं निरोद्धव्यं दुस्सहं राष्ट्रघातकम्।।"(८५) गो–वध राष्ट्र के लिए धातक है यह दुस्साहस व असहनीय कार्य है इसका निरोध होना चाहिये।

मद्याऽऽमिषादिकं हेयं द्यूतोत्कोचनिषेवणम्।।

एतत्सर्वं वहिष्कार्यं हिताहित विचारकैः।।८८।।

मद्यपान, मांस सेवन, जुआ खेलना व घूसखोरी का परित्याग होना, चाहिये। अनहित सोचकर अन्य जनों को ऐसे कर्त्ताओं का बहिष्कार करना चाहिये।

तास्कर्य सर्वथा त्याज्यं मिथ्या प्रजल्पनं तथा

एवमौद्धत्यनास्तिक्यं निखिलै र्मनुजैः सदा।।८६।।

ठगी, चोरी, मिथ्याभाषण, उंछृखंलवृति और नास्तिकता का मानव मात्र को त्याग करना चाहिये।

व्यापारे कपटं जह्याद्वस्तुमात्रे च मिश्रणम्।

येन स्वकीय देंशशस्य प्रतिष्ठा सुस्थिरा भवेत्।।६०।।

व्यापार में कपट व मिलावट का त्याग होना चहिये देश की गरीमा को बनाये रखना चाहिये।

"पाठनीयाः समे छात्रा" अध्यापक गण सभी छात्रों को समान भाव व निष्कपटता पूर्वक पढ़ावें। अश्लील चलचित्र व अश्लील साहित्य का पठन अवलोकन विज्ञ जन न करे सुचरित्रता, वचन की मधुरता व शुभकर्मो का आचरण करे अपनी सांस्कृतिक आचार व्यवहार को अपनावें। श्रेष्ठ समर्थजन

दीन दुःखी व असमर्थ जन की सहायता को तत्पर रहें।

पात्रता प्रियता नित्यं दीनताऽप्यथ शुद्धता।

दया सरलता मर्त्यैं धारणीया स्वकान्तरे।।६६।।

सरलता, श्रेष्ठता, पवित्रता, नम्रता, दया और सुहृदयता को सभी मनुष्य धारण करे।

ये सर्वान्प्रति सद्भावमाचरन्ति परस्परम्।

प्रपूज्यास्ते परां शान्ति लभन्ते नाऽत्रसशयः।।१७।।

सभी मनुष्य को सम्पूर्ण प्राणी मात्र के लिए सद्भाव रखना चाहियें ऐसा पवित्र जीवन निस्सन्देह शान्ति को प्राप्त होता है।
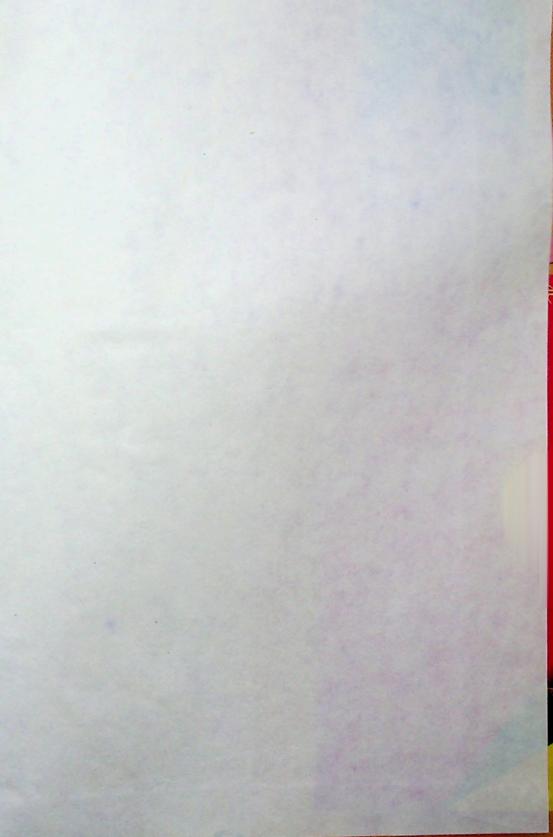
पं. रामस्वरूप गौड़

पं. रामस्वरूप गौड़ की कृतियां

१. विश्व विराट्
२. रस माधुरी,
३. पद माधुरी
४. मनुजाश्रय (दोहावली)
५. कल्पना के बाद (ललित लेख)
६. प्रणयगीत
७. ईशादि प्रमुख ग्यारह उपनिषद् की व्याख्या
८. सनातन निरूपण
९. उपदेशामृत :
देवर्षि नारद को उपदिष्ट भूमावि प्रकरण व हंस भगवान की सनव कुमार को उपदेश की सरल विवे
१०. वेदान्त दशश्लोकी की सरल व्या
११. भक्ति सूत्र की सरल व्याख्या
१२. मीरां की भक्ति परम्परा का समालोचनात्मक अध्ययन
१३. जगद्गुरू निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य प्रणीत स्तव साहित्य का अध्ययन